arini Granthmala Series No. II.

ःयाल की बानी।

महामहोपाध्यायसुधाकरद्विवेदि–सम्पादित

और

काशी-नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा
प्रकाशित।

1906
TARA PRINTING WORKS,
BENARES.

निवेदन।

श्रीदादूदयाल जी के वचनों को मैंने दो भागों में विभक्त किया है एक में उनकी बानी है और दूसरे में उनके पद हैं। यह पहिला भाग छाप कर प्रकाशित किया जाता है। दूसरा भाग भी छप रहा है और यथासमय शीघ्र प्रकाशित किया जायगा। दूसरे भाग की समाप्ति पर मैं श्रीदादूजी की जीवनी और उनके वचनों के विषय में अपने विचार भूमिकारूप में लिख कर पाठकों को अर्पण करूँगा। जब तक ग्रन्थ समस्त न छप जाय तब तक उसके विषय में कुछ लिखना उचित नहीं यही समझ कर मैंने भूमिका लिखने का विचार जब तक श्रीदादू जी के पद भी न छप जाँय तब तक के लिये टाल रक्खा है।

इस स्थान पर मैं जयपुरनिवासी रेवरेण्ड ट्रेल साहब और काशी निवासी बाबू राधाकृष्न दास को धन्यवाद देता हूँ कि जिनकी कृपा से काशी नागरीप्रचारिणी सभा को श्रीदादू जी के ग्रन्थों की प्रतियाँ प्राप्त हुईं और मै उनके सम्पादन में समर्थ हुआ।

१०–९–०६ } सुधाकरद्विवेदी

विषयसूची ।

—— o:——

——:०:—— —

श्रीदादूदयाल की बानी।

गुरु को अंग।

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा। परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
गैब माँहि गुरुदेव मिला। पाया हम परसाद ॥
मस्तक मेरे कर धरा। देखा अगम अगाध ॥ २ ॥
सत्तगुरू सहजईं मिला। किया बहुत उपकार ॥
निरधन धनवँत करि लिया। गुरू मिला दातार ॥ ३ ॥
सतगुरु सो सहजइ मिला। लीया कंठ लगाइ ॥
दाया भई दयाल की। दीपक दिया जगाइ ॥ ४ ॥
दादू देव दयाल की। गुरू दिखाई बाट ॥
ताला कुंजी लाइ करि। खोले सबै कपाट ॥ ५ ॥
सतगुरू अंजन बाहि करि। नैन पटल सब खोले ॥
बहरे कानों सुनने लागे। गूँगे मुख सों बोले ॥ ६ ॥
सतगुरु दाता जीव का। स्रवन सीस कर नैन ॥
तन मन, साँज सँवारि सब। मुख रसना अरु बैन ॥ ७ ॥
राम नाम उपदेस करि। अगम गवन यह सैन ॥
दादू सतगुरु सब दिया। आप मिलाए एैन ॥ ८ ॥
सतगुरु कीया फेरि करि। मन का औरै रूप ॥
दादू पंचौ पलट करि। कैसे भए अनूप ॥ ६ ॥
साँचा सतगुरु जो मिलै। सब साज सँवारै ॥
दादू नाव चढ़ाइ करि। ले पार उतारै ॥ १० ॥

सतगुरु पसु मानुस करइ । मानुस तें सिध सोइ ॥
दादू सिध तें देवता । देव निरंजन होइ ॥ ११ ॥
दादू काढे काल मुख । अंधे लोचन देइ ॥
दादू ऐसा गुरु मिला । जीव ब्रह्म करि लेइ ॥ १२ ॥
दादू काढे काल मुख । स्रवनहु सबद सुनाइ ॥
दादू ऐसा गुरु मिला । मिरतक लिए जिलाइ ॥ १३ ॥
दादू काढे काल मुख । गूँगे लिए बुलाइ ॥
दादू ऐसा गुरु मिला । सुख में रहे समाइ ॥ १४ ॥
दादू काढे काल मुख । महरि दया करि आइ ॥
दादू ऐसा गुरु मिला । महिमा कही न जाइ ॥ १५ ॥
सतगुरु काढे केस गहि । डूबत इहि संसार ॥
दादू नाव चढाइ करि कीए पैरी पार ॥ १६ ॥
भव सागर में डूबता । सतगुरु काढे आइ ॥
दादू खेवट गुरु मिला । लीये नाव चढाइ ॥ १७ ॥
दादू उस गुरुदेव की । मैं बलिहारी जाउँ ॥
आसन अमर अलेख था । ले राखे उस ठाउँ ॥ १८ ॥
आतम माँहै ऊपजइ । दादू पंगुल ग्यान ॥
किरतम जाइ उलंघि करि । जहाँ निरंजन थान ॥ १९ ॥
आतम बोध बाँझ का बेटा । गुरु मुख उपजइ आइ ॥
दादू पंगुल पंच बिन । जहाँ राँम तहँ जाइ ॥ २० ॥
साचा सहजइ ले मिलइ । सबद गुरू का ग्यान ॥
दादू हम को ले चला । जहँ प्रीतम का थान ॥ २१ ॥
दादू सबद बिचारि करि । लागि रहइ मन लाइ ॥
ज्ञान गहइ गुरुदेव का । दादू सहज समाइ ॥ २२ ॥
सतगुरु सबद सुनाइ करि । भावइ जीव जगाइ ॥
भावइ अंतरि आप करि । अपनो अंग लगाइ ॥ २३ ॥

बाहर सारा देखिए । भीतरि कीया चूर ॥
सतगुरु सबदों मारिया । जान न पावइ दूर ॥ २४ ॥
सतगुरु मारे सबद सों । निरखि निरखि निज ठौर ॥
राम अकेला रहि गया । चित्त न आवइ और ॥ २५ ॥
दादू हम को सुख भया । साधु सबद गुरु ग्यान ॥
सुधि बुधि सोधी समझि करि । पाया पद निरबान ॥ २६ ॥
सबद बान गुरु साधु के । दूरि दिसंतरि जाइ ॥
जेहि लागे सो ऊबरे । सूते लिए जगाइ ॥ २७ ॥
गुरू सबद मुख सों कहा । क्या नेरे क्या दूर ॥
दादू सिख स्रवनन सुना । सुमिरन लागा सूर ॥ २८ ॥
सबद दूध घृत राम रस । मथि करि काढइ कोइ ॥
दादू गुरु गोबिंद बिन । घट घट समझि न होइ ॥ २९ ॥
सबद दूध घृत राम रस । साधु बिलोवनहार ॥
दादू अम्रित काढि ले । गुरुमुख गहइ बिचार ॥ ३० ॥
घीव दूध में रमि रहा । ब्यापक सबही ठौर ॥
दादू बकता बहुत हैं । मथि काढहिं ते और ॥ ३१ ॥
कामधेनु घट घीव है । दिन दिन दुरबल होइ ॥
गुरू ग्यान ना ऊपजइ । मथि नहिं खाया सोइ ॥ ३२ ॥
साचा समरथ गुरु मिला । तिन तत दिया बताइ ॥
दादू मोट महाबली । घट घृत मथि करि खाइ ॥ ३३ ॥
मथि करि दीपक कीजिए । सब घट भया प्रकास ॥
दादू दीया हाथ करि । गया निरंजन पास ॥ ३४ ॥
दीये दीआ कीजिए । गुरुमुख मारग जाइ ॥
दादू अपने पीउ का । दर्सन देखइ आइ ॥ ३५ ॥
दादू दीया है भला । दिया करो सब कोइ ॥
घर में धरा न पाइए । जे कर दिया न होइ ॥ ३६ ॥

दीप का गुन तेल है । दीया मोटी बाति ॥
दाया जग में चाँदना । दीया चालइ साथि ॥ ३७ ॥
निरमल गुरु का ग्यान गहि । निरमल भगति बिचार ॥
निरमल पाया प्रेम रस । छूटे सकल बिकार ॥ ३८ ॥
निरमल तन मन आतमा । निरमल मनसा सार ॥
निरमल प्रानी पंच करि । दादू लंघे पार ॥ ३९ ॥
परा परी पासइ रहइ । कोई न जानइ ताहि ॥
सतगुरु दिया दिखाइ करि । दादू रहइ लव लाइ ॥ ४० ॥
जिन्ह हम सिरजे सो कहाँ । सतगुरु देहु दिखाइ ॥
दादू दिल अरवाह का । तहँ मालिक लव लाइ ॥ ४१ ॥
मुझही में मेरा धनी । परदा खोलि दिखाइ ॥
आतम सोँ परमातमा । परगट आनि मिलाइ ॥ ४२ ॥
भरि भरि प्याला प्रेमरस । अपने हाथ पिलाइ ॥
सतगुरु के सदकै किया । दादू बलि बलि जाइ ॥ ४३ ॥
सरवर भरिया दह दिसा । पंखी प्यासा जाइ ॥
दादू गुरु-परसाद बिन । क्योँ जल पावइ आइ ॥ ४४ ॥
मानसरोवर माँहि जल । प्यासा पीवइ आइ ॥
दादू दोस न दीजिए । घर घर कहन न जाइ ॥ ४५ ॥
दादू गुरु गरुआ मिला । नाथइ सब गमि होइ ॥
लोहा पारस परसता । सहज समाना सोइ ॥ ४६ ॥
दाग गरीबी गहि रहा । गरुआ गुरू गँभीर ॥
सूखि मसी तल सुरति मति । सहज दया गुरु धीर ॥ ४७ ॥
सीधी दाता पलक में । तिरइ तिहुवन जोग ॥
दादू ऐसा परम गुरु । पाया केहि संजोग ॥ ४८ ॥
सतगुरु ऐसा कीजिए । रामरस माता ॥
पार उतारइ पलक में । दरसन का दाता ॥ ४९ ॥

देवइ फिरका दरद का। टूटा जोरइ तार॥
दादू साधइ सुरति को। सो गुरु पीर हमार॥ ५० ॥
दादू घाइल होइ रहे। सतगुरु के मारे॥
दादू अंग लगाइ करि। भव-सागर तारे॥ ५१ ॥
दादू साँचा गुरु मिला। साँचा दिया दिखाइ॥
साँचे को साँचा मिला। साँचा रहा समाइ॥ ५२ ॥
साँचा सतगुरु सोधि ले। साँचे लीजइ साध॥
साँचा साहिब सोधि करि। दादू भगति अगाध॥ ५३ ॥
सनमुख सतगुरु साध सों। साईं सों राता॥
दादू प्याला प्रेम का। महारस माता॥ ५४ ॥
साईं सों साँचा रहइ। सतगुरु सों सूरा॥
साधू सों सनमुख रहइ। सो दादू पूरा॥ ५५ ॥
सतगुरु मिलइ तपाइए। भगति मुकुति भंडार॥
दादू सहजइ देखिए। साहिब का दीदार॥ ५६ ॥
साईं सतगुरु सेइए। भगति मुकुति फल होइ॥
अमर अभय पद पाइए। काल न लागइ कोइ॥ ५७ ॥
इक लख चंदा आनि धरि। सूरज कोटि मिलाइ॥
दादू गुरु गोबिंद बिन। तौभी तिमिर न जाइ॥ ५८ ॥
अनेक चंद उदय करइ। असंख सूर प्रकास॥
एक निरंजन नावँ बिन। दादू नहीं उजास॥ ५९ ॥
कधि यह आपा जाइगा। कधि यह बिसरइ और॥
कधि यह सूछिम होइगा। कधि यह पावइ ठौर॥ ६० ॥
विषम दुहेला जीव को। सतगुरु तें आसान॥
जब दरवैं तब पाइए। नेराही अस्थान॥ ६१ ॥
नैन न देखइ नैन को। अंतर भी कुछ नाहिं॥
सतगुरु दरपन कर दिया। अरस परस मिलि माहिं॥ ६२ ॥

घट घट रामहि रतन है । दादू लखइ न कोइ ॥
सतगुरु सबदउ पाइए । सहजेंही गम होइ ॥ ६३ ॥
जबही कर दीपक दिया । तब सब सूझन लाग ॥
यों दादू गुरु-ग्यान तें । राम कहत जन जाग ॥ ६४ ॥
मन-माला तहँ फेरिए । दिवस न परसइ रात ॥
तहाँ गुरू बाना दिया । सहजइ जपिए तात ॥ ६५ ॥
मन-माला तहँ फेरिए । प्रीतम बैठे पास ॥
अगम गुरू तें गम भया । पाया नूर निवास ॥ ६६ ॥
मन-माला तहँ फेरिए । आपइ एक अनंत ॥
सहजइ सो सतगुरु मिला । जुग जुग फाग बसंत ॥ ६७ ॥
सतगुरु माला मन दिया । पवन सुरति सो पोइ ॥
बिना हाथ निस दिन जपइ । परम जाप यों होइ ॥ ॥ ६८ ॥
मन फकीर माँहै हुआ । भीतरि लीया भेख ॥
सबद गहइ गुरुदेव का । माँगइ भीख अलेख ॥ ६९ ॥
मन फकीर सतगुरु किया । कहि समझाया ग्यान ॥
निहचल आसन बैठि कर । अकल पुरुस का ध्यान ॥ ७० ॥
मन फकीर जग तें रहा । सतगुरु लीया लाइ ॥
अहनिसि लागा एक सौं । सहज सुरत रस खाइ ॥ ७१ ॥
मन फकीर ऐसे भया । सतगुरु के परसाद ॥
जहँ का था लागा तहाँ । छूटे बाद बिबाद ॥ ७२ ॥
ना घर रहा न बन गया । ना कुछु किया कलेस ॥
दादू मनहीं मन मिला । सतगुरु के उपदेस ॥ ७३ ॥
यह मसीति यह देवहरा । सतगुरु दिया दिखाइ ॥
भीतरि सेवा बंदगी । बाहर काहे जाइ ॥ ७४ ॥
दादू मंझेही चला । मंझे ही उपदेस ॥
बाहर ढूढहिं बावरे । जटा बँधाए केस ॥ ७५ ॥

मन का मस्तक मूँडिए। काम क्रोध के केस ॥
दादू बिषय बिकार सब। सतगुरु के उपदेस ॥ ७६ ॥
दादू परदा भरम का। रहा सकल घट छाइ ॥
गुरु गोबिंद कृपा करइ। सहजेही मिटि जाइ ॥ ७७ ॥
जिस मत साधू ऊधरे। सो मत लीया सोध ॥
मन लेइ मारग मूल गहि। सतगुरु को परमोध ॥ ७८ ॥
सोई मारग मन गहा। मारग मिलिए जाइ ॥
बेद कुरानउ ना कहा। सो गुरु दिया दिखाइ ॥ ७६ ॥
मन भुअंग यह बिष भरा। निरबिष क्योँहि न होइ ॥
दादु मिला गुरु ग्यानिया। निरबिष कीया सोइ ॥ ८० ॥
एता कीजइ आप तेँ। तन मन उनमन लाइ ॥
पंच समाधी राखिए। दूजा सहज सुभाइ ॥ ८१ ॥
जीव जँजालौँ मढि गया। उलझा नौ मन सूत ॥
कोइ एक सुलझै सावधाँ। गुरु बाइक अवधूत ॥ ८२ ॥
चंचल चहुँ दिसि जात है। गुरु बाइक सौँ बंधि ॥
दादू संगति साधु की। पारब्रह्म सो संधि ॥ ८३ ॥
गुरु अंकुस मानइ नहीँ। उदमद माता अंध ॥
दादू मन चेतइ नहीँ। काल न देखइ फंध ॥ ८४ ॥
मारे बिन मानइ नहीँ। यह मन हरि की आन ॥
ग्यान खड्ग गुरुदेव का। ता सँग सदा सुजान ॥ ८५ ॥
जहवाँ तेँ मन उठि चलइ। फेरि तहाँ ही राखि ॥
तहँ दादू लय लीन करि। साधु कहहिँ गुरु साखि ॥ ८६ ॥
मनही सौँ मल उपजइ। मनही सौँ मल धोइ ॥
सीख चलइ गुरु साधु की। तौ तूँ निर्मल होइ ॥८७॥
कछुवा अपनाँ करि लिए। मन इंद्री निज ठौर ॥
नावँ निरंजन लागि रहु। प्रानइ परिहरि और ॥ ८८ ॥

मन के मत सब कोलई । गुरमुख बिरला कोइ ॥
दादू मन मानइ नहीं । सतगुरु का सिख सोइ ॥ ८९ ॥
सब जीवन को मन ठगइ । मन को बिरला कोइ ॥
दादू गुरु के ग्यान सौं । साईं सनमुख होइ ॥ ९० ॥
एक सौं लैलीन होना । सबै सयानप एहु ॥
सतगुरु साधू कहत हैं । परम तत्त जपि लेहु ॥ ६१ ॥
सतगुरु सबद बिबेक बिन । संजम रहा न जाइ ॥
दादू ग्यान बिचार बिन । बिषय हलाहल खाइ ॥ ९२ ॥
घर घर घट कोल्हू चलइ । अमी महारस जाइ ॥
दादू गुरु के ग्यान बिन । बिषय हलाहल खाइ ॥ ६३ ॥
सतगुरु सबद उलंघि करि । जिन कोई सिख जाइ ॥
दादू पग पग काल है । जहाँ जाइ तहँ खाइ ॥ ९४ ॥
सतगुरु बरजइ सिख करइ । क्यों करि बंचइ काल ॥
दह दिसि देखत बहि गया । पानी फोरी पाल ॥ ६५ ॥
सतगुरु कहइ सो सिख करइ । सब सिधि कारज होइ ॥
अमर अभय पद पाइए । काल न लागइ कोइ ॥ ६६ ॥
साहिब को भावइ नहीं । सो हम तें जिनि होइ ॥
सतगुरु लाजइ आपना । साधु न मानइ कोइ ॥ ६७ ॥
हैं की ठाहर रहौं कहौ । तन की ठाहर तौन ॥
जी की ठाहर जी कहौ । ग्यान गुरू का पौन ॥ ६८ ॥
पंच सबादी पंच दिसि । पंचे पंचो बाट ॥
तब लग कहा न कीजिए । गुरू दिखाया घाट ॥ ६६ ॥
दादू पंचो एक मत । पंचों पूरा साथ ॥
पंचो मिलि सनमुख भए । पंचो गुरु की बात ॥ १०० ॥
ताता लोहा तिनै सो । क्यों करि पकड़ा जाइ ॥
गगन गली सूझइ नहीं । गुरु नाहिं बूझइ आइ ॥ १०१ ॥

औगुन गुन करि मानई। सोई सिष्य सुजान ॥
सतगुरु औगुन क्यों करइ। समझइ सोई सयान ॥ १०२ ॥
सोने सेती बैर क्या। मारइ घन के घाइ ॥
दादू काटि कलंक सब। राखइ कंठ लगाइ ॥ १०३ ॥
पानी माहिं राखिये। कनक कलंक न जाइ ॥
दादू गुरु के ग्यान सौं। ताइ अगिनि में बाहि ॥ १०४॥
माहिं मीठा हेत करि। ऊपर कड़ुवा राखि ॥
सतगुरु सिख को सीख दे। सब साधौं की साखि ॥ १०५ ॥
सिष्य भरोसे आपनो। ह्वै बोलौ हुसियार ॥
कहैगा सो बहैगा हमहि। पहली करइ पुकार ॥ १०६ ॥
सतगुरु कहइ सो कीजिए। जो तूँ सिष्य सुजान ॥
जहँ लाया तहँ लागि रहु। बूझइ कहा अजान ॥ १०७ ॥
गुरु पहली मनसौं कहइ। पीछे नैन कि सैन ॥
दादू सिख समझइ नहीं। कहि समझावइ बैन ॥ १०८ ॥
कहे लखइ सो मानवी। सैन लखइ सो साध ॥
मन की लखइ सो देवता। दादू अगम अगाध ॥ १०९ ॥
कहि कहि मेरी जीभ रह। सुनि सुनि तेरे कान ॥
सतगुरु बपुरा क्या करइ। चेला मूढ अजान ॥ ११० ॥
एक सबद सब कुछु कहा। सतगुरु सिख समझाइ ॥
जहँ लाया लागइ नहीं। फिरि फिरि बूझइ आइ ॥ १११ ॥
ज्ञान लिया सब सीख सुनि। मन का मैल न जाइ ॥
गुरू बिचारा क्या करइ। सिष्य हलाहल खाइ ॥ ११२ ॥
सतगुरु की समझइ नहीं। अपने उपजइ नाहिं ॥
तौ दादू क्या कीजिये। बुरी बिथा मन माहिं ॥ ११३ ॥
गुरु अपंग पग पंख बिन। सिख साखा का भार ॥
दादू खेवट नाउ बिन। क्यों उतरेंगे पार ॥ ११४ ॥
दादू संसा जीव का। सिख साखा का साल ॥

बूड़ौं को भारी पड़ी । होगा कौन हवाल ॥ ११५ ॥
अंधे अंधा मिलि चले । दादू बाँधि कतार ॥
कूप पड़े हम देखते । अंधे अंधा लार ॥ ११६ ॥
सोधी नहीं सरीर की । औरों को उपदेस ॥
दादू अचरज देखिया । ये जाँगे किस देस ॥ ११७ ॥
सोधी नहीं सरीर की । कहहिं अगम की बात ॥
जात कहावहिं बापुरे । आवध लीये हाथ ॥ ११८ ॥
माया माहिं काढि करि । फिरि माया में दीन्ह ॥
दोऊ जन समुझहिं नहीं । एकउ काज न कीन्ह ॥ ११९ ॥
कहइ सो गुरु किस काम का । गहि भरमावइ आन ॥
तत्त बतावइ निर्मला । सो गुरु साध सुजान ॥ १२० ॥
तूँ मेरा है हउँ तेरा । गुरु सिख कीया मंत ॥
दोनों भूले जात हैं । दादू बिसरा कंत ॥ १२१ ॥
दुहि दुहि पीवइ ग्वाल गुरु । सिख है छेली गाइ ॥
यह अवसर योंही गया । दादू कह समझाइ ॥ १२२ ॥
सिख गोरू गुरु ग्वाल है । रच्छा करि करि लेइ ॥
दादू राखइ जतन करि । आनि धनी को देइ ॥ १२३ ॥
झूठे अंधे गुरु घने । भरम दिढावहिं आइ ॥
दादू साचा गुरु मिलइ । जीव ब्रह्म होइ जाइ ॥ १२४ ॥
झूठे अंधे गुरु घने । बंधे बिषय बिकार ॥
दादू साचा गुरु मिलइ । सनमुख सिरजनहार ॥ १२५ ॥
झूठे अंधे गुरु घने । भरम दिढावहिं काम ॥
बंधे माया मोह सौं । दादू मुख सौं राम ॥ १२६ ॥
झूठे अंधे गुरु घने । भटकहिं घर घर बारि ॥
कारज को सीझहिं नहीं । दादू माथै मारि ॥ १२७ ॥
भगत कहावहिं आप को । भगति न जानहिं भेव ॥
सपने ही समझहिं नहीं । कहाँ बसहिं गुरुदेव ॥१२८॥

भरम करम जग बंधिया। पंडित दिया भुलाइ ॥
दादू सतगुरु ना मिलइ। मारग देइ दिखाइ ॥ १२९ ॥
पंथ बतावइ पाप का। भरम करम बेसास ॥
निकट निरंजन जो रहइ। क्यों न बतावइ तास ॥ १३० ॥
आपा उरझा उरझिया। दीसइ सब संसार ॥
आपा सुरझे सुरझिया। यह गुरु ज्ञान बिचार ॥ १३१ ॥
साधू का अँग निर्मला। तामे मल न समाइ ॥
परम गुरू परगट कहइ। ता ते दादू ताइ ॥ १३२ ॥
राम नाम गुरु सबद सों। रे मन पेलि भरम्म ॥
निहकरमी सों मन मिला। दादू काटि करम्म ॥ १३३ ॥
बिन पाइन का पंथ है। क्यों करि पहुँचइ प्रान ॥
बिकट घाट औघट खरे। माहिँ सिखर असमान ॥ १३४ ॥
मन ताजी चेतनि चढइ। लय की करइ लगाम ॥
सबद गुरू का ताजना। पहुँचइ साधु सुजान ॥ १३५ ॥
साधू सुमिरन सो कहा। सुमिरन आया भूल ॥
दादू गहि गंभीर गुरु। चेतन आनँद मूल ॥ १३६ ॥
आप सवारथ सब सगे। प्रान सनेही नाहिँ ॥
प्रान सनेही राम है। की साधू कलि माहिँ ॥ १३७ ॥
जेहि मत साधू ऊधरे। सो मत लीया सोध ॥
मन लेइ मारग मूल गहि। सतगुरु को परमोध ॥ १३८ ॥
सुख का साथी जगत सब। दुख का नाहीँ कोइ ॥
दुख का साथी साइयाँ। दादू सतगुरु होइ ॥ १३९ ॥
सगे हमारे साधु हैं। सिर पर सिरजनहार ॥
दादू सतगुरु सो सगा। दूजा धंध बिकार ॥ १४० ॥
दादू के दूजा नहीं। एकै आतमा राम ॥
सतगुरु सिर परि साधु सब। प्रेम गती बिस्राम ॥ १४१ ॥

दादू भृंगी कीट ज्यों । सतगुरु सेतीं होइ ॥
आप सरीखे करि लिये । दूजा नाहीं कोइ ॥ १४२ ॥
कच्छप राखइ दृष्टि में । कुंजौ के मन माहिं ॥
सतगुरु राखइ आपना । दूजा कोई नाहिं ॥ १४३ ॥
बच्चों के माता पिता । दूजा नाहीं कोइ ॥
दादू उपजइ भाव सों । सतगुरु के घट होइ ॥ १४४ ॥
एकै सबद अनंत सिख । जब सतगुरु बोलइ ॥
दादू जड़े कपाट सब । दे कुंजी खोलइ ॥ १४५ ॥
बिनहीं कीया होइ सब । सनमुख सिरजनहार ॥
दादू करि करि को मरइ । सिख साखा सिर भार ॥ १४६ ॥
सूरज सनमुख आरसी । पावक किया प्रकास ॥
दादू साईं साधु बिचि । सहजहि उपजइ दास ॥ १४७ ॥
पंचौ ये परमोधि ले । इनहीं को उपदेस ॥
यह मन अपने हाथ करि । तौ चेला सब देस ॥ १४८ ॥
दादू सुध बुध आतमा । सतगुरु परसइ आइ ॥
दादू भृंगी कीट ज्यों । देखतही होइ जाइ ॥ १४९ ॥
अमर भये गुरु ज्ञान सों । केते इहिं कलि माहिं ॥
दादू गुरु के ज्ञान बिन । केते मरि मरि जाहिं ॥ १५० ॥
ओषधि खाइ न पथ रहइ । बिषम ब्याधि क्यों जाइ ॥
दादू रोगी बावरा । दोस बैद को लाइ ॥ १५१ ॥
बैद बिथा कह देखि करि । रोगी रहइ रिसाइ ॥
मन माहें लीये रहइ । दादू ब्याधि न जाइ ॥ १५२ ॥
बैद बिचारा क्या करइ । रोगी रहइ न साच ॥
खाटा मीठा चरपरा । माँगइ मेरा बाच ॥ १५३ ॥
दुर्लभ दरसन साधु का । दुर्लभ गुरु उपदेस ॥
दुर्लभ करना कठिन है । दुर्लभ परस अलेस ॥ १५४ ॥

(दादू अबिचल मंत्र, अमर मंत्र। अखय मंत्र, अभय मंत्र ॥
राम मंत्र निजसार। सजीवनिमंत्र, सबीरज मंत्र ॥
सुंदरमंत्र, सिरोमनिमंत्र। निर्मलमंत्र निराकार ॥
अलखमंत्र, अकलमंत्र। अगाधमंत्र, अपारमंत्र ॥
अनंत मंत्र राया नूर मंत्र। तेजमंत्र जोतिमंत्र ॥
प्रकासमंत्र परममंत्र पाया। उपदेस दिखाया) १५५ ॥
दादू सबही गुरु किया। पसु पंखी बनराइ ॥
पंच तत्त गुनतीनि में। सबही माहिं खुदाइ ॥ १५६ ॥
जे पहली सतगुरु कहा। नैनहुँ देखा आइ ॥
अरस परस मिलि एक रस। दादू रहे समाइ ॥ १५७ ॥

इति गुरुदेव को अंग संपूर्णम् ॥ १ ॥

अथ सुमिरन को अंग ।

—:o:—

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरु देवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
एकै अच्छर पीव का । सोई सत करि जानि ॥
राम नाम सतगुरु कहा । दादू सो परवानि ॥ २ ॥
पहली स्रवन दुती रसन । तृतिये हिरदै गाइ ॥
चतुरदसी चिंतन भया । रोम रोम लव लाइ ॥ ३ ॥
दादू नीका नाउँ है । तीन लोक तत सार
राति दिवस रटिबो करी । रे मन इहइ बिचार ॥ ४ ॥
दादू नीका नाउँ है । हरि हिरदै न बिसारि ॥
मूरति मन माहिं बसइ । सासैं साँस सँभारि ॥ ५ ॥
सासैं साँस सँभारता । एक दिन मिलिहइ आइ ॥
सुमिरन पैंडा सहज का । सतगुरु दिया दिखाइ ॥ ६ ॥
दादू नीका नाउँ है । सो तूँ हिरदै राखि ॥
पाखँड परपँच दूरि करि । सुनि साधू जन साखि ॥ ७ ॥
दादू नीका नाउँ है । आप कहइ समझाइ ॥
और अरँभ सब छाडि दे । राम नाम लव लाइ ॥ ८ ॥
रामभजन का सोच क्या । करता होइ सो होइ ॥
दादू राम सँभारिये । फिरि बूझिये न कोइ ॥ ९ ॥
राम तुम्हारे नाउँ बिन । जे मुख निकसइ और ॥
ते अपराधी जीव को । तीनि लोक कत ठौर ॥ १० ॥
छिन छिन राम सँभारता । जे जिव जावत जाउ ॥
आतम के आधार को । नाहीं आन उपाउ ॥ ११ ॥

एक महूरत मन रहइ। नाउँ निरंजन पास ॥
दादू तबही देखता। सकल करम की नास ॥ १२ ॥
सहजे ही सब होइगा। गुन इंद्री का नास ॥
दादू राम सँभारता। कटे करम के पास ॥ १३ ॥
राम नाम गुरु सबद सोँ। रे मन पेलि भरम्म ॥
निहकरमी सोँ मन मिला। दादू काटि करम्म ॥ १४ ॥
एक राम के नाउँ बिन। जीव कि जरनि न जाइ ॥
दादू केते पचि मुये। करि करि बहुत उपाइ ॥ १५ ॥
एक राम की टेक गहि। दूजा सहज सुभाइ ॥
राम नाम छाडइ नहीँ। दूजा आवइ जाइ ॥ १६ ॥
दादू राम अगाध है। परिमिति नाहीँ पार ॥
अबरन बरन न जानिये। दादू नाउँ अधार ॥ १७ ॥
दादू राम अगाध है। अबिगति लखइ न कोइ ॥
निरगुन सरगुन का कहइ। नाउँ बिलंब न होइ ॥ १८ ॥
दादू राम अगाध है। बेहद लखा न जाइ ॥
आदि अंत नहिँ जानिये। नाउँ निरंतर गाइ ॥ १९ ॥
दादू राम अगाध है। अकल अगोचर एक ॥
दादू नाउँ बिलंबिये। साधू कहहिँ अनेक ॥ २० ॥
एकै अलह राम है। समरथ साईँ सोइ ॥
मैदे के पंकवान सब। खाना होइ सो होइ ॥ २१ ॥
सरगुन निरगुन ह्वै रहे। जैसा तैसा लीन्ह ॥
हरि सुमिरन लव लाइये। का जानउँ का कीन्ह ॥ २२ ॥
दादू सिरजनहार के। केते नाउँ अनंत ॥
चित आवइ सो लीजिये। साधू सुमिरहिँ संत ॥ २३ ॥
प्रान पिंड हमको दिया। अंतरि सेवइ ताहि ॥
जो आवइ अवसान सिर। सोई नाउँ सबाहि ॥ २४ ॥

ऐसा कौन अभागिया । कछु दिढावइ और ॥
नाउँ बिना पग धरन को । कहहु कहाँ है ठौर ॥ २५ ॥
निमिष न न्यारा कीजिये । अंतर से उर नाम ॥
कोटि पतित पावन भये । केवल कहता राम ॥ २६ ॥
जो तैं यह जाना नहीं । राम नाम निज सार ॥
फिर पीछे पछितायगा । रे मन मूढ गवाँर ॥ २७ ॥
दादू राम सँभारि ले । जब लग सुखी सरीर ॥
फिर पीछे पछितायगा । तन मन धरइ न धीर ॥ २८ ॥
दुख दरिया संसार है । सुख का सागर राम ॥
सुख सागर चलि जाइये । दादू तजि बे काम ॥ २६ ॥
दरिया यह संसार है । राम नाम निज नाव ॥
दादू ढील न कीजिये । यह अवसर यह दाव ॥ ३० ॥
मेरे संसा को नहीं । जीवन मरन के राम ॥
सपनेहूँ जिनि बीसरइ । मुख हिरदै हरिनाम ॥ ३१ ॥
दादू दुखिया तब लगइ । जब लग नाउँ न लेइ ॥
तबहीं पावन परम सुख । मेरी जीवनि येइ ॥ ३२ ॥
कछु न कहावइ आप को । साईं को सेवइ ॥
दादू दूजा छाडि सब । नाउँ निज लेवइ ॥ ३३ ॥
जे चित चिहुँटइ राम सौं । सुमिरन मन लागइ ॥
दादू आत्मा जीव का । संसा सब भागइ ॥ ३४ ॥
दादू पीव क नाउँ ले । तोर मिटइ सिरसाल ॥
घडी महूरत चालना । कैसी आवइ काल ॥ ३५ ॥
दादू औसर जीव तें । कहा न केवल राम ॥
अंत काल हम कहेंगे । जमबैरी सौं काम ॥ ३६ ॥
ऐसे महँगे मोल के । एक स्वास जो जाइ ॥
चौदह लोक समान सो । काहे रेत मिलाइ ॥ ३७ ॥
साईं साधु सुजान नर । साईं सेतीं लाइ ॥

साटा सिरजनहार सौं । महँगे मोल बिकाइ ॥ ३८ ॥
जतन करइ नहिं जीव का । तन मन पवना फेर ॥
दादू महँगे मोल का । होय द्वो बदि एक सेर ॥ ३९ ॥
रावत राजा राम का । कधि न बिसारों नाउँ ॥
आतम राम संभारिये । तौ बस काया गाउँ ॥ ४० ॥
अह निस सदा सरीर में । हरि चितवत दिन जाइ ॥
प्रेम मगन लयलीन मन । अंतरि गति लय लाइ ॥ ४१ ॥
निमिष एक न्यारा नहीं । तन मन माँझ समाइ ॥
एक अंग लागा रहइ । ताको काल न खाइ ॥ ४२ ॥
पिंजर पिंड सरीर का । सुवटा सहज समाइ ॥
रमता सेतीं रमि रहइ । बिमल बिमल जस गाइ ॥ ४३ ॥
अबिनासी सों एक हो । निमिष न इत उत जाइ ॥
कहत बिलाई क्या करइ । जे हरि सबद सुनाइ ॥ ४४ ॥
जहाँ रहउ तहँ राम सों । भावइ कंदलि जाइ ॥
भावइ गिरि परबत रहउ । भावइ गेह बसाइ ॥ ४५ ॥
भावइ जाइ जलहि रहउ । भावइ सीस नवाइ ।
जहाँ तहाँ हरि नाउँ सौं । हिरदै हेत लगाइ ॥ ४६ ॥
राम कहे सब रहत हैं । नख सिख सकल सरीर ॥
राम कहे बिन जात है । समुझउ मनवाँ बीर ॥ ४७ ॥
राम कहे सब रहत है । लाहा मूल सहेत ॥
राम कहे बिन जात है । मूरख मनवाँ चेत ॥ ४८ ॥
राम कहे सब रहत है । आदि अंत लौं सोइ ॥
राम कहे बिन जात है । यह मन बहुरि न होइ ॥ ४९ ॥
राम कहे सब रहत है । जीव ब्रह्म की लार ॥
राम कहे बिन जात है । रे मन हो हुसियार ॥ ५० ॥
हरि भज काफिर जीव ना । पर उपकार समाइ ॥

दादू मरना तहँ भला। जहँ पसु पंखी खाइ॥ ५१॥
राम सबद मुख ले रहइ। पीछे लागा जाइ॥
मनसा बाचा कर्मना। तेहि ताति सहज समाइ॥ ५२॥
रचि मचि लागे नाउँ सौं। राते माते होइ॥
देखइँगे दीदार को। सुख पावइँगे सोइ॥ ५३॥
साईं सबई सब भले। बुरा न कहिये कोइ॥
सारो माँहइँ सो बुरा। जिस घट नाउँ न होइ॥ ५४॥
दादू जियरा राम बिन। दुखिया येहि संसार॥
उपजइ बिनसइ खपि मरइ। दुख सुख बारंबार॥ ५५॥
राम नाम रुचि ऊपजइ। लेवइ हित चित लाइ॥
दादू सोई जीयरा। काहे जमपुर जाइ॥ ५६॥
नीकी बरिया आइ करि। राम जपी लीन्हा॥
आतम साधन सोधि करि। कारज भल कीन्हा॥ ५७॥
अगम बस्तु जाने पडी। राखी मंझि छिपाइ॥
छिन छिन सोई सँभारिये। मति वे बीसरि जाइ॥ ५८॥
दादू उज्जल निर्मला। हरि-रँग राता होइ॥
काहे दादू पचि मरइ। प्रानी सेतीँ धोइ॥ ५९॥
सरिर सरोबर राम जल। मनहि सजीवन सार॥
दादू सहजहि सब गये। मन के मैल बिकार॥ ६०॥
राम नाम जलं कृत्वा। स्नानं कृत्वा सदा मतिः॥
तन मन आत्मा निर्मलं। पंच भूपत्वसंगतः॥ ६१॥
उत्तम इंद्री निग्रहं। मुच्यंते माया मनः॥
परपुरुष पुराननं। चिंतते सदा मनः॥ ६२॥
दादू सब जग बिष भरा। निरबिष बिरला कोइ॥
सोई निरबिष होइगा। नावँ निरंजन होइ॥ ६३॥
दादू निरबिष नाउँ सों। तन मन सहजहि होइ॥

राम निरोगा करइगा। दूजा नाहीं कोइ ॥ ६४ ॥
ब्रह्म भगति मन ऊपजइ। माया भगति बिलाइ ॥
दादू निरमल मल गया। ज्यों रबि तिमिर न जाइ ॥ ६५ ॥
दादू बिषय बिकार सों। जब लग मन राता ॥
तब लग चीत न आवई। त्रिभुवनपतिदाता ॥ ६६ ॥
का जानउँ कब होइगा। हरि सुमिरन एक तार ॥
का जानउँ कब छाडिहइ। यह मन बिषय बिकार ॥ ६७ ॥
जो सुमिरन होता नहीं। नहीं सो कीजिअ काम ॥
दादू यह तन यों गया। क्योंकर पाइअ राम ॥ ६८ ॥
राम नाम निज मोहनी। जिन मोहे करतार ॥
सुर नर संकर मुनि जना। ब्रह्मा सृष्टि बिचार ॥ ६९ ॥
राम नाम निज औषधी। काटइ कोटि बिकार ॥
बिषम ब्याधि तें ऊबरइ। काया कंचन सार ॥ ७० ॥
निरबिकार निज नाउँ ले। जीवन इहइ उपाइ ॥
दादू क्रित्रिम काल है। ताके निकट न जाइ ॥ ७१ ॥
मन पवना गहि सुरति सों। दादू पावइ स्वाद ॥
सुमिरन माँहइँ सुख घना। छाडि देहु बकवाद ॥ ७२ ॥
नावँ से पीडा लीजिये। प्रेम भगति गुन गाइ ॥
दादू सुमिरन प्रीति सों। हेत सहित लव लाइ ॥ ७३ ॥
प्रान कवँल मुख राम कह। मन पवना मुख राम ॥
दादू सुरति मुख राम कह। ब्रह्म सुरत निज ठाम ॥ ७४ ॥
कहता सुनता राम कह। लेता देता राम ॥
खाता पीता राम कह। आत्म कवँल बिस्राम ॥ ७५ ॥
ज्यों जल पइठइ दूध में। ज्यों पानी में लोन ॥
ऐसे आतमराम सों। मन हठ साधइ कोन ॥ ७६ ॥
राम नाम में पैठि करि। राम नाम लव लाइ ॥

यह इकंत अयलोक में । अनत काहि को जाइ ॥ ७७ ॥
ना घर भला न बन भला । जहाँ नहीं निज नाउँ ॥
दादू उनमन मन रहइ । भला त सोई ठाउँ ॥ ७८ ॥
निर्गुणं नामं मई । हिरदइ भाव प्रबर्त्तितम् ॥
भर्म कर्म कलि बिषं । माया मोहं कंपितम् ॥ ७९ ॥
कालं जालं सोचितं । भयानक जम किंकरम् ॥
हर्षं मुदितं सतगुरुं । दाता अविगति-दरसनम् ॥ ८० ॥
सब सुख सरग पताल के । तौलि तराजू बाहि ॥
हरि सुख एक पलक का । ता सम कहा न जाइ ॥ ८१ ॥
राम नाम सब कोइ कहइ । कहिबे बहुत बिबेक ॥
एक अनेकों फिरि मिले । एक समाना एक ॥ ८२ ॥
अपनी अपनी हद में । सब कोइ लेवइ नाउँ ॥
जे लागे बेहद सों । तिनकी मैं बलि जाउँ ॥ ८३ ॥
कौन पटंतर दीजिये । दूजा नाहीं कोइ ॥
राम सरीखा राम है । सुमिरेही सुख होइ ॥ ८४ ॥
अपनी जानइँ आप गति । और न जानइँ कोइ ॥
सुमिरि सुमिरि रस पीजिये । दादू आनँद होइ ॥ ८५ ॥
सब ही बेद पुरान पढ़ि । मेटि नाउँ निरधार ॥
सब कुछ इसहीं माहिं है । क्या करिये बिस्तार ॥ ८६ ॥
पढ़ि पढ़ि थाके पंडिता । किनहुँ न पाया पार ॥
कथि कथि थाके मुनिजना । दादू नाहिं अधार ॥ ८७ ॥
निगमाहिं अगम बिचारिये । तऊ पार नहिँ आवइ ॥
तातें सेवक क्या करइ । सुमिरन लव लावइ ॥ ८८ ॥
दादू अलिफ अलाह का । जो पढ़ि जानइ कोइ ॥
कुरान कतेबा इलम सब । पढ़ि करि पूरा होइ ॥ ८९ ॥
दादू यह तन पिंजरा । माहइँ मन सूवा ॥

एक नाउँ अल्लाह का। पढ़ि हाफिज हुवा ॥ ९० ॥
नाउँ लिया तब जानिये। तन मन रहइ समाइ ॥
आदि अंत मधि एक रस। कबहूँ भूलि न जाइ ॥ ९१ ॥
एकइ दसा अनंत की। दूजी दसा न जाइ ॥
आपा भूले आन सब। एकइ रहइ समाइ ॥ ९२ ॥
दादू पीवइ एक रस। बिसरि जाइ सब और ॥
अबिगति यह गति कीजिये। मन राखउ येहि ठौर ॥ ९३ ॥
आतम चेतन कीजिये। प्रेम का रस पीवइ ॥
दादू भूलइ देह गुन। ऐसइ जन जीवइ ॥ ९४ ॥
कहि कहि केते दादू थके। सुनि सुनि कहु क्या लेइ ॥
लोन मिलइ गलि पानियाँ। तासनि चित्त दा देइ ॥ ९५ ॥
दादू हरि रस पीवता। रती बिलंब न लाइ ॥
बारंबार सँभारिये। मति वै बीसरि जाइ ॥ ९६ ॥
जगत सो सपना होइ गया। चिंतामनि जब जाइ ॥
तबही साँचा होत है। आदि अंति उर लाइ ॥ ९७ ॥
नाउँ न आवइ तब दुखी। आवइ सुख संतोख ॥
दादू सेवक राम का। दूजा हरष न सोक ॥ ९८ ॥
* मिलने सब सुख पाइये। बिछुरे बहु दुख होइ ॥
दादू सुख दुख राम का। दूजा नाहीं कोइ ॥ ९९ ॥
•दादू हरि का नाउँ जल। मैं मीन ता माहिं ॥
संग सदा आनँद करहिं। बिछुरत ही मरि जाहिं ॥ १०० ॥
दादू राम बिसारि करि। जीवइ केहि आधार ॥
ज्यों चातक जल बूँद को। करइ पुकार पुकार ॥ १०१ ॥
यह जीवइ येहि आसरे। सुमिरन के आधार ॥
दादू छिटकइ हाथ तें। हम को वार न पार ॥ १०२ ॥
दादू नाउँ निमित भजइ। गति निमित्त भजि सोइ ॥

सेवा निमित सोई भजइ । सदा सजीवनि होइ ॥ १०३ ॥
राम रसाइन नित चुवइ । हरि हीरा है साथ ॥
सो धन मेरे साइँयाँ । अलख खजाना हाथ ॥ १०४ ॥
हिरदै राम रहइ जा जन के । ताके ऊना कौन कहइ ॥
अठसिधि नवनिधि ताके आगे । सन्मुख ठाढ़ी सदा रहइ ॥१०५॥
बंदति तीनि लोक का बपुरा । कैसे दरस लहइ ॥
नाउँ निसान सकल जग ऊपरि । दादू देखत रहइ ॥ १०६ ॥
दादू सब जग नीधना । धनवंता नाहिं कोइ ॥
सो धनवंता जानिये । राम पदारथ होइ ॥ १०७ ॥
सँगही लागा सब फिरइ । राम नाम के साथ ॥
चिंतामनि हिरदै बसइ । सकल पदारथ हाथ ॥ १०८ ॥
दादू आनँद आतमा । अबिनासी के साथ ॥
प्राननाथ हिरदै बसइ । सकल पदारथ हाथ ॥ १०९ ॥
भावइ तहाँ छिपाइये । साँच न छाना होइ ॥
सेस रसातल गगन धुव । परगट कहिये सोइ ॥ ११० ॥
दादू कहँ नारद जना । कहाँ भगत प्रहलाद ॥
परगट तीनउँ लोक में । सकल पुकारइ साध ॥ १११ ॥
कहँ सिव बइठा ध्यान धरि । कहाँ कबीरा नाम ॥
सो क्यों छाना होइगा । जो रे कहैगा राम ॥ ११२ ॥
कहाँ लीन सुकदेव था । कहँ पीपा रैदास ॥
दादू साँचा क्यों छिपइ । सकल लोक परकास ॥ ११३ ॥
कहँ था गोरख भरथरी । अनँत सिधों का मंत ॥
परगट गोपीचंद है । सत्त कहहिं सब संत ॥ ८ ॥ ११४ ॥
अगम अगोचर राखिये । करि करि कोटि जतन्न ॥
दादू छाना क्यों रहइ । जिस घट राम रतन्न ॥ ११५ ॥
दादू सरग पताल में । साँचा लेवइ नाउँ ॥
सकल लोक सिर देखिये । परगट सबही ठाउँ ॥ ११६ ॥

सुमिरन का संसा रहा। पछितावा मन माहिँ॥
दादू मीठा रामरस। सगला पीया नाहिँ॥ ११७॥
दादू जैसा नाउँ था। तैसा लीया नाहिँ॥
हौंस रही यह जीव मेँ। पछितावा मन माहिँ॥ ११८॥
दादू सिर करवत बहइ। बिसरइ आतम राम॥
माहिँ कलेजा काटिये। जीवनही बिस्राम॥ ११९॥
दादू सिर करवत बहइ। राम रिदै थी जाइ॥
माहिँ कलेजा काटिये। काल दसउ दिसि खाइ॥ १२०॥
दादू सिर करवत बहइ। अंग परस नाहिँ होइ॥
माहिँ कलेजा काटिये। बिथा न जानइ कोइ॥ १२१॥
दादू सिर करवत बहइ। नैनहुँ निरखइ नाहिँ॥
माहिँ कलेजा काटिये। साल रहा मन माहिँ॥ १२२॥
जेता पाप सब जग करइ। नाउँ बिसारे होइ॥
दादू राम सँभारिये। एता डारइ धोइ॥ १२३॥
जबहीँ राम बिसारिये। तबहीँ मोटी मार॥
खंड खंड करि नाखिये। बीज पडइ तेहि बार॥ १२४॥
जबहीँ राम बिसारिये। तबहीं झंपइ काल॥
सिर ऊपर करवत बहइ। आइ पडइ जमजाल॥ १२५॥
जबहीँ राम बिसारिये। तबहीँ कंध विनास॥
पग पग परलइ पिंड पडइ। प्रानी जाइ निरास॥ १२६॥
जबही राम बिसारिये। तबहीँ हानी होइ॥
प्रान पिंड सरबस गया। सुखी न देखा कोइ॥ १२७॥
साहिब जी के नाउँ माँ। बिरहा पीडँ पुकार॥
ताला बेली रावना। दादू है दीदार॥ १२८॥
साहिब जी के नाउँ माँ। भाव भक्ति बेसास॥
लेइ समाधि लागा रहइ। दादू साईँ पास॥ १२९॥

साहिब जी के नाउँ माँ। मति बुधि ज्ञान बिचार॥
प्रेम प्रीति सतनेह सुख। दादू जोति अपार॥ १३० ॥
साहिब जी का नाउँ माँ। सब कुछ भरे भँडार॥
नूरा तेज अनंत है। दादू सिरजनहार॥ १३१ ॥
जिसमें सब कुछ सो लिया। नीरंजन का नाउँ॥
दादू हिरदै राखि ले। मैं बलिहारी जाउँ॥ १३२ ॥

इति सुमिरन का अंग सम्पूर्ण ॥ २ ॥ २७१ ॥

———:०:———

अथ बिरह को अंग।

---:o:---

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुर देवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा। परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
रतिवंती आरति करइ। राम सनेही आव ॥
दादू अवसर अब मिलइ। यह बिरहिनि का भाव ॥ २ ॥
पीव पुकारइ बिरहिनी। निस दिन रहइ उदास ॥
राम राम दादू कहइ। ताला बेली पास ॥ ३ ॥
मन चित चातक ज्यों रटइ। पिव पिव लागी प्यास ॥
दादू दरसन कारने। पुरवहु मेरी आस ॥ ४ ॥
बिरहिनि दुख का सन कहइ। का सन देइ सँदेस ॥
पंथ निहारत पीव का। बिरहिनि पलटे केस ॥ ५ ॥
बिरहिनि दुख कासन कहइ। जानत है जगदीस ॥
निस दिन हिअरा बिहारिहइ। बिरहा करवत सीस ॥ ६ ॥
बिरहिनि कुरलेइ कुंज ज्यों। निस दिन तलफत जाइ ॥
राम सनेही कारनइ। रोवत रैनि बिहाइ ॥ ७ ॥
पासइ बइठा सब सुनउँ। हमकों जाब न देइ ॥
दादू तेरे सिर चढइ। जीव हमारा लेइ ॥ ८ ॥
सबं को सुखिया देखिये। दुखिया नाहीं कोइ ॥
दुखिया दादू दास है। ऐन परस नहिं होइ ॥ ९ ॥
साहिब मुख बोलइ नहीं। सेवक फिरइ उदास ॥
यह बेदन जिव में रहइ। दुखिया दादू दास ॥ १० ॥
पिय बिन पल पल जुग भया। कठिन दिवस क्यों जाइ ॥
दादू दुखिया राम बिन। काल रूप सब खाइ ॥ ११ ॥

४

दादू इस संसार मे॑ । मुझ से दुखी न कोइ ॥
पिय मिलने के कारने । मै॑ जल भरिया रोइ ॥ १२ ॥
ना वह मिलइ न मैं सुखी । कहु क्यो जीवन होइ ॥
जिन मुझ को घायल किया । मेरी दारू सोइ ॥ १३ ॥
जबलगि सुरति सिटइ नही॑ । मन निहचल नाहि॑ होइ ॥
जबलगि पिय परसइ नही॑ । बडी बिपति यह मोइ ॥ १४ ॥
राम बिछोही बिरहिनी । फिरि मिलन न पावइ ॥
दादू तलफइ मीन ज्यो॑ । तुझ दया न आवइ ॥ १५ ॥
दरसन कारन बिरहिनी । बैरागिन होवइ ॥
दादू बिरह बियोगिनी । हरि मारग जोहइ ॥ १६ ॥
अति गत आतुर मिलन को । जैसे जल बिन मीन ॥
सो देखइ दीदार को । दादू आतम लीन ॥ १७ ॥
ज्यो॑ अमली चित अमल है सूरे के संग्राम ॥
निरधन के चित धन बसइ । यो॑ दादू मन राम ॥१८॥
ज्यो॑ चातक चित जल बसइ । ज्यो॑ पानी चित मीन ॥
जइसे चंद चकोर है । ऐसइ हरि सो॑ कीन ॥ १९ ॥
ज्यो॑ कुंजर के मन बसइ । अनल पंखि आकास ॥
यो॑ दादू मन राम सो॑ । बैरागी बन बास ॥२०॥
भवँरा लुबधी बास का । मोह्या नाद कुरंग ॥
दादू का मन राम सो॑ । दीपक जोति पतंग ॥२१॥
स्रवना राते नाद सो॑ । नैना राते रूप ॥
जिभ्या राती स्वाद सो॑ । दादू एक अनूप ॥ ॥ २२ ॥
देह पियारी जीव को । निस दिन सेवा माहि॑ ॥
दादू जीवन मरन लो॑ । कबहूँ छाडइ नाहि॑ ॥ २३ ॥
देह पियारी जीव को । जीव पियारा देह ॥
दादू हरि रस पाइये । ऐसा होइ सनेह ॥ २४ ॥

दादू हरदम माहिं दिवान । सेज हमारी पीव है ॥
देखउँ सो सुबिहान । इसक हमारी जीव है ॥ २५ ॥
दादू हरदम माहिं दिवान । कहूँ दरूनैं दरद सों ॥
दरद दरूनैं जाहिं । जब देखउँ दीदार को ॥ २६ ॥
दादू दरूनैं दरदवंद । यह दिल दरद न जाइ ॥
हम दुखिया दीदार के । मिहरवान दिखलाइ ॥ २७ ॥
मूये पीर पुकारता । बैद न मिलिया आइ ॥
दादू थोडी बात थी । जे टुक दरस दिखाइ ॥ २८ ॥
मैं भिख्यारी माँगता । दरसन देहु दयाल ॥
तुम दाता दुख भंजना । मेरी करहु सँभाल ॥ २९ ॥
क्या जीयें मैं जीवना । बिन दरसन बेहाल ॥
दादू सोई जीवना । परगट दरसन लाल ॥ ३० ॥
येहि जग जीवन सो भला । जब लग हिरदय राम ॥
राम बिना जो जीवना । सो दादू बे काम ॥ ३१ ॥
दादू कहु दीदार की । साईं सेती बात ॥
कब हरि दरसन देहुगे । यह अवसर चलि जात ॥ ३२ ॥
बिथा तुम्हारे दरस की । मोहि ब्यापइ दिन रात ॥
दुखी न कीजे दीन को । दरसन दीजे तात ॥ ३३ ॥
इस हियरे यह साल । पिय बिन क्यों नहिं जाइसी ॥
जब देखउँ मेरा लाल । रोम रोम सुख आइसी ॥ ३४ ॥
तूँ है तइस प्रकास करि । अपना आप दिखाइ ॥
दादू को दीदार दे । बलि बिलंब नहिं लाइ ॥ ३५ ॥
पिय जो देखइ मुझको । हौं भी देखउँ पीव ॥
हौं देखउँ देखत मिलइ । तौ सुख पावइ जीव ॥ ३६ ॥
तन मन तुम्ह पर वारनौं । करि दीजे कइ बार ॥
जो ऐसी बिधि पाइये । लीजै सिरजनहार ॥ ३७ ॥

दीन दुनी सदिकइ करउँ । देखन दे दीदार ॥
तन मन भी छिन छिन करउँ । भिस्त दोजग भी वार ॥ ३८ ॥
हम दुखिया दीदार के । दिल पइ दूरि न होइ ॥
भावइ हम को जार दे । होना है सो होइ ॥ ३९ ॥
दादू कहइ जे कुछ दिया । सो सब तुम्हहीँ लेहु ॥
तुम्ह बिन मन मानइ नहीँ । दरस अपाना देहु ॥ ४० ॥
दूजा कुछ मागइ नहीँ । हम को दे दीदार ॥
तूँ है तब लग एक ठग । दादू के दिलदार ॥ ४१ ॥
तूँ है तैसी भगति दे । तूँ है तैसा प्रेम ॥
तूँ है तैसी सुरति दे । तूँ है तैसा खेम ॥४२॥
सदिकइ करउँ सरीर को । बेर बेर बहु भंत ॥
भाव भगति हित प्रेम लेइ । खरा पियारा कंत ॥ ४३ ॥
दादू दरसन की रली । हम को बहुत अपार ॥
क्या जानउँ कबहूँ मिलइ । मेरा प्रान अधार ॥ ४४ ॥
दादू कारन कंत के । खरा दुखी बेहाल ॥
मीरा मेरा मेहर कर । दे दरसन दर हाल ॥ ४५ ॥
ताला बेली प्यास बिन । क्योँ रस पिया जाइ ॥
बिरहा दरसन दरद सोँ । हम को देहु खुदाइ ॥ ४६ ॥
ताला बेली पीर सोँ । बिरहा प्रेम पियास ॥
दरसन सेतीँ दीजिये । बिलसइ दादू दास ॥ ४७ ॥
हम को अपना आप दे । इस्क मोहब्बत दर्द ॥
सेज सुहाग सुख प्रेम रस । मिलि खेलइँ ला पर्द ॥ ४८ ॥
प्रेम भगति माता रहइ । ताला बेली अंग ॥
सदा सपीडा मन रहइ । राम रमइ उन संग ॥ ४९ ॥
प्रेम मगन रस पाइये । भगति हेत रुचि भाव ॥
बिरह बिथा निज नाउँ सोँ । देव दया करि आव ॥ ५० ॥

गई दसा सब बाहुरइ । जो तुम्ह प्रगटहु आइ ॥
दादू ऊजड सब बसइ । दरसन देहु दिखाइ ॥ ५१ ॥
हम कसि के क्या होयगा । बिरद तुम्हारा जाइ ॥
पीछे ही पछिताहुगे । तातें प्रगटहु आइ ॥ ५२ ॥
मीयाँ भेंडा माठघरि । बाढीवंता लोइ ॥
दु:खेडें हडे गयेहु । मरा बिछोहइ रोइ ॥ ५३ ॥
है सो निधि नहिं पाइये । नहिं सोहइ भर पूर ॥
दादू मन मानइ नहीं । तातें मरिये झूर ॥ ५४ ॥
जिस घट इस्क अलाह का । तिस घट लोहु न मास ॥
दादू जियरे जक नहीं । सुसकइ साँसइ साँस ॥ ५५ ॥
रती खून बिसरइ मरइ । संभारली सँभालि ॥
दादू सुहदा थीर है । आसिक अलह नालि ॥ ५६ ॥
दादू आसिक करबदा । सिर भीडे ओहि लाहि ॥
अलह कारन आप को । सालइ अंदर माँहि ॥ ५७ ॥
भोरैं भोरैं तन करहिं । बडे करहिं कुरबान ॥
मीठा कडुअ न लगई । दादू तौ हु सान ॥ ५८ ॥
जब लग सीस न सौंपिये । तब लग इस्क न होइ ॥
आसिक मारे ना मरइ । पिया पियाला सोइ ॥ ५६ ॥
तइडी नोई संभु । जे डीपें दीदार के ॥
उज्जल हैदी अंभु । पस्साई तुहि पान के ॥ ६० ॥
बिचौं सभौं दूरी करउ । अंदरि बिया न पाइ ॥
दादू राता है कदा । मन माँहीं बतिलाइ ॥ ६१ ॥
इस्क मुहब्बत मस्त मन । तालिब दर दीदार ॥
दोस्ता दिल हर दम रहइ । यादगार हुसियार ॥ ६२ ॥
आसिक एक अलाह के । फारिक दुनियाँ दीन ॥
तारिक इस कौ जूद थे । दादू पाक अकीन ॥ ६३ ॥

आसिकार इक बाज करदा । दिल बजार फतंद ॥
अलाह माजे नूर दीदम । दिलहि दादू बंद ॥ ६४ ॥
दादू इस्क अवाज सों । ऐसे कहइ न कोइ ॥
दरद मोहब्बत पाइये । साहिब हासिल होइ ॥ ६५ ॥
कह आसिक अल्लाह के । मारे अपने हाथ ॥
कहँ आलम औजूद सों । कहइ जबाँ की बात ॥ ६६ ॥
दादू इस्क अलाह का । कबहूँ प्रगटइ आइ ॥
तन मन दिल अरवाह का । सब परदा जरि जाइ ॥ ६७ ॥
अरवाहे सिजदा कुनँद । औजूदरा चिकार ॥
दादू नूरा दादनी । आसीकाँ दीदार ॥ ६८ ॥
बिरह अगिन तन जारिये । ज्ञान अग्नि दव लाइ ॥
दादू नख सिख परजरइ । राम बुझावइ आइ ॥ ६९ ॥
बिरह अगिनि मों जारिबा । दरसन के ताईं ॥
दादू आतुर रोइबा । दूजा कुछ नाहीं ॥ ७० ॥
साहिब सों कछु बल नहीं । जिनि हठ साधइ कोइ ॥
दादू पीर पुकारिये । रोता होइ सो होइ ॥ ७१ ॥
ज्ञान ध्यान सब छाडि दे । जप तप साधन जोग ॥
दादू बिरहा ले रहइ । छाडि सकल रस भोग ॥ ७२ ॥
जहाँ बिरह तहँ और क्या । सुधि बुधि नाठइ ज्ञान ॥
लोक बेद मारग तजे । दादू एकइ ध्यान ॥ ७३ ॥
बिरही जन जीवइ नहीं । कोटि कहउ समझाइ ॥
दादू गहिलाहे रहइ । तलफि तलफि मरि जाइ ॥ ७४ ॥
दादू तलफइ पीर सों । बिरही जन तेरा ॥
सुसकै साईं कारने । मिलि साहिब मेरा ॥ ७५ ॥
पड़ा पुकारै पीर सों । दादू बिरही जन ॥
राम सनेही चित बसइ । और न भावइ मन ॥ ७६ ॥

जिस घटि बिरहा राम का। तिस नींद न आवइ ॥
दादू तलफइ बिरहिनी। उस पीर जगावइ ॥ ७७ ॥
सारा सूरा नींद भरि। सब कोई सोवइ ॥
दादू घाइल दरदवँद। जागइ अरु रोवइ ॥ ७८ ॥
पीर पुरानी ना पड़इ। अंतर बेधा होइ ॥
दादू जीवन मरन लौं। पड़ा पुकारइ सोइ ॥ ७९ ॥
दादू बिरही पीर सों। पड़ा पुकारइ मीत ॥
राम बिना जीवइ नहीं। पीय मिलन की चीत ॥ ८० ॥
जो कबहूँ बिरहिनि मरइ। तौ भी बिरही होइ ॥
दादू पिउ पिउ जीवता। मूल भी टेरइ सोइ ॥ ८१ ॥
अपनी पीर पुकारिये। पीर पराई नाहिँ ॥
पीर पुकारइ सो भला। करक करेजे माहिँ ॥ ८२ ॥
ज्यों जीवत मृत कारनै। गति करि नासइ आप ॥
दादू कारन राम के। बिरही करइ बिलाप ॥ ८३ ॥
तलफि तलफि बिरहिनि मरइ। करि करि बहुत बिलाप ॥
बिरह अगिनि मैं जरि गई। पीय न पूछइ बात ॥ ८४ ॥
कहाँ जाउँ को पुकारउँ। पीय न पूछइ बात ॥
पिय बिन चैन न आवई। क्यों मरउँ दिन रात ॥ ८५ ॥
बिरह बियोग न सहि सकउँ। मो पइ सहा न जाइ ॥
कोइ कहउ मेरे पीय को। दरस दिखावइ आइ ॥ ८६ ॥
बिरह बियोग न सहि सकउँ। निस दिन सालइ मोहि ॥
कोइ कहइ मेरे पीय को। कब मुख देखउँ तोहि ॥ ८७ ॥
बिरह बियोग न सहि सकउँ। तन मन धरइ न धीर ॥
कोइ कहइ मेरे पीय को। मेटइ मेरी पीर ॥ ८८ ॥
साधु दुखी संसार मैं। तुम्ह बिन रहा न जाइ ॥
औरों के आनंद है। सुख से रैनि बिहाइ ॥ ८९ ॥

दादू लायक हम नहीं । हरि के दरसन जोग ॥
बिन देखे मरि जाहिंगे । पिव के बिरह बियोग ॥ ६० ॥
दादू सुख है साँई सेँ । और सबइ हो दुक्ख ॥
देखउँ दरसन पीव का । तिसहीं लागे सुक्ख ॥ ६१ ॥
चंदन सीतल चंद्रमा । जल सीतल सब कोइ ॥
दादू बिरही राम का । इन सेँ कधी न होइ ॥ ६२ ॥
दादू घायल दरदवँद । अंतर करइ पुकार ॥
साँई सुनइ सब लोक में । दादू यह अधिकार ॥ ६३ ॥
दादू जागइ जगत गुरु । जग सगरा सोवइ ॥
बिरही जागइ पीर सों । जो घायल होवइ ॥ ९४ ॥
बिरह अगिनि का दाग दे । जीवत मिरतक गोर ॥
दादू पहिले घर किया । आदि हमारी ठौर ॥ ९५ ॥
देखे का अचरज नहीं । अनदेखे का होइ ॥
देखे ऊपर दिल नहीं । अनदेखे को रोइ ॥ ६६ ॥
पहिला आगम बिरह का । पीछइ प्रीति प्रकास ॥
प्रेम मगन लवलीन मन । तहाँ मिलन की आस ॥ ९७ ॥
बिरह बियोगी मन भला । साईं का बैराग ॥
सहज सँतोखी पाइये । दादू मोटे भाग ॥ ६८ ॥
त्रिखा बिना तन प्रीति न उपजइ । सीत निकट जल धरिया ॥
जनम लगे जीवन मन पीवइ । निर्मल दह दिसि भरिया ॥९९॥
बुद्धि बिना तन प्रीति न उपजइ । बहुबिधि भोजन नेरा ॥
जनम लगे जिव रती न चाखइ । पाक पूर बहु तेरा ॥ १०० ॥
तपनि बिना तन प्रीति न उपजइ । संगहि सीतल छाया ॥
जनम लगे जिव जानउँ नाहीं । तरवर त्रिभुवन राया ॥१०१॥
चोट बिना तन प्रीति न उपजइ । ओषध अंग रहंत ॥
जनम लगे जिव पलक न परसइ । बूटी अमर अनंत ॥ १०२ ॥

चोट न लागी बिरह की। पीर न उपजी आइ ॥
जागि न रोये आह दे। सोवत गई बिहाइ ॥ १०३ ॥
दादू पीर न ऊपजी। ना हम करी पुकार ॥
ता तें साहिब ना मिला। दादू जीती बार ॥ १०४ ॥
अंदर पीर न ऊभरइ। बाहर करइ पुकार ॥
दादू सो क्यों करि लहइ। साहिब का दीदार ॥ १०५ ॥
मनहीं माहैं झूरना। रोवइ मनहीं माहिं ॥
मनहीं माहैं आह दे। दादू बाहर नाहिं ॥ १०६ ॥
बिनही नैनन्ह रोवना। बिन मुख पीर पुकार ॥
बिनही हाथ के पीटना। दादू बारंबार ॥ १०७ ॥
प्रीति न उपजइ बिरह बिन। प्रेम भक्ति क्यों होइ ॥
झूठे दादू भाव बिन। कोटि करइ जो कोइ ॥ १०८ ॥
बातों बिरह न ऊपजइ। बातों प्रीति न होइ ॥
बातों प्रेम न पाइये। जिन न पतीजइ कोइ ॥ १०९ ॥
दादू तौ पिय पाइये। कसमल है सो जाइ ॥
निर्मल मन करि आरसी। मूरति माहिं लखाइ ॥ ११० ॥
दादू तौ पिय पाइये। करि मंझे बीलाप ॥
सुनिहै कबहूँ चित्त धरि। परगट होवइ आप ॥ १११ ॥
दादू तौ पिय पाइये। कर साईं की सेव ॥
काया माहिं लखायसी। घटही भीतर देव ॥ ११२ ॥
दादू तौ पिय पाइये। भावइ प्रीति लगाइ ॥
हेजैं हरी बुलाइये। मोहन मंदिर माइ ॥ ११३ ॥
जाके जैसी पीर है। तैसी करइ पुकार ॥
को सूछिम को सहज में। को मिरतक तेहि बार ॥ ११४ ॥
दरदहि बूझइ दरदवँद। जाकी दिल होवइ ॥
क्या जाणइ दादू दरद की। नींद भरि सोवइ ॥ ११५ ॥

दादू अक्छर प्रेम का । कोइ पढैगा एक ॥
दादू पुस्तक प्रेम बिन । केते पढे अनेक ॥ ११६ ॥
दादू पाती प्रेम की । बिरला बाँचइ कोइ ॥
बेद पुरान पुस्तक पढइ । प्रेम बिना क्योँ होइ ॥ ११७ ॥
जर बिन सर बिन कमान बिन । मारे खैँच के सीस ॥
लागी चोट सरीर मेँ । नख सिख लागइ सीस ॥ ११८ ॥
भल का मारइ भेद सोँ सालइ मंझि परान ॥
मारनहारा जानिहइ या जिहि लागे बान ॥ ११९ ॥
सो सर हमको मारि ले । जिहि सर मिलिये जाइ ॥
निस दिन मारग देखिये । कबहूँ लागइ आइ ॥ १२० ॥
जेहि लागी सो जानिहइ । बेधा करइ पुकार ॥
दादू पाँजर पीर हइ । सालइ बारंबार ॥ १२१ ॥
बिरही सुसकइ पीर सोँ । ज्योँ घायल रन माहिँ ॥
प्रीतम मारे बान भरि । दादू जीवइ नाहिँ ॥ १२२ ॥
बिरह जगावइ दरद को । दरद जगावइ जीव ॥
जीव जगावइ सुरति को । पंच पुकारइ पीव ॥ १२३ ॥
दादू मारइ प्रेम सोँ । बेधे साधु सुजान ॥
मारनहारे को मिले । दादू बिरही बान ॥ १२४ ॥
सहजइ मनसा मन सधइ । सहजइ पवना सोइ ॥
सहजइ पाँचो थिर भये । चोट बिरह की होइ ॥ १२५ ॥
मारनहारा रहि गया । जेहि लागी सो नाहिँ ॥
कबहूँ सो दिन होइगा । यह मेरे मन माहिँ ॥ १२६ ॥
प्रीतम मारे प्रेम सोँ । तिन को क्या मारइ ॥
दादू जारे बिरह के । तिन को क्या जारइ ॥ १२७ ॥
दादू परदा पलक का । एता अंतर होइ ॥
दादू बिरही राम बिन । क्योँ करि जीवइ सोइ ॥ १२८ ॥

काया माहैं क्यों रहा। बिन देखे दीदार ॥
दादू बिरही बावरा। मरइ नहीं तेहि बार ॥ १२९ ॥
बिन देखे जीवइ नहीं। बिरहे का सहि नान ॥
दादू जीवन जब लगइ। तब लग बिरह न जान ॥ १३० ॥
रोम रोम रस प्यास है। दादू करइ पुकार ॥
राम घटा दिल उमगि करि। बरसहु सिरजनहार ॥ १३१ ॥
प्रीति जो मेरे पीव की। पइठी पंजर माहिं ॥
रोम रोम पिय पिय करइ। दादू दूसर नाहिं ॥ १३२ ॥
सब घट स्रवना सुरति सों। सब घट रसना बैन ॥
सब घट नैना होइ रहइ। दादू बिरहा ऐन ॥ १३३ ॥
राति दिवस का रोवना। पहर पलक का नाहिं ॥
रोवत रोवत मिलि गया। दादू साहिब माहिं ॥ १३४ ॥
नैन हमारे बावरे। रोवइ नहिं दिन राति ॥
साईं संग न जागहीं। पिय क्यों पूछइ बात ॥ १३५ ॥
नैनहु नीर न आइया। क्या जानइँ ये रोइ ॥
तइसे हीं करि रोइये। साहिब नैनहु जोइ ॥ १३६ ॥
नैन हमारे ढीठ हैं। नाले नीर न जाहिं ॥
सूख सरा सहेत वे। करँक भये गलि माहिं ॥ १३७ ॥
बिरह प्रेम की लहर में। यह मन पंगुल होइ ॥
राम नाम में गलि गया। बूझइ बिरला कोइ ॥ १३८ ॥
बिरह अगिन में जरि गये। मन के मैल बिकार ॥
दादू बिरही पीय का। देखइगा दीदार ॥ १३९ ॥
बिरह अगिन में बरि गये। मन के बिषय बिकार ॥
ताते पंगुल होइ रहा। दादू दर दीदार ॥ १४० ॥
बिरहा आया दरद सों। मीठा लागा राम ॥
काया लागी काल होइ। कडुवे लागे काम ॥ १४१ ॥

राम अकेला रहि गया । तन मन गया बिलाइ ॥
दादू बिरही तब सुखी । दरस परस मिलि जाइ ॥ १४२ ॥
जो हम छाडहिँ राम को । तौ राम न छाडइ ॥
दादू अमली अमल तेँ । मन क्योँ करि काढइ ॥ १४३ ॥
बिरहा पारस जब मिलइ । बिरहिन बिरहा होइ ॥
दादू परसइ बिरहनी । पिय पिय टेरइ सोइ ॥ १४४ ॥
आसिक मासुक होइ गया । इस्क कहावइ सोइ ॥
दादू उस मासूक का । अलहि आसिक होइ ॥ १४५ ॥
राम बिरहिनी होइ रहा । बिरहिन होइ गइ राम ॥
दादू बिरहा बापुरा । अइसइ करि गया काम ॥ १४६ ॥
बिरह बिचारा ले गया । दादू हमको आइ ॥
अगम अगोचर राम था । बिरह बिना को जाइ ॥१४७॥
बिरहा बपुरा आइ करि । सोवत जगावइ जीव ॥
दादू अंग लगाइ करि । ले पहुँचावइ पीव ॥ १४८ ॥
बिरहा मेरा मीत है । बिरहा बैरी नाहिँ ॥
बिरहे को बैरी कहइ । सो दादू किस माहिँ ॥ १४९ ॥
इस्क अलाह की जाति है । इस्क अलह का अंग ॥
इस्क अलह आजूद है । इस्क अलह का रंग ॥ १५० ॥
प्रीतम के पग परसिये । मुझ देखन का चाव ॥
तहँ ले सीस नवाइये । जहाँ धरे थे पाव ॥ १५१ ॥
बाट बिरह की सोधि करि । पंथ प्रेम का लेहु ॥
लेइ के मारग जाइये । दूसर पाव न देहु ॥ १५२ ॥
बिरहा बेगा सहज मेँ । आगे पीछे जाइ ॥
थोड़े माहिँ बहुत है । दादू रहु लव लाइ ॥ १५३ ॥
बिरहा बेगा ले मिलइ । ताला बेली पीर ॥
दादू मन घायल भया । सालइ सकल सरीर ॥ १५४ ॥

सबद तुम्हारा ऊजला । चिड़िया क्यों कारी ॥
तुही तुही निसि दिन करइ । बिरहा की जारी ॥ १५५ ॥
अज्ञा अपरंपार की । बसि अंबर भरतार ॥
हरे पटंबर पहिर करि । धरती करइ सिंगार ॥
बसुधा सब फूलइ फलइ । पृथिवि अनंत अपार ॥
गगन गरजि जल थल भरे । दादू जयजय कार ॥ १५५ ॥
काला मुह करि काल का । साईं सदा सुकाल ॥
मेघ तुम्हारे घर घनाँ । बरसहु दीनदयाल ॥ १५६ ॥

इति बिरह को अंग सम्पूर्ण ।

अथ परचा को अंग ।

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरु देवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
दादू नीरंतर पिय पाइया । पंखी उनमन जाइ ॥
सप्तो मंडल भेदिया । अष्टे रहा समाइ ॥ २ ॥
नीरंतर पिय पाइयाँ । निगम न पहूँचइ बेद ॥
तेज सरूपी पिय बसइ । बिरला जानइ भेद ॥ ३ ॥
नीरंतर पिय पाइयाँ । तीनि लोक भर पूरि ॥
सब से जो साईं बसइ । लोक बतावइ दूरि ॥ ४ ॥
नीरंतर पिय पाइया । आनँद बारह बास ॥
हंस सों प्रमहंस खेलइँ । सेवक स्वामी पास ॥ ५ ॥
रंग भरि खेलों पीय सों । बाजइ बेन रसाल ॥
अकल पाट बइठा स्वामी । प्रेम पिलावइ लाल ॥ ६ ॥
रँग भरि खेलउँ पीव सों । सेती दीनदयाल ॥
निस बासर तहवाँ बसइ । मान सरोबर पाल ॥ ७ ॥
रँग भरि खेलउँ पीय सोँ । कबहुँ न होइ बियोग ॥
आदि पुरुष अंतर मिला । कछु पुरबले सँजोग ॥ ८ ॥
रँग भरि खेलउँ पीय सोँ । बारह मास बसंत ॥
सेवक सदा अनंद है । जुग जुग देखउँ कंत ॥ ९ ॥
काया अंतर पाइया । भृकुटी केरे तीर ॥
सहजइ आप लखाइया । ब्यापा सकल सरीर ॥ १० ॥
काया अंतर पाइया । नीरंतर निरधार ॥
सहजइ आप लखाइयाँ । ऐसा समरथ सार ॥ ११ ॥

काया अंतर पाइया। अनहद बेन बजाइ॥
सहजइ आप लखाइया। सुन मंडल में जाइ॥ १२॥
काया अंतरि पाइया। सब देवन का देव॥
सहजइ आप लखाइया। ऐसा अलख अभेव॥ १३॥
भवँर कवँल रस बेधिया। सुख सरवर रस पीव॥
तहँ हंसा मोती चुँगइ। पिय देखे सुख जीव॥ १४॥
भवँर कवँल रस बेधिया। गहे चरन कर हेत॥
पिय जो परसत ही भया। रोम रोम सब सेत॥ १५॥
भवँर कमल रस बेधियाँ। अनत न भरमइ जाइ॥
तहाँ बास बिलंबिया। मगन भया रस खाइ॥ १६॥
भवँर कवँल रस बेधिया। गही जो पिय की बाट॥
तहाँ दलि भवँरी रहइ। कौन करइ सरचोट॥ १७॥
खोजि तहाँ पिय पाइये। सबद उपन्नइ पास॥
तहाँ एक एकांत है। तहाँ जोति परकास॥ १८॥
खोजि तहाँ पिय पाइये। चंद न ऊगइ सूर॥
नीरंतर निरधार है। तेज रहा भरपूर॥ १९॥
खोजि तहाँ पिय पाइये। बिन जिभ्भा गुन गाइ॥
आदि पुरुष अनलेख है। सहजे रहा समाइ॥ २०॥
दादू खोजि तहाँ पिय पाइये। अजरा अमर उमंग॥
जरा मरन भय भाजसी। राखइ अपने संग॥ २१॥
दादू गाफिल सोवतइ। मंझइ रब्ब निहार॥
मँझेई पिय पान जो। मंझेई सो बिचार॥ २२॥
दादू गाफिल छोडतइ। आहे मंझि अलाह॥
पिरी पान जो पान सइ। लहइ सभोई साव॥ २३॥
दादू गाफिल छोड़तइ। आहे मंझि मुकाम॥
दरिगह में दीवान तनि। पसे न बैठो याग॥ २४॥

दादू गाफिल छोडतइ । अंदर पीरी यसु ॥
तखन रखानी बीच मे । परइ तिनही बसु ॥ २५ ॥
हरिचिंता मनि चेनता । चिंता चित की जाइ ॥
चिंतामनि चित मे मिला । दादू रहा लुभाइ ॥ २६ ॥
अपने नैनहुँ आप को । जब आतम देखइ ॥
तहाँ दादू परआतमा । ताही को पेखइ ॥ २७ ॥
बिन रसना बोलिअ जहाँ । अंतरजामी आप ॥
बिन स्रवनहुँ साईं सुनइ । जो कुछ कहिये जाइ ॥ २८ ॥
ज्ञानलहरि जहँ ते उठइ । बानी का परकास ॥
अनभव जहँ ते ऊपजइ । सबद किया तहँवास ॥
सो घर सदा बिचार का । तहाँ निरंजन बास ॥
तहँ तूँ दादू खोजि ले । ब्रह्म जीव के पास ॥ २६ ॥
जहँ तन मन का मूल है । ऊपजई ओंकार ॥
अनहद सेजा सबद का । आतम करइ बिचार ॥
भाव भगति ले ऊपजइ । सो ठाहर निज सार ॥
तहँ दादू निधि पाइये । नीरंतर निरधार ॥ ३० ॥
एक ठहर सूझइ सदा । निकट निरंतर ठाउँ ॥
तहाँ निरंजन पूछि ले । अज राउर तेहि नाउँ ॥
साधू जन क्रीडा करइ । सदा सुखी तेहि गाउँ ॥
चलि दादू उस ठउर को । मैं बलिहारी जाउँ ॥३१॥
दादू यसु यरनि के । येही मंझि कलूब ॥
बैठो आइ के बांचि में । प्रान जो हो महबूब ॥ ३२ ॥
नैनहुँ वाला निरख करि । दादू घालइ हाथ ॥
तबहीं पीवइ रामधन । निकट निरंजन नाथ ॥
नैनहुँ बिन सूझइ नहीं । भूला कतहूँ जाइ ॥
दादू धन पीवइ नहीं । आया मूल गवाँइ ॥ ३३ ॥

जहँ आतम तहँ राम है। सकल रहा भरपूर॥
अंतर गति लव लाइ रहु। दादू सेवक सूर॥ ३४॥
पहिले लोचन दीजिये। पीछे ब्रह्म देखाइ॥
दादू सूझइ सार सब। सुख मे॑ रहइ समाइ॥ ३५॥
अंधे को आनँद हुआ। नैनहुँ सूझन लाग॥
दरसन देखइ पीव का। दादू मोटे भाग॥३६॥
महीँ महल बारीक है। गाउँ ठाउँ ना नाउँ॥
तासोँ मन लागा रहइ। मै॑ बलिहारी जाउँ॥३७॥
खेला चाहइ प्रेम रस। आलम आगि लगाइ॥
दूजे को ठाहर नहीँ। पुहुप न गंध समाइ॥ ३८॥
नाहीँ होइ करि नाउँ ले। कुछ न कहाई रे॥
साहिब जी की सेज परि। दादू जाई रे॥३९॥
जहाँ राम तहँ मै॑ नहीँ। मै॑ तहँ नाहीँ राम॥
दादू महल बारीक है। दुइ को नाहीँ ठाम॥४०॥
मै॑ नाहीँ तहँ मै॑ गया। एकइ दूसर नाहिँ॥
नाहीँ को ठाहर घनी। दादू निज घर माहिँ॥४१॥
मै॑ नाहीँ तहँ मै॑ गया। आगे एक अलाउ॥
दादू ऐसी बंदगी। दूजा नाहीँ आउ॥ ४२॥
दादू आया जब लगइ। तब लग दूजा होइ॥
जब आया तब मिटि गया। तब दूजा नहिँ कोइ॥४३॥
दादू है को मै॑ घना। नाहीँ को कछु नाहिँ॥
दादू नाहीँ होइ रहु। अपनो साहिब माहिँ॥४४॥
तीनि सुन्न आकार की। चौथी निर्गुन नावँ॥
सहजै मन मे॑ रमि रहा। जहाँ तहाँ सब ठावँ॥४५॥
पाँच तत्त्व के पाँच है॑। आठ तत्त्व के आठ॥
आठ तत्त्व का एक है। तहाँ निरंजन हाट॥४६॥

जहँ मन माया ब्रह्म था । गुन इंद्री आकार ॥
तहँ मन बिरचइ सब नथइ । रचि रहु सिरजनहार ॥४७॥
काया सुन्न पाँच का बासा । आतम सुन्न प्रान परकासा ॥
परम सुन्न ब्रह्म सो मेला । आगे दादू आप अकेला ॥४८॥
तहँ ही से सब ऊपजे । चंद सुरज आकास ॥
पानि पवन पावक किये । धरती का परकास ॥४९॥
काल करम जिव ऊपजे । माया मन घट सास ॥
रहता रमता राम है । सहज सुन्न सब पास ॥५०॥
सहज सुन्न सब ठौर है । सब घट सबही माँहि ॥
तहाँ निरंजन रम रहा । कोइ गुन ब्यापइ नाँहि ॥५१॥
तिस सरवर के तीर । सो हंसा मोती चुँगइ ॥
पीवइ नीझर नीर । सोहै हँसा सो सुनइ ॥५२॥
तिस सरवर के पार । जप तप संजम कीजिये ॥
सन्मुख सिरजनहार । प्रेम पिलावइ पीजिये ॥ ५३ ॥
तिस सरवर के तीर । संगी सबइ सुहावना ॥
बिन कर बाजइ बेन । तहँ जिह्वा ही गावना ॥ ५४ ॥
तिस सरवर के तीर । चरन कमल चित लाइया ॥
आदि निरंजन पीव । तहँ भाग हमारे आइया ॥ ५५ ॥
सहज सरोवर आतमा । हंसा करइ कलोल ॥
सुख सागर सो भर भरा । मुक्ताहल मन मोल ॥ ५६ ॥
हरि सरवर पुरइन सबइ । जित तित पानी पीवै ॥
जहाँ तहाँ जल अँचवता । गई तृषा सुख जीव ॥ ५७॥
सुख सागर सो भर भरा । उज्जल निर्मल नीर ॥
प्यास बिना पावइ नहीं । दादू सागर तीर ॥ ५८ ॥
सुख सरोवर हंस मन । मोती आप अनंत ॥
दादू चुँगि चुँगि चोंच भरि । ज्यों जन जीवइ संत ॥ ५९ ॥

सुन्न सरोवर मीन मन। नीर निरंजन देव॥
दादू यह रस बिलासिये। ऐसा अलख अभेव॥ ६० ॥
सुन्न सरोवर मन भवँर। तहाँ कमल करतार॥
दादू परिमल पीजिये। सनमुख सिरजनहार॥ ६१ ॥
सुन्न सरोवर सहज का। तहँ मर जीवा मन्न॥
दादू चुनि चुनि लेइगा। भीतर राम रतन्न॥ ६२ ॥
मंझि सरोवर बिमल जल। हंसा केलि कराहिँ॥
मुक्त हंस मुक्ता चुँगइ। तेहि हंसा डर नाहिँ॥ ६३ ॥
अखँड सरवरा थाह जल। हंसा सरवर न्हाहिँ॥
निरभइ पाया आप घर। अब उडि अंत न जाहिँ॥ ६४ ॥
दादू दरिया प्रेम का। ता में झूलइ दोइ॥
एक आतम परमातमा। एकमेक रस होइ॥ ६५ ॥
दादू हिंन दर्रियाव। मानिक मंझेई॥
टुबी डेई पान में। डिठोहंझेइ॥ ६६ ॥
परमातम सों आतमा। हंस सरोवर माहिँ॥
मिलि मिलि खेलइ पीय सों। दादू दूसर नाहिँ॥ ६७ ॥
दादू सरबर सहज का। ता में प्रेम तरंग॥
तहे मन झूलइ आतमा। अपने साईं संग ६८ ॥
दादु देखउँ निज पीय को। दूसर देखउँ नाहिँ॥
सबइ दिसा सों सोधि कर। पाया घटही माहिँ॥ ६९॥
दादु देखउँ निज पीय को। और न देखउँ कोइ॥
पूरा देखउँ पीय को। बाहर भीतर सोइ॥ ७० ॥
दादु देखउँ निज पीयं को। देखत ही दुख जाइ॥
हम तो देखा पीय को। सब में रहा समाइ॥ ७१ ॥
दादु देखउँ निज पीय को। सोई देखन जोग॥
परगट देखउँ पीय को। कहाँ बतावइ लोग॥ ७२ ॥

दादू देखु दयाल को । सकल रहा भरपूर ॥
रोम रोम में रमि रहा । तूँ जिन जानइ दूर ॥ ७३ ॥
दादू देखु दयाल को । बाहर भीतर सोइ ॥
सब दिसि देखउँ पीव को । दूसर नाहीं कोइ ॥ ७४ ॥
दादू देखु दयाल को । सनमुख साईं सार ॥
जीधर देखउँ नैन भरि । तीधर सिरजनहार ॥ ७५ ॥
दादू देखु दयाल को । रोकि रहा सब ठौर ॥
घट घट मेरा साइयाँ । तूँ जिनि जानइ और ॥ ७६ ॥
तन मन नाहीं मैं नहीं । नाहिं माया नहिं जीव ॥
दादू एकइ देखिये । दह दिसि मेरा पीव ॥ ७७ ॥
पानी माहिँ पइसि कर । देखइ दृष्टि उघार ॥
जला भँवर सब भरि रहा । ऐसा ब्रह्म बिचार ॥ ७८ ॥
सदा लीन आनंद में । सहज रूप सब ठौर ॥
दादू देखइ एक को । दूजा नाहीं और ॥ ७९ ॥
जहँ तहँ साथी संग हइ । मेरे सदा अनंद ॥
नैन बैन हिरदइ रहइ । पूरन परमानंद ॥ ८० ॥
जागत जगपति देखिये । पूरन परमानंद ॥
सोवत भी साईं मिलइ । दादू अतिआनंद ॥ ८१ ॥
दहदिसि दीपक तेज के । बिन बाती बिन तेल ॥
चहुँदिसि सूरज देखिये । दादू अद्भुत खेल ॥ ८२ ॥
सूरज कोटि प्रकास हइ । रोम रोम की लार ॥
दादू जाति जगदीस की । अंत आवइ पार ॥ ८३ ॥
ज्यों रवि एक अकास रह । ऐसे सकल भरपूर ॥
दादू तेज अनंत है । अल्ला आले नूर ॥ ८४ ॥
सूरज नहिं तहँ सूरज देखे । चाँद नहीं तहाँ चँदा ॥
तारे नहिं तहँ झिलमिलि देखा । दादू अति आनंदा ॥ ८५ ॥

बादल नाहिं तहँ बरसत देखा। सबद नहीं गरजंदा॥
बीज नहीं तहँ चमकत देखा। दादू परमानंदा॥ ८६॥
जोति चमक्कइ झिलमिले। तेज पुंज परकास॥
अमृत झरइ रस पीजिये। अमरबेलि अकास॥ ८७॥
अबिनासी अँग तेज का। अइसा तत्त अनूप॥
सो हम देखा नैन भरि। सुंदर सहज सरूप॥ ८८॥
परम तेज परगट भया। तहँ मन रहा समाइ॥
दादू खेलइ पीय सोँ। नहिँ आवइ नहिँ जाइ॥ ८६॥
निराधार निज देखिये। नैनहुँ लागा बंद॥
तहँ मन खेलइ पीय सोँ। दादू सदा अनंद॥ ६०॥
ऐसा एक अनूप फल। बीजा बाको नाहिं॥
मीठा निरमल एक रस। दादू नैनहुँ माहिँ॥ ६१॥
हीरे हीरे तेज के। निरखइ तीनो लोइ॥
कोइ एक देखइ संत जन। और न देखइ कोइ॥ ६२॥
नैन हमारे नूर मेँ। तहाँ रहइ लव लाइ॥
दादू उस दीदार को। निस दिन निरखत जाइ॥ ६३॥
नैनहुँ आगे देखिये। आतम अंतर सोइ॥
तेज पुंज सब भरि रहा। झिलिमिलि झिलिमिलि होइ॥६४॥
अनहद बाजे बाजिये। अमरापुर मेँ बास॥
जोति सरूपी जगमगइ। को निरखइ निज दास॥ ६५॥
परम तेज तहँ मन रहइ। परम नूर निज देखइ॥
परम जोति तहँ आतम खेलइ। दादू जीवन लेखइ॥ ६६॥
अरइ सुजोति सरूप है। अरइ सो तेज अनंत॥
अरइ सो झिलिमिलि नूर है। अरइ सो पुंज रहंत॥ ६७॥
दादू अलख अलाह का। कहु कैसा है नूर॥
बेहद बाको हद नहीं। सकल रहा भरपूर॥ ६८॥

वार पार नहिं नूर का। दादू तेज अनंत॥
कीमति नहिं करतार की। ऐसा है भगवंत॥ ९९॥
निरसँधि नूर अपार है। तेज पुंज सब माहिं॥
दादू जोति अनंत है। आगे पीछे नाहिं॥ १००॥
खंड खंड निज ना भया। एकसाँ एकइ नूर॥
ज्यों था त्योँहीं तेज है। जोति रही भरपूर॥ १०१॥
परम तेज परकास है। परम नूर को बास॥
परम जोति आनंद में। हंसा दादूदास॥ १०२॥
नूर सरीखा नूर है। तेज सरीखा तेज॥
जोति सरीखी जोति है। दादू खेलइ सेज॥ १०३॥
तेजपुंज की सुंदरी। तेजपुंज का कंत॥
तेजपुंज की सेज परि। दादू बनेउ बसंत॥ १०४॥
पुहुप प्रेम बरसइ सदा। हरिजन खेलहिं फाग॥
ऐसा कउतुक देखिये। दादू मोटे भाग॥ १०५॥
अम्रित धारा देखिये। पारब्रह्म बरसंत॥
तेजपुंज झिलिमिलि झरइ। साधू जन पीवंत॥ १०६॥
रस ही में रस बरसिहइ। धारा कोटि अनंत॥
तहँ मन निहचल राखिये। दादू सदा बसंत॥ १०७॥
घन बादल बिन बरसिहइ। नीझर निरमल धार॥
दादू भीजइ आतमा। साधू पीवनहार॥ १०८॥
ऐसा अचरज देखिया। बिन घन बरसइ मेह॥
तहँ चित चातक होइ रहा। दादू अधिक सनेह॥ १०९॥
महारस मीठा पीजिये। अबिगति अलख अनंत॥
दादू निरमल देखिये। सहजइ सदा झरंत॥ ११०॥
कामधेनु दुहि पीजिये। अकिल अनूपम एक॥
दादू पीवइ प्रेम सोँ। निरमल धार अनेक॥ १११॥

कामधेनु दुहि पीजिये। ता को लखइ न कोइ ॥
दादू पिवइ प्यास सौं। महारस मीठा सोइ ॥ ११२ ॥
कामधेनु दुहि पीजिये। अलख रूप आनंद ॥
दादू पीवइ हेत सौं। सुखमन लागा बंद ॥ ११३ ॥
कामधेनु दुहि पीजिये। अगम अगोचर जाइ ॥
दादू पीवइ प्रीति सौं। तेजपुंज की गाइ ॥ ११४ ॥
कामधेनु करतार है। अम्रित सरवइ सोइ ॥
दादू बछरा दूध को। पीवइ तो सुख होइ ॥ ११५ ॥
ऐसी एकइ गाय है। दूहइ बारह मास ॥
सदा हमारे संग है। दादू आतम पास ॥ ११६ ॥
तरवर साखा मूल बिन। है धरती पर नाहिँ ॥
अबिचल अमर अनंत फल। सोई दादू खाहिँ ॥ ११७ ॥
तरवर साखा मूल बिन। धर अमर न्यारा ॥
अबिनासी आनंद फल। दादू का प्यारा ॥ ११८ ॥
तरवर साखा मूल बिन। रज बरिज रहता ॥
अजरा अमर अतीत फल। सो दादू गहता ॥ ११९ ॥
तरवर साखा मूल बिन। उतपति परलय नाहिँ ॥
रहता रमता राम फल। दादू नैनहुँ माहिँ ॥ १२० ॥
प्रान तरोबर सुरति जड। ब्रह्म भोमि ता माहिँ ॥
रस पीवइ फूलइ फलइ। दादू सूखइ नाहिँ ॥ १२१ ॥
ब्रह्म सुन्न तहँ क्या रहइ। आतम के अस्थान ॥
काया अस्थल क्या बसइ। सतगुरु कहहिँ सुजान ॥ १२२ ॥
काया के अस्थल रहइ। राजा पंच प्रधान ॥
पचीस प्रकीरति तीन गुन। आपा गरब गुमान ॥ १२३ ॥
आतम के अस्थान हैँ। ज्ञान ध्यान बिसवास ॥
सहज सील संतोष सत। भाव भगति निधि पास ॥ १२४ ॥

ब्रह्म सुन्न तहँ ब्रह्म है । नीरंजन निरकार ॥
नूर तेज जहँ जोति है । दादू देखनहार ॥ १२५ ॥
मौजूद खबर माबूद खबर, अरवाह खबर वजूद ।
मुकाम चे चिज हस्त, दादनी सजूद ॥ १२६ ॥

मौजूद मुकाम हस्त ।

नफस गालिब कर काबिज़, गुस्सा मनी पेश ।
दुई दरोग़ हिर्स हुज्जत, नाम नेकी नेस्त ॥ १२७ ॥

अरवाह मुकाम हस्त ।

इश्क इबादत बंदगी, यगाना अखलास ।
मेहर मोहब्बत खैर ख़ूबी, नाम नेकी पास ॥ १२८ ॥

माबूद मुकामे हस्त ।

यके नूर खूब खूबा, ददिनी हैराँ ।
अजब-चीज़ खुर्दनी, ख़याल मस्ताँ ॥ १२९ ॥
हैवान आलिम गुमराह ग़ाफिल, औव्वल शरीयत पंद ।
हलाहल मरा नेकी बदी, दरस दानिशमंद ॥ १३० ॥
कुल फरीक़ तर्क दुनियाँ, हर रोज़ हर दम याद ।
अल्ला आला इश्क आशिक, दार नै फिरियाद ॥ १३१ ॥
आब आतश अर्श कुरसी, सूरते सुबहान ।
सिरै सिफत करदा बूदन्द, मारफत मुकाम ॥१३२॥
हकहासिल नूर ददिम, करारे मकसूद ।
दीदार दरिया अरवाह आदम, मौजूदे मौजूद ॥ १३३ ॥
चहार मंज़िल बयां गुफ्तम, दस्तकरदा बूद ।
पीरां मुरीदां खबर करदा, राहे माबूद ॥ १३४ ॥
पहली प्रान पसु नर कीजै । साच झूठ संसार ।
नीति अनीति भला बुरा । सुभ औ असुभ निरधार ॥ १३५ ॥
सब तजि देखि बिचारि करि । मेरा नाहीं कोइ ।

अन दिन राते राम सों । भाव भगति रत होइ ॥ १३६ ॥

अंबर धरती सुरुज ससि । सब के लावइ अंग ॥
जस कीरति करुना करइ । तन मन लागा अंग ॥ १३७ ॥

परम तेज तहँ मन गया । नैनहुं देखा आइ ॥
सुख सँतोष पाया घडा । जोतिहि जोति समाइ ॥ १३८ ॥

अर्थ चारि अस्थान का । गुरु सिख कह समझाइ ॥
मारग सिरजनहार का । भाग बडे सो जाइ ॥ १३९ ॥

अरवाहें सिजदा कुनद, वजूदरा चेकार ।
दादू नूर दादनी, आशिक़ां दीदार ॥ १४० ॥

आशिक़ां रा क़बज़ा करदा, दिल व जां रफतन्द ।
अल्ला आला नूर दीदम, दिलहा दादू बंद ॥ १४१ ॥

आशिक़ां मस्तान आलम, ख़ुर्दनी दीदार ।
चन्दे रह चेकार दादू, यार मा दिलदार ॥ १४२ ॥

दादू दया दयाल की । सो क्यों छानी होइ ॥
प्रेम पुलक मुलकत रहइ । सदा सोहागिनि सोइ ॥ १४३ ॥

बिगसि बिगसि दरसन करइ । पुलकि पुलकि रस पान ॥
मगन जलित माता रहइ । अरस परस मिलि प्रान ॥ १४४ ॥

देखि देखि सुमिरन करइ । देखि देखि लयलीन ॥
देखि देखि तन मन बिलइ । देखि देखि चित दीन ॥ १४५ ॥

निरखि निरखि निज नाउँ लेइ । निरखि निरखि रस पीव ॥
निरखि पीयं को तब मिलइ । निरखि निरखि सुख जीव ॥१४६॥

तन सों सुमिरन सब करइ । आतम सुमिरन एक ॥
आतम आगइ एक रस । दादू बडा बिबेक ॥ १४७ ॥

माटी के मोकाम का । सब को जानइ जाय ॥
एक भाव अरवाह का । बिरला आवइ भाय ॥ १४८ ॥

जब लग अस्थित देह का । तब लग सब व्यापइ ॥

निरभय अस्थल आतमा। आगइ रस आपइ ॥ १४६ ॥
नाहीं सुरति सरीर की। बिसरइ सब संसार ॥
आतम जानइ आप को। एक रहा निरधार ॥ १५० ॥
तन सोँ सुमिरन कीजिये। जब लग तन नीका ॥
आतम सुमिरन ऊपजइ। तब लागइ फीका ॥
(आगे आपइ आप है। तहाँ क्या जीवका) ॥ १५१ ॥
समदृष्टि देखइ बहुत कारि। आतम दृष्टी एक ॥
ब्रह्मदृष्टि परचइ भया। दादू बइठा देख ॥ १५२ ॥
येई नैना देह के। येई आतम होइ ॥
येही नैना ब्रह्म के। दादू पलटइ दोइ ॥ १५३ ॥
घट परचइ सब घट लखइ। प्रान परेचइ प्रान ॥
ब्रह्म परेचइ पाइये। दादू है हैरान ॥ १५४ ॥
दादू जल पाषान ज्योँ। सेवइ सब संसार ॥
पानी नूना ज्योँ गलइ। बिरला पूजनहार ॥ १५५ ॥
अलख नाउँ अँतरिक रहइ। सब घट हरि हरि होइ ॥
दादू पानी नून ज्योँ। नावँ कहीजे सोइ ॥ १५६ ॥
छाडइ सुरति सरीर को। तेज पुंज मेँ आइ ॥
दादू ऐसइ मिलि रहइ। ज्योँ जल जलहि समाइ ॥ १५७ ॥
सुरति रूप सरीर की। पिय के परसे होइ ॥
दादू तन मन एक रस। सुमिरन कहिये सोइ ॥ १५८ ॥
राम कहत रामहिँ रहा। आप बिसरजन होइ ॥
मन पवना पाँचो बिलइ। दादू सुमिरन सोइ ॥ १५९ ॥
आतम राम सँभारिये। तहँ दूजा नाहिँ और ॥
देही आगे अगम है। दादू सूछिम ठौर ॥ १६० ॥
परमातम मेँ आतमा। ज्योँ पानी मे नोन ॥
दादू तन मन एक रस। दूजा कहिये कोन ॥ १६१ ॥

तन मन बिलइ यों कीजिये। ज्यों पानी में लोन ॥
ब्रह्म जीव एकइ भया। दूजा कहिये कोन ॥ १६२ ॥
तन मन बिलइ यों कीजिये। ज्यों घृत लागइ घाम ॥
आतम केवल बंदगी। दादू परगट राम ॥ १६३ ॥
कोमल कवँला पइसि करि। जहाँ न देखइ कोइ ॥
मन थिर सुमिरन कीजिये। दादू दरसन होइ ॥ १६४ ॥
नख सिख सब सुमिरन करइ। ऐसा करिये जाप ॥
अंतर बिगसइ आतमा। दादू प्रगटइ आप ॥ १६५ ॥
अंतर गति हरि हरि करइ। मुख की हाजति नाहिं ॥
सहजइ धुनि लागी रहइ। दादू मन ही माहिं ॥ १६६ ॥
सहजइ सुमिरन होत है। रोम रोम रमि राम ॥
चित्त चहूँटा चित्त सों। यों लीजे हरिनाम ॥ १६७ ॥
दादू सुमिरन सहज का। दीन्हा आप अनंत ॥
अरस परस उस एक सों। खेलइ सदा बसंत ॥ १६८ ॥
सबद अनाहद हम सुना। नख सिख सकल सरीर ॥
सब घटि हरि हरि होत हैं। सहजइ हो मन थीर ॥ १६९ ॥
ओहि दिल लागा एकसों। मों को यहाँ है ताति ॥
दादू काम खुदाइ दे। वे ठाढी हैं राति ॥ १७० ॥
माला सब आकार की। साधू सुमिरइ राम ॥
करनी करते क्या किया। ऐसा तेरा नाम ॥ १७१ ॥
सब घट सुख रसना करइ। रटइ राम का नाम ॥
दादू पीवइ राम रस। अगम अगोचर ठाम ॥ १७२ ॥
मन चित अस्थिर कीजिये। नख सिख सुमिरन होइ ॥
स्रवन नेत्र मुख नासिका। पाँचो पूरे सोइ ॥ १७३ ॥
आतम आसन राम का। तहाँ बसइ भगवान ॥
दादू दोनों परसपर। हरि आतम का थान ॥ १७४ ॥

जहाँ राम तहँ संत जन। जहँ साधू तहँ राम ॥
दादू दोनों एकठे। अरस परस बिस्राम ॥ १७५ ॥
हरि साधू यों पाइये। अबिगति के आराधु ॥
साधू संगति हरि मिलइ। हरि संगति से साधु ॥ १७६ ॥
रामनाम सोँ मिलि रहइ। मन के छाडि बिकार ॥
दिलही माहेँ देखिये। दोनोँ का दीदार ॥ १७७ ॥
साधु समाना राम मेँ। राम रहा भरपूर ॥
दादू दोनोँ एक रस। क्योँ करि कीजे दूर ॥ १७८ ॥
सेवक साईं का भया। सेवक का सब कोइ ॥
सेवक साईं को मिला। साईं सरीखा होइ ॥ १७९ ॥
मिसिरी माहेँ मेलि करि। मोलि बिकाना बंस ॥
योँ दादू महँगा भया। परब्रह्म मिलि हंस ॥ १८० ॥
मीठे माहेँ राखिये। काहि न मीठा होइ ॥
दादू मीठा हाथ ले। रस पीवइ सब कोइ ॥ १८१ ॥
मीठे सोँ मीठा भया। खारे सोँ खारा ॥
दादू ऐसा जीव है। यह रंग हमारा ॥ १८२ ॥
मीठे मीठे करि लिये। मीठा माहेँ बाहि ॥
दादू मीठा होइ रहा। मीठे माहिँ समाइ ॥ १८३ ॥
राम बिना किस काम का। नहिँ कौडी का जीव ॥
साईं सरीखा होइ रहा। दादू परसे पीव ॥ १८४ ॥
हीरा कौडी ना लहइ। मूरख हाथ गवाँर ॥
पाया पारिख जौहिरी। दादू मोल अपार ॥ १८५ ॥
अंधे हीरा परखिया। कीया कौडी मोल ॥
दादू साधू जौहिरी। हीरे मोल न तोल ॥ १८६ ॥
मीरा कीया मेहर सोँ। परदे थैला परद ॥
राखि लिया दीदार मेँ। दादू भूला दरद ॥ १८७ ॥

नैन बिन देखिबा अंग बिन पेखबा।
रसन बिन बोलिबा ब्रह्म सेती॥
स्रवन बिन सुनबा चरन बिन चलिबा॥
चित बिन चितबा सहज येती॥ १८८॥
दादू देखा एक मन। सो मन सब ही माहिँ॥
तेहि मन सोँ मन मानिया। दूजा भावइ नाहिँ॥ १८६॥
जेहि घट दीपक राम का। तेहि घट तिमिर न होइ॥
उस उँजियारे जोति के। सब जग देखइ सोइ॥ १६०॥
दादू दिल अरवाह का। सो अपना ईमान॥
सोई साबित राखिये। जहँ देखइ रहिमान॥ १६१॥
अल्ला आप इमान है। दादू के दिल माहिँ॥
सोई साबित राखिये। दूजा कोई नाहिँ॥ १६२॥
प्रान पवन ज्योँ पातला। काया करइ कमाइ॥
दादू सब संसार मेँ। क्योँ हू गहा न जाइ॥ १६३॥
नूर तेज ज्योँ जोति है। प्रान पिंड योँ होइ॥
दृष्टि मुष्टि आवइ नहीँ। साहिब के बसि सोइ॥ १६४॥
काया सूछिम करि मिलइ। ऐसा कोई एक॥
दादू आतम ले मिलइ। ऐसा बहुत अनेक॥ १६५॥
आडा आतम तन धरइ। आप रहइ ता माँहिँ॥
आपइ खेलइ आप सोँ। जीवन सेतीँ नाहिँ॥ १६६॥
अनुभव तेँ आनँद भया। पाया निरभय नाउँ॥
निहचल निर्मल निर्बान पद। अगम अगोचर ठाउँ॥ १६७॥
अनुभव बानी अगम की। ले गइ संग लगाइ॥
अगह गहइ अगहइ कहइ। भेद अभेद लहाइ॥ १६८॥
जो कुछ बेद कोरान ते। अगम अगोचर बात॥
सो अनुभव साँचा कहइ। दादू अकह कहात॥ १६६॥

अब घट अनुभव ऊपजइ। किया करम का नास ॥
भय भरमा भागे सबइ। पूरन ब्रह्म प्रकास ॥ २०० ॥
अनुभव काटइ रोग को। अनहद उपजइ आइ ॥
सौझइ का जल निर्मला। पीवइ रुचि लवलाइ ॥ २०१ ॥
दादू बानी ब्रह्म की। अनुभव घट परकास ॥
राम अकेला रहि गया। सबद निरंजन पास ॥ २०२ ॥
कबहूँ समझइ आतमा। दृढ गहि राखइ मूल ॥
दादू सोझा रामरस। अम्रित काया कूल ॥ २०३ ॥
मुझ ही माहैं मैं रहूँ। मैं मेरा घरबार ॥
मुझ ही माहैं मैं बसूँ। आप कहइ करतार ॥ २०४ ॥
मैं ही मेरा अर्स मैं। मैं ही मेरा थान ॥
मैं ही मेरा ठौर मैं। आप कहइ रहिमान ॥ २०५ ॥
मैं ही मेरे आसरे। मैं मेरे आधार ॥
मेरे तकिये मैं रहूँ। कहइ को सिरजनहार ॥ २०६ ॥
मैं ही मेरी जाति मैं। मैं ही मेरा अंग ॥
मैं ही मेरा जीव मैं। आप कहइ परसंग ॥ २०७ ॥
सबइ दिसा सो सारिखा। सबइ दिसा मुख बैन ॥
सबइ दिसा स्रवनहुँ सुनउँ। सबइ दिसा कर नैन ॥
सबइ दिसा पग सीस है। सबइ दिसा मन चैन ॥
सबइ दिसा सनमुख रहइ। सबइ दिसा अँग पैनं ॥ २०८ ॥
बिन स्रवनहुँ सब कुछ सुनइ। बिन नैनहुँ सब देखई ॥
बिन रसना मुख सब कुछ बोलइ। दादू अचरज पेखइ ॥२०९॥
सब अँग सब ही ठौर सब। सौरंगी सब सार ॥
कहइ गहइ देखइ सुनइ। दादू सब दीदार ॥ २१० ॥
कहइ सब बैर गहइ सब ठौर। रहइ सब ठौर जोति परवानैं ॥
नैन सब ठौर बैन सब ठौर। पैन सब ठौर सांई भल आनैं ॥

सीस सब ठौर स्रवन सब ठौर चरन सब ठौर को यह मानै ॥
अंग सब ठौर संग सब ठौर । सबइ सब ठौर दादू ध्यानै ॥२११॥
तेज ही कहना तेज ही गहना । तेज ही रहना सारे ॥
तेज ही बैना तेज हीं नैना तेज ही पेन हमारे ॥
तेज ही मेला तेज ही खेला । तेज अकेला तेज ही तेज सँवारे ॥
तेज ही लेवइ तेज ही देवइ । तेज ही खेवइ तेज ही दादू तारे ॥२१२॥
नूर ही का धर नूर ही का घर । नूर ही का बल मेरा ॥
नूर ही मेला नूर ही खेला नूर अकेला नूर ही मंझि बसेरा ॥
नूर ही का अंग नूर ही का संग । नूर ही का रंग तेरा ॥
नूर ही राता नूर ही माता । नूर ही खाता दादू तेरा ॥ २१३ ॥
नूरी दिल अरवाह का । तहाँ बसइ माबूद ॥
तहँ बंदे की बंदगी । जहाँ रहइ मौजूद ॥ २१४ ॥
नूरी दिल अरवाह का । तहँ खालिक भरपूर ॥
आले नूर अलाह का । खिदमतगार हजूर ॥ २१५ ॥
नूरी दिल अरवाह का । तहँ देखा करतार ॥
तहँ सेवक सेवा करइ । अनँत कला रविसार ॥ २१६ ॥
नूरी दिल अरवाह का । तहाँ निरंजन बास ॥
तहँ जन तेरा एक पग । तेजपुंज परकास ॥ २१७ ॥
तेज कमलदल नूर का । तहाँ राम रहिमान ॥
तहँ कर सेवा बंदगी । जो तूँ चतुर सयान ॥ २१८ ॥
तहाँ हजूरी बंदगी । नूरी दिल में होइ ॥
तहँ दादू सिजदा करइ । जहाँ न देखइ कोइ ॥ २१९ ॥
ओही माँह दोऊ दिल । एक खाकी एक नूर ॥
खाकी दिल सूझइ नहीं । नूरी मंझि हजूर ॥ २२० ॥
हौद हजूरी दिल ही भीतर । कुसल हमारा सार ॥
आज साजि अलैह के आगे । तहाँ निमाजगुजार ॥ २२१ ॥

दादू कायम सीति करि। पंच जमाती मनही मुला इमाम ॥
आप अलेख इलाही आगे। तहँ सिजदा करइ सलाम ॥ २२२॥
सब तन तसबी कहइ करीम। ऐसा करि ले जाप ॥
रोज एक दूरि करि दूजा। कलिमा आपइ आप ॥ २२३ ॥
आठ पहर अल्लह के आगे। एक टक रहिबो ध्यान ॥
आपइ आप अरस के ऊपरि। जहाँ रहइ रहिमान ॥ २२४ ॥
आठ पहर इबावती। जीवन मरन निबाहि ॥
साहिब दरि सेवइ खडा। दादू छाडि न जाइ ॥ २२५ ॥
आठ पहर अरस में। ऊभोइ आहे ॥
दादू ऐसे तिन के। अला गल्हाहे ॥ २२६ ॥
आठ पहर अरस में। बइठ पिरी पसनि ॥
दादू ऐसे तिन के। जे दीदार लहनि ॥ २२७ ॥
आठ पहर अरस में। जिन्हीं रूह रहनि ॥
दादू ऐसे तिन के। गूझ्यों गाल्यों कनि ॥ २२८ ॥
आठ पहर अरस में। लुडंदा आहीन ॥
दादू ऐसे तिन के। आसा खबरि दीन्ह ॥ २२९ ॥
आठ पहर अरस में। बजी जेगा हीन ॥
दादू ऐसे तिन के। केते ई आहीन ॥ २३० ॥
प्रेम पिआला नूर का। आसिक भरि दिया ॥
दादू दर दीदार में। मतवाला किया ॥ २३१ ॥
इस्क सलोना आसिका। दरद हते दिया ॥
दरद मुहब्बती प्रेम रस। प्याला भरि पिया ॥ २३२ ॥
दादू दिल दीदार दे। मतवाला किया ॥
जहाँ अरस इलाही आप था। अपना करि लिया ॥ २३३ ॥
दादू प्याला नूर का। आसिक अरस पीवनि ॥
आठ पहर अल्लाह का। मुहदिठे जीवनि ॥ २३४ ॥

आसिक अमली साधु सब। अलख दरीबइ जाइ ॥
साहिब दर दीदार में। सब मिल बइठे आइ ॥ २३५ ॥
राते माते प्रेम रस। भरि भरि देहु खुदाइ ॥
मस्ताँ मालिक करि लिये। दादु रहे लवलाइ ॥ २३६ ॥
भगति निरंजन राम की। अबिचल अबिनासी ॥
सदा सजीवन आतमा। सहजइ परकासी ॥ २३७ ॥
जैसा राम अपार है। तैसा भगति अगाध ॥
इन दोनों की मित नहीं। सकल पुकारइ साधु ॥ २३८ ॥
जैसा अबिगत राम है। तैसा भगति अलेख ॥
इन दोनों की मित नहीं। सहसमुखी कह सेख ॥ २३९ ॥
जैसा निरगुन राम है। भगति निरंजन जानि ॥
इन दोनों की मित नहीं। संत कहहिं परवानि ॥ २४० ॥
जैसा पूरा राम है। पूरन भगति समान ॥
इन दोनों की मित नहीं। दादू नाहीं आन ॥ २४१ ॥
दादू जब लग राम है। तब लग सेवक होइ ॥
अखँडित सेवा एक रस। दादू सेवक सोइ ॥ २४२ ॥
दादू जैसा राम है। तैसा सेवा जानि ॥
पावइगा तब करइगा। दादू सो परवानि ॥ २४३ ॥
साईं सरीखा सुमिरन कीजइ। साईं सरीखा गावइ ॥
साईं सरीखा सेवा कीजइ। तब सेवक सुख पावइ ॥ २४४ ॥
सेवक सेवा करि डरइ। हम तें कछू न होइ ॥
तूँ है तैसी बंदगी। करि नहिं जानइ कोइ ॥ २४५ ॥
जो साहिब मानइ नहीं। तऊ न छाडइ सेव ॥
यह अवलंबन कीजिये। साहिब अलख अभेव ॥ २४६ ॥
आदि अंत आगे रहइ। एक अनूपम देव ॥
निराकार निज निर्मला। कोइ न जानइ भेव ॥ २४७ ॥

अबिनासी अपरमपरम। वार पार नहिं छेव ॥
सो तूं दादू देखि ले। उर अंतर करि सेव ॥ २४८ ॥
दादू भीतर पइसि करि। घट के जड़इ कपाट ॥
साईं की सेवा करइ। दादू अबिगति घाट ॥ २४६ ॥
घट परचइ सेवा करइ। परतछ देखइ देव ॥
अबिनासी दरसन करइ। दादू पूरी सेव ॥ २५० ॥
पूजनहारे पास हैं। देहइ माहैं देव ॥
दादू ता को छाडि करि। बाहर माडी सेव ॥ २५१ ॥
दादू रमता राम सों। खेलइ अंतर माहिं ॥
उलटि समाना आप है। सो सुख कतहूँ नाहिं ॥ २५२ ॥
परगट खेलइ पीय सों। अगम अगोचर ठाउँ ॥
एक पलक का देखना। जीवन मरन क नाउँ ॥ २५३ ॥
आतम माहैं राम है। पूजा ता की होइ ॥
सेवा बंदन आरती। साधु करइ सब कोइ ॥ २५४ ॥
परचइ सेवा आरती। परचइ भोग लगाइ ॥
दादू उस परसाद की। महिमा कही न जाइ ॥ २५५ ॥
माहिं निरंजन देव है। माहैं सेवा होइ ॥
माहिं उतारइ आरती। दादू सेवक सोइ ॥ २५६ ॥
माहैं कीजइ आरती। माहैं पूजा होइ ॥
माहैं सतगुरु सेइये। बूझइ बिरला कोइ ॥ २५७ ॥
संत उतारइ आरती। तन मन मंगलचार ॥
दादू बाबा बरनइ। तुम्ह पर सिरजनहार ॥ २५८ ॥
दादू अबिचल आरती। जुग जुग देव अनंत ॥
सदा अखंडित एक रस। सकल उतारइ संत ॥ २५६ ॥
सत्य राम परमातमा। सुबुधि भौम संतोष थान ॥
मूल मंत्र मन माला। गुरु तिलक संत संजम ॥

सील सुचा ध्यान धोवनी। काया कलस प्रेम जल॥
मनसा मंदिर निरंजन देव। आतमा पाती पुहुप प्रीति॥
चेतना चंदन नवधा नाउँ। भाव पूजा मति पात्र॥
सहज समरपन सबद घंटा। आनंद आरती दया प्रसाद॥
आनंद एक दसा तीरथ सतसंग। दान उपदेस ब्रत सुमिरन॥
षट गुन ज्ञान अजपा जाप। अनुभव आचार मरजादा राम॥
फल दरसन अभिअंतरि। सदा निरंतर सति सौच दादू ब्रत ते॥
आतमा उपदेस। अंतरगति पूजा॥ २६० ॥
पिव सौं खेलउँ प्रेमरस। तउ जिव रंचक होइ॥
दादू पावइ सेजसुख। परदा नाहीं कोइ॥ २६१ ॥
सेवक बिसरइ आप को। सेवा बिसरि न जाइ॥
दादू पूछइ राम को। सो तत कह समझाइ॥ २६२ ॥
ज्यौं रसिया रस पीवता। आपा भूलइ और॥
दादू रहि गा एक रस। पीवत पीवत ठौर॥ २६३ ॥
जहँ सेवक तहँ साहिबा। सेवक सेवा माहिँ॥
दादू साँई सब करइ। कोई जानइ नाहिँ॥ २६४ ॥
सेवक साँई बस किया। सउँपा सब परिवार॥
तब साहिब सेवा करइ। सेवक के दरबार॥ २६५ ॥
तेज पुंज को बेलसना। मिलि खेलइ एक ठावँ॥
भरि भरि पीवइ रामरस। सेवक इसका नावँ॥ २६६ ॥
अरस परस मिलि खेलिये। तब सुख आनँद होइ॥
मन मंगल चहुँ दिसि भये। दादू देखइ सोइ॥ २६७ ॥
मस्तक मेरे पाँव धरि। मंदिर माहैं आव॥
साँई सोवइ सेज पर। दादू चाँपइ पाँव॥ २६८ ॥
ये चारो पद पलँग के। साँई की सुखसेज॥
दादू इन्ह पर बसि करइ। साँई सेती हेज॥ २६९ ॥

प्रेम लहर की पालकी । आतम बइसे आइ ॥
दादू खेलइ पीव सों । यह सुख कहा न जाइ ॥ २७० ॥
देव निरंजन पूजिये । पाती पंच चढ़ाइ ॥
तन मन चंदन राखिये । सेवा सुरति लगाइ ॥ २७१ ॥
भगति भगति सब कोइ कहइ । भगति न जानइ कोइ ॥
दादु भगति भगवंत की । देह निरंतर होइ ॥ २७२ ॥
देही माहैं देव है । सब गुन तें न्यारा ॥
सकल निरंतर भरि रहा । दादू का प्यारा ॥ २७३ ॥
जीव पियारे राम को । पाती पंच चढ़ाइ ॥
तन मन मनसा सउँपि सब । दादू बिलँब न लाइ ॥ २७४ ॥
सबद सुरति लेइ सानि चित । तन मन मनसा माहिं ॥
मति बुधि पाँचो आतमा । दादू अनत न जाहिं ॥ २७५ ॥
तन मन पवना पाँच गहि । ले राखइ निज ठौर ॥
जहाँ अकेला आप है । दूजा नाहीं और ॥ २७६ ॥
यह मन सुरति समेटि करि । पाँच अनूठे आनि ॥
निकट निरंजन लागि रहु । संगि सनेही जानि ॥ २७७ ॥
मन चित मनसा आतमा । सहज सुरति ता माहिं ॥
दादू पाँचो पूरि ले । धरती अंबर नाहिं ॥ २७८ ॥
दादू भींगे प्रेम रस । मन पाँचो के साथ ॥
मगन भये रस में रहइ । सनमुख त्रिभुवननाथ ॥ २७९ ॥
सबदैं सबद समाइ ले । परआतम सोइ प्रान ॥
यह मन मन सौं बाँधि ले । चितइ चित्त सौं जान ॥ २८० ॥
सहजइ सहज समाइ ले । ज्ञानइ बाँधा ज्ञान ॥
सूत्रइ सूत्र समाइ ले । ध्यानइ बाँधा ध्यान ॥ २८१ ॥
दृष्टिइ दृष्टि समाइ ले । सुरतइ सुरति समाइ ॥
समझइ समझि समाइ ले । लइ सों लै लइ लाइ ॥ २८२ ॥

भावइ भाव समाइ ले। भगतइ भगति समान॥
प्रेमइ प्रेम समाइ ले। प्रीति प्रीति रस पान॥ २८३॥
सुरतइ सुरति समाइ रहु। अरु बैनहुँ सों बैन॥
मनहीं सों मन लाइ रहु। अरु नैनहुँ सों नैन॥ २८४॥
जहाँ राम तहँ मन गया। मन तहँ नैना आइ॥
जहँ नैना तहँ आतमा। दादू सहज समाइ॥ २८५॥
प्रान न खेलइ प्रान सों। मन ना खेलइ मन्न॥
सबद न खेलइ सबद सों। दादू राम रतन्न॥ २८६॥
चित्त न खेलइ चित्त सों। बैन न खेलइ बैन॥
नैन न खेलइ नैन सों। दादू परगट पेन॥ २८७॥
पाक न खेलइ पाक सों। सार न खेलइ सार॥
खूब न खेलइ खूब सों। दादू अंग अपार॥ २८८॥
नूर न खेलइ नूर सों। तेज न खेलइ तेज॥
जोति न खेलइ जोति सों। दादू एकइ सेज॥ २८९॥
पंच पदारथ मन रतन। पवना मानिक होइ॥
आतम हीरा सुरति सों। मनसा मोती पोइ॥ २९०॥
अजब अनूपम हार है। साईं सरीखा सोइ॥
दादू आतम राम लग। जहाँ न देखइ कोइ॥ २९१॥
पाँचो संगी संग ले। आए आकासा॥
आसन अमर अलेख का। निरगुन निज बासा॥ २९२॥
प्रान पवन मन मगन होइ। संगी सदा निवासा॥
परचा परम दयाल सों। सहजइ सुख दासा॥ २९३॥
प्रान पवन मन मन बसइ। त्रिकुटी के संधि॥
पाँचो इंद्री पीय सों। ले चरनों बंधि॥ २९४॥
प्रान हमारा पीव सों। यों लागा सहिये॥
पुहुप बास घृत दूध में। अब कासों कहिये॥ २९५॥

पाहन लोह बिच बास दे । ऐसे मिलि रहिये ॥
दादू दीनदयाल सों । संगहि सुख लहिये ॥ २९६ ॥
ऐसा बड़ा अगाध है । सूछम ऐसा अंग ॥
पुहुप बास तें पातला । सदा हमारे संग ॥ २९७ ॥
जब दिल मिला दयाल सों । तब अंतर कछु नाहिं ॥
ज्यों पाला पानी मिला । त्यों हरिजन हरि माहिं ॥ २९८ ॥
जब दिल मिला दयाल सों । तब सब परदा दूरि ॥
ऐसे मिलि एकइ भया । दीपक पावक पूरि ॥ २९९ ॥
जब दिल मिला दयाल सों । अंतर नाहीं रेख ॥
नानाविध बहु भूखना । कनक कसउटी एक ॥ ३०० ॥
जब दिल मिला दयाल सों । पलक न परदा कोइ ॥
डार मूल फल बीज में । सब मिलि एकइ होइ ॥ ३०१ ॥
फल पाका बेली तजी । छिटकाया मुख माहिं ॥
साईं अपना करि लिया । सो फिरि ऊगइ नाहिं ॥ ३०२ ॥
कया कटोरा दूध मन । प्रेम प्रीति सों पाइ ॥
हरि साहिब बिधि अँचवई । बेगा बार न लाइ ॥ ३०३ ॥
राम जपइ रुचि साधु को । साधु जपइ रुचि राम ॥
दादू दूनों एक टग । यह आरँभ यह काम ॥ ३०४ ॥
ठगा ठगी जीवन मरन । ब्रह्म बराबर होइ ॥
परगट खेलइ पीव सों । दादू बिरला कोइ ॥ ३०५ ॥
दादू निबराना रहइ । ब्रह्म सरीखा होइ ॥
लेइ समाधि रस पीजिये । दादू जब लगि दोइ ॥ ३०६ ॥
बे खुद खबर हुसियार बासिद । खुदखबर पैमाल ॥
बे कीमते मस्तान गलताँ । नूर प्याले ख्याल ॥ ३०७ ॥
दादू माता प्रेम का । रस में रहा समाइ ॥
अंत न आवइ जब लगइ । तब लगि पीवत जाइ ॥ ३०८ ॥

पीया तेता सुख भया। बाकी बहु बैराग ॥
ऐसे जन थाकइ नहीं। दादू उनमन लाग ॥ ३०६ ॥
निकट निरंजन लागि रहु। जब लग अलख अभेव ॥
दादू पीवइ राम रस। निहकामी निज सेव ॥ ३१० ॥
राम रटन छाडइ नहीं। हरि लेइ लागा जाइ ॥
बीचे ही अटकइ नहीं। कला कोटि दिखलाइ ॥ ३११ ॥
दादू हरि रस पीयता। कबहूँ अरुचि न होइ ॥
पीवत प्यासा नित नया। पीवनहारा सोइ ॥ ३१२ ॥
जैसे स्रवना दोइ हैं। ऐसे होहिं अपार ॥
रामकथा रस पीजिये। दादू बारंबार ॥ ३१३ ॥
जैसे नैना दोइ हैं। ऐसे होहिं अनंत ॥
दादू चंद चकोर ज्यौं। रस पीवइ भगवंत ॥ ३१४ ॥
ज्यों रसना मुख एक है। ऐसे होहिं अनेक ॥
तौ रस पीवइ सेस ज्यों। यों मुख मीठा एक ॥ ३१५ ॥
ज्यों घट आतम एक है। ऐसे होहिं असंख ॥
भरि भरि पीवइ रामरस। दादू एकइ अंक ॥ ३१६ ॥
ज्यों ज्यों पीवइ रामरस। त्यों त्यों बढइ पिआस ॥
ऐसा कोई एक है। बिरला दादूदास ॥ ३१७ ॥
राता माता राम का। मतवाला मैमंत ॥
दादू पीवत क्यों रहइ। जे गुन जाहिं अनंत ॥ ३१८ ॥
दादू निरमल जोति जल। बरखा बारह मास ॥
तेहि रस राता प्रानियाँ। माता प्रेम पियास ॥ ३१९ ॥
राम राम रस पीजिये। येती रसना होइ ॥
दादू प्यासा प्रेम का। यों बिन त्रिपिति न होइ ॥ ३२० ॥
तन गृह छाडइ लाज पति। जब रस माता होइ ॥
जब लगि दादू सावधाँ। कधीं न छाडइ कोइ ॥ ३२१ ॥

अंगन एक कलाल के । मतवाला रस माहिं ॥
दादू देखा नैन भरि । ताकइ दुबिधा नाहिं ॥ ३२२ ॥
पीवत चेतनि जब लगे । तब लगि लेवइ आइ ॥
माता दादू प्रेम रस । तब काहे को जाइ ॥ ३२३ ॥
दादू अंतर आतमा । पीवइ हरि जल नीर ॥
सउजा सकजा लेइ भरइ । निरमल होइ सरीर ॥ ३२४ ॥
दादू मीठा रामरस । एक घोंट करि जाउँ ॥
पुनि ना पीछे को रहइ । हिरदे माहिं समाउँ ॥ ३२५ ॥
चिडिया चोंच भरि ले गई । नीर निघटि नहिं जाइ ॥
ऐसा बासन ना किया । दरिया माहिं समाइ ॥ ३२६ ॥
दादू अमली राम का । रस बिन रहा न जाइ ॥
पलक एक पीवइ नहीं । तलफि तलफि मरि जाइ ॥३२७॥
दादू राता राम का । पीवइ प्रेम अघाइ ॥
मतवाला दीदार का । माँगइ मुकुति बलाइ ॥ ३२८ ॥
उज्जल भवँरा हरि कवँल । रस रुचि बारहमास ॥
पावइ निरमल बासना । सो दादू निजदास ॥ ३२९ ॥
नैनहुँ सों रस पीजिये । दादू सुरति सहेत ॥
तन मन मंगल होत है । हरि सों लागा हेत ॥ ३३० ॥
पिवइ पिलावइ रामरस । माता है हुसियार ॥
दादू रस पीवइ घना । औरों का उपकार ॥ ३३१ ॥
नाना बिध पिया रामरस । केती भाँति अनेक ॥
दादू बहुत अनेक सों । आतम अबिगत एक ॥ ३३२ ॥
परचइ कापइ प्रेमरस । जो कोई पीवइ ॥
मतवाला माता रहइ । यों दादू जीवइ ॥ ३३३ ॥
परचइ कापइ प्रेमरस । पीवइ हित चित लाइ ॥
मनसा बाचा करमना । दादू काल न खाइ ॥ ३३४ ॥

परचइ पीवइ रामरस । जुग जुग अस्थिर होइ ॥
दादू अबिचल आतमा । काल न लागइ कोइ ॥ ३३५ ॥
परचइ पीवइ रामरस । सो अबिनासी अंग ॥
काल मीँच लागइ नहीँ । दादू साईँ संग ॥ ३३६ ॥
परचइ पीवइ रामरस । सुख मेँ रहइ समाइ ॥
मनसा बाचा करमना । दादू काल न खाइ ॥ ३३७ ॥
परचइ पीवइ रामरस । राता सिरजनहार ॥
दादू कछु ब्यापइ नहीँ । ते छूटे संसार ॥ ३३८ ॥
अम्रित भोजन रामरसैं । काहे न बेलसइ खाइ ॥
काल बिचारा क्या करइ । राम हि राम समाइ ॥ ३३६ ॥
जीव अजाबिध काल है । छेली जाया सोइ ॥
जब कुछ बस नहिँ काल का । तब मीतउ का होइ ॥३४०॥
मन ले राखइ पंख है । उनमन चढइ अकास ॥
पंग रहि पूरे साच के । रोपि रहा हरि पास ॥ ३४१ ॥
तन मन बिरिछ बबूर का । काटे लागे सूल ॥
दादू माखन होइ गया । काहू का अस्थूल ॥ ३४२ ॥
दादू संसा सबद है । सुनहा संसा मारि ॥
मन मेडक सोँ मारिये । संका सकल निवारि ॥ ३४३ ॥
दादू गाँठी ग्यान है । भंजन है सब लोक ॥
राम दूध सब भरि रहा । ऐसा अम्रित पोख ॥ ३४४ ॥
दादू झूठा जीव है । गठिया गोबिँद बैन ॥
मनसा मूँगी पंख सोँ । सुरज रूरीखे नैन ॥ ३४५ ॥
साईँ दीया धन घना । तिसका वार न पार ॥
दादू पाया रामधनैं । भाव भगति दीदार ॥ ३४६ ॥

इति परचा को अंग संपूर्ण ॥ ४ ॥

——:o:——

अथ जरना को अंग ।

—— :o: ——

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
साधू राखइ रामधन । गरुवा बचन बिचार ॥ २ ॥
गहि लादा दूक्यों रहइ । मरकट हाथि गँवार ॥ ३ ॥
जिनि खोवइ तूँ रामधन । हृदइ राखि जिनि जाइ ॥
रतन जतन करि राखिये । चिंतामनि चित लाइ ॥ ४ ॥
मनहीं माहैं समझि करि । मनहिं माहिं समाइ ॥
मनहीं माहैं राखिये । बाहर कहिं न जनाइ ॥ ५ ॥
दादू समझि समाइ रहु । बाहर कहिं न जनाइ ॥
दादू अदभुत देखिया । नहँ को आवइ जाइ ॥ ६ ॥
कहि कहि का दिखलाइये । साईं सब जाने ॥
दादू परगट का कहइ । कछु समझ सयाने ॥ ७ ॥
मनहीं माहैं ऊपजइ । मनहिं माहिं समाइ ॥
मनहिं माहैं राखिये । बाहर कहिं न जनाइ ॥ ८ ॥
लेइ बिचार लागा रहइ । दादू जरता जाइ ॥
कबहूँ पेट न अफरई । भावइ तेता खाइ ॥ ९ ॥
सोई सेवक सब जरइ । जेता रस पीया ॥
दादू गूज गँभीर का । परकास न कीया ॥१०॥
सोई सेवक सब जरइ । जेती उपजइ आइ ॥
कहि न जनावइ और को । दादू माहिं समाइ ॥११॥
सोई सेवक सब जरइ । जे अलख लखावा ॥
दादू राखइ रामधन । जेता कुछ पावा ॥१२॥

सोई सेवक सब जरइ। प्रेम रस खेला॥
दादू सो सुख किस कहइ। जहँ आप अकेला॥१३॥
सोई सेवक सब जरइ। जेता घट परकास॥
दादू सेवक सब लखइ। कहि न जनावइ दास॥१४॥
अजर जरइ रसना झरइ। घट माहिँ समावइ॥
दादू सेवक सो भला। जो कहि न जनावइ॥१५॥
अजर जरइ रसना झरइ। घट अपना भरि लेइ॥
दादू सेवक सो भला। जारइ जान न देइ॥१६॥
अजर जरइ रसना झरइ। जेता सब पीवइ॥
दादू सेवक सो भला। राखइ रस जीवइ॥१७॥
अजर जरइ रसना झरइ। पिवत थाकइ नाहिँ।
दादू सेवक सो भला। भरि राखइ घट माहिँ॥१८॥
जरना जोगी जुग जिवइ। झरना मरि मरि जाइ॥
दादू जोगी गुरुमुखी। सहजै रहइ समाइ॥१९॥
जरनाजोगी जुग रहइ। झरना परलइ होइ॥
दादू जोगी गुरुमुखी। सहज समाना सोइ॥२०॥
जरना जोगी थिर रहइ। झरना घट फूटइ॥
दादू जोगी गुरुमुखी। कालहु ते छूटइ॥२१॥
जरना जोगी जगपती। अबिनासी अवधूत।
दादू जोगी गुरुमुखी। नीरंजन का पूत॥ २२॥
जरइ सो नाथ निरंजन बाबा। जरइ सो अलख अभेव।
जरइ सो जोगी सब का जीवनि। जरइ सो जग मेँ देव॥२३॥
जरइ सो आप उपजावनहारा। जरइ सो जगपति साईँ।
जरइ सो अलख अनूप है। जरइ सो मरना नाहीँ॥ २४॥
जरइ सो अविचल राम है। जरइ सो अमर अलेख।
जरइ सो अविगति आप है। जरइ सो जग मेँ एक॥ २५॥

जरइ सो अबिगति आप है । जरइ सो अपरंपार ।
जरइ सो अगम अगाध है । जरइ सो सिरजनहार ॥ २६ ॥
जरइ सो निज निरकार है । जरइ सो निज निरधार ।
जरइ सो निज निरगुनमयी । जरइ सो निज तत सार ॥२७॥
जरइ सो पूरनब्रह्म है । जरइ सो पूरनहार ।
जरइ सो पूरन परमगुरु । जरइ सो प्रान हमार ॥ २८ ॥
जरइ सो जोति सरूप है । जरइ सो तेज अनंत ।
जरइ सो झिलिमिलि नूर है । जरइ सो पुंज रहंत ॥ २९ ॥
जरइ सो परमप्रकास है । जरइ सो परमउजास ।
जरइ सो परमउदोत है । जरइ सो परमबिलास ॥ ३० ॥
जरइ सो परमप्रकार है । जरइ सो परमनिवास ।
जरइ सो परमप्रभास है । जरइ सो परमनिवास ॥ ३१ ॥
एक बोल भूले हरी । कोइ न जाने प्रान ॥
अवगुन मन आनइ नहीं । सब जानइ हरि जान ॥ ३२ ॥
तुम्ह तिन्ह के अवगुन तजे । कारन कवन अगाध ॥
मेरी जरनी देखि करि । मति को सीखइ साध ॥ ३३ ॥
पवना पानी सब पिया । धरती अरु आकास ॥
चंद सूर पावक मिले । पाँचो एक गरास ॥ ३४ ॥
चौदह तीनो लोक सब । ठूँसे साँसइँ साँस ॥
दादू साधू सब जरइ । सतगुरु के बिस्वास ॥ ३५ ॥

इति जरना को अंग संपूरणम् ॥ ९ ॥

———o———

अथ हैरान को अंग।

——:o:——

दादू नमो निरंजनं। नस्कार गुरुदेवतः॥
बंदनं सर्व साधवा। परनामं पारंगतः॥ १॥

रतन एक बहु पारिखी। सब मिलि करइ बिचार॥
गूँगे बहिरे बावरे। दादू वार न पार॥ २॥

केते पारिख जौहरी। पंडित ज्ञाता ध्यान॥
जाना जाइ न जानिये। का कहि कथिये ज्ञान॥ ३॥

केते पारिखी पचि मुये। कीमति कही न जाइ॥
दादू सब हैरान है। गूँगे का गुड़ खाइ॥ ४॥

सबही ज्ञानी पंडिता। सुर नर रहे उरझाइ॥
दादू गति गोविंद की। क्योंहीं लखी न जाइ॥ ५॥

जैसा तैसा नावँ तुम्हारा। ज्यों है त्यों कहि साईं॥
आपइ जानइ आप को। तहँ मेरा गम नाहीं॥ ६॥

केते पारिखी अंत न पावहिं। अगम अगोचर माहीं॥
दादू कीमति कोइ न जानइ। खीर नीर की नाईं॥ ७॥

जीव ब्रह्म सेवा करइ। ब्रह्म बराबरि होइ॥
दादू जानइ ब्रह्म को। ब्रह्म सरीखा सोइ॥ ८॥

वार पार कोइ ना लहइ। कीमति लेखा नाहिँ॥
दादू एकइ नूर है। तेज पुंज सब माहिँ॥ ९॥

हस्त पावँ नहिँ सीस मुख। स्रवन नेत्र कहु कैसा॥
दादू सब देखइ सुनइ। कहइ गहइ है ऐसा॥ १०॥

पाया पाया सब कहइ। केतिक देहुँ दिखाइ॥
कीमत किन्हीं ना कही। दादू रहु लव लाइ॥ ११॥

अपना भंजन भरि लिया । वहाँ उताही जानि ॥
अपनी अपनी सब कहइ । दादू बिरद बखानि ॥ १२ ॥

पार न देवइ आपना । गोप गूँज मन माहिँ ॥
दादू कोई ना लहइ । केते आवहिँ जाहिँ ॥ १३ ॥

गूँग का गुड़ का कहूँ । मन जानत है खाइ ॥
रामरसायन पीवता । सो सुख कहा न जाइ ॥ १४ ॥

एक जीभ केता कहूँ । पूरनब्रह्म अगाध ॥
बे केते परमित नहीँ । थकित भये सब साध ॥ १५ ॥

दादू मेरा एक मुख । कीरति अनँत अपार
गुन केते परमित नहीँ । रहे बिचारि बिचारि ॥ १६ ॥

सकल सिरोमनि नावँ है । तूँ है तैसा नाहिँ ॥
दादू कोई ना लहइ । केते आवहिँ जाहिँ ॥ १७ ॥

दादू केते कहि गये । अंत न आवइ ओर ॥
हम हूँ कहते जात हैँ । केते कहिसी होर ॥१८॥

मैँ का जानउँ का कहूँ । उस बेला की बात ॥
का जानो कैसे रहइ । मोपै लखा न जात ॥१९॥

दादू केते चलिगये । थाके बहुत सुजान ॥
बात नावँ ना नीकसा । दादू सब हैरान ॥ २० ॥

ना कहिँ देखा ना सुना । ना कोइ राखनहार ॥
ना कोऊ तांथी फिरा । ना उर वार न पार ॥ २१ ॥

नहीँ म्रितक नहिँ जीवता । नहिँ आवइ नहिँ जाइ ॥
नहिँ सूता नहिँ जागता । नहिँ भूखा नहिँ खाइ ॥ २२ ॥

तहाँ चूप ना बोलना । मैँ तैँ नाहीँ कोइ ॥
दादू आपा पर नहीँ । तहाँ एक ना दोइ ॥ २३ ॥

एक कहूँ तो दो रहइ । दोय कहूँ तो एक ॥
योँ दादू हैरान है । ज्योँ है त्योँहीँ देख ॥ २४ ॥

देखि दिवाना होइ गये । दादू खरे सयान ॥
वार पार को ना लहइ । दादू है हैरान ॥ २५ ॥
करनहार जो कुछ किया । सोई हूँ करि जानि ॥
जो तूँ चतुर सयान है । तौ याही परवानि ॥ २६ ॥
जिन्ह मोहन बाजी रची । सो तुम्ह पूछो जाइ ॥
अनेक एक ते क्यों किये । साहिब कहि समुझाइ ॥ २७ ॥
घट परचइ सब घट लखइ । प्रान परेचइ प्रान ॥
ब्रह्म परेचइ पाइये । दादू है हैरान ॥ २८ ॥
समदृष्टी देखइ बहुत । आतमदृष्टी एक ॥
ब्रह्मदृष्टि परचइ भया । दादू बइठा देख ॥ २९ ॥
एही नैना देह के । एही आतम होइ ॥
एही नैना ब्रह्म के । दादू पलटे दोइ ॥ ३० ॥

इति हैरान को अंग संपूर्णम् ॥ ६ ॥

——:o:——

अथ लय को अंग।

---:o:---

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः॥
बंदनं सर्ब साधवा। परनामं पारंगतः॥ १ ॥
लय लागी तब जानिये। कबहूँ छुटि न जाइ॥
जीवत तें लागी रहइ। मूआ मंझि समाइ॥ २ ॥
जे नर प्रानी लय गता। सोई गति होइ जाइ॥
जो नर प्रानी लेइ रता। सहजइ रहइ समाइ॥ ३ ॥
सब तजि गुन आकार के। निहचल मन लव लाइ॥
आतम चेतन प्रेम रस। दादू रहइ समाइ॥ ४ ॥
तन मन पवना पाँच गहि। नीरंजन लव लाइ॥
जहँ आतम तहँ आतमा। दादू सहज समाइ॥ ५ ॥
अरथ अनूपम आप है। और अनर्थ है भाइ॥
दादू ऐसी जानि करि। तासों तूँ लव लाइ॥ ६ ॥
ज्ञान भगति मन मूल गहि। सहज प्रेम लव लाइ॥
दादू सब आरंभ तजि। जिन काहू सँग जाइ॥ ७ ॥
जोग समाधि सुख सुरति सों। सहजइ सहजइ आव॥
मुकता द्वारा महल का। इहइ भगति का भाव॥ ८ ॥
सहज सुन्न मन राखिये। इन दोनों के माहिं॥
लेइ समाधिरस पीजिये। तहाँ काल भय नाहिं॥ ९ ॥
बिन पायन का पंथ है। क्योंकर पहुँचइ प्रान॥
बिकट घाट अवघट खडे। माहिं सिखर असमान॥
मन ताजी चेतन चढइ। लव की करइ लगाम॥
सबद गुरू का ताजना। पहुँचइ साधु सुजान॥ १० ॥

केहि मारग होइ आइया। केहि मारग होइ जाइ ॥
दादू कोई ना लहइ। केते करहिं उपाइ ॥ ११ ॥
सूनहिं मारग आइया। सूनहिं मारग जाइ ॥
चेतनि पैंडा सुरति का। दादू रहु लव लाइ ॥ १२ ॥
पारब्रह्म पैंडा दिया। सहज सुरत लइ सार ॥
मन का मारग माहिं घर। संगी सिरजनहार ॥ १३ ॥
राम कहइ जिस ज्ञान सौं। अमृत रस पीवइ ॥
दादू दूजा छाडि सब। लव लागी जीवइ ॥ १४ ॥
रामरसायन पीवता। जीव ब्रह्म होइ जाइ ॥
दादू आतमराम सौं। सदा रहइ लव लाइ ॥ १५ ॥
सुरति समाइ सनमुख रहइ। जुग जुग जन पूरा ॥
दादू प्यासा प्रेम का। रस पीवइ सूरा ॥ १६ ॥
जहाँ जगतगुरु रहत है। तहाँ जो सुरति समाइ ॥
तौ इन नैनहुँ उलटि करि। कौतुक देखइ आइ ॥ १७ ॥
आस पास ताके परी। भौंरे उलटो मंझ ॥
जिन बैठउँ तिन मा परी। नीहारी दो हंझ ॥ १८ ॥
उलटि अपूठा आप मैं। अंतर सोधि सुजान ॥
सो ढिग तेरे बावरे। तजि बाहर की बान ॥ १९ ॥
सुरति अपूठी फेरि करि। आतम माहिं आन ॥
लागि रहइ गुरुदेव सौं। दादू सोई सयान ॥ २० ॥
जहँ आतम तहँ राम है। सकल रहा भरपूर ॥
अंतर गति लव लाइ रहु। दादू सेवक सूर ॥ २१ ॥
अंतर गति लव लाइ रहु। सदा सुरति सौं गाइ ॥
यह मन नाचइ मगन होइ। गावइ ताल बजाइ ॥ २२ ॥
दादू गावइ सुरति सौं। बानी बाजइ ताल ॥
यह मन नाचइ प्रेम सौं। आगे दीनदयाल ॥ २३ ॥

सब बातन की एक है । दुनियाँ ते दिल दूर ॥
साईं सेतीं संग करि । सहज सुरति ले पूर ॥ २४ ॥
एक सुरत सों सब रहइ । पाँचो उनमन लागि ॥
अनुभव का उपदेस यह । परम जोग बैराग ॥ २५ ॥
सहजइ सुरति समाइ ले । पारब्रह्म के अंग ॥
दरस परस मिलि एक होइ । सनमुख रहिबा संग ॥ २६ ॥
सुरति सदा सनमुख रहइ । जहाँ तहाँ लवलीन ॥
सहज रूप सुमिरन करइ । निकरम दादू दीन ॥ २७ ॥
सुरति सदा सेवति रहइ । तिनके मोटे भाग ॥
दादू पीवइ रामरस । रहइ निरंजन लाग ॥ २८ ॥
दादू सेवा सुरति सों । प्रेम प्रीति सों लाइ ॥
जहँ अबिनासी देव है । सुरति बिना को जाइ ॥ २९ ॥
जैवइ बरत गगन तें टूटइ । कहाँ धरति कहँ ठाम ॥
लागी सुरति अंग तें छूटइ । साकत जीवइ राम ॥ ३० ॥
सहज जोग सुख में रहइ । दादू निरगुन जानि ॥
गंगा उलटी फेरि करि । जमुना माहैं आनि ॥ ३१ ॥
परआतमा सो आतमा । ज्यों जल उदधि समान ॥
तन मन पानी नोन ज्यों । पावइ पद निरबान ॥ ३२ ॥
मनहीं सों मन सेइये । ज्यों जल जलहि समाइ ॥
आतम चेतन प्रेमरस । दादू रह लव लाइ ॥ ३३ ॥
छाडइ सुरति सरीर को । तेज पुंज में आइ ॥
दादू ऐसे मिलि रहइ । ज्यों जल जलहि समाइ ॥ ३४ ॥
यों मन तजइ सरीर को । ज्यों जागत सोइ जाइ ॥
दादू बिसरइ देखता । सहज सदा लव लाइ ॥ ३५ ॥
जेहि आसन में प्रान था । तेहि आसन लव लाइ ॥
जो कुछ था सोई भया । कछू न ब्यापै आइ ॥ ३६ ॥

तन मन आपन हाथ करि। ताही सौं लव लाइ ॥
दादू निरगुन राम सों। ज्यौं जल जलहि समाइ ॥ ३७ ॥
अपना मन लागा रहइ। अंत मिलैगा सोइ ॥
दादू जाके मन बसे। ताको दरसन होइ ॥ ३८ ॥
दादू निबहइ त्यौं चलइ। धरि धीरज मन माहिँ ॥
परसइगा पिय एक दिन। दादू थाकइ नाहिँ ॥ ३९ ॥
जब मन मिरतक होइ रहइ। इंद्रीबल भागा ॥
काया के सब गुन तजइ। नीरंजन लागा ॥ ४० ॥
आदि अंत मध एक रस। टूटइ नहिँ धागा ॥
दादू एकइ रहि गया। तब ज्ञानी जागा ॥ ४१ ॥
जब लग सेवक तन धरइ। तब लग दूसर आहि ॥
एक एक होइ मिलि रहइ। तौ रस पीवत जाहि ॥ ४२ ॥
ये दोनों ऐसी कहहिँ। कीजै कौन उपाइ ॥
ना मैं एक न दूसरा। दादू रह लव लाइ ॥ ४३ ॥

इति लय को अंग संपूर्णम् ॥ ७ ॥

——:o:——

अथ निहकरमी पतिब्रता को अंग ।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
एक तुम्हारइ आसरा । दादू यह बिस्वास ॥
राम भरोसा तो रहइ । नहिं करनी की आस ॥ २ ॥
रहनी राजस ऊपजइ । करनी आपा होइ ॥
सब तें दादू निर्मला । सुमिरन लागा सोइ ॥ ३ ॥
मन अपना लवलीन करि । करनी सब जंजाल ॥
दादू सहजैं निर्मला । आपा मेटि सँभाल ॥ ४ ॥
सिद्धि हमारे साइँया । करामाति करतार ॥
रिद्धि हमारे राम हैं । अगमा अलख अपार ॥ ५ ॥
तुम्हें अम्हंचा हे गुरू । तुम्हें अम्हंचा ज्ञान ॥
तुम्हें अम्हंचा देव सब । तुम्हें अम्हंचा ध्यान ॥ ६ ॥
तुम्हें अम्हंचा पूजा । तुम्हें अम्हंची पाती ॥
तुम्हे अम्हंचा तीरथ । तुम्हें अम्हंची जाती ॥ ७ ॥
तुम्हें अम्हंचा गाथा । तुम्हे अम्हंचा भेद ॥
तुम्हें अम्हंचा पुरान । तुम्हें अम्हंचा बेद ॥ ८ ॥
तुम्हें अम्हंची जुगुति । तुम्हें अम्हंचा जोग ॥
तुम्हे अम्हंचा बैराग । तुम्हें अम्हंचा भोग ॥ ९ ॥
तुम्हें अम्हंची जीवनी । तुम्हें अम्हंचा जप्प ॥
तुम्हे अम्हंचा साधना । तुम्हें अम्हंचा तप्प ॥ १० ॥
तुम्हें अम्हंचा सील । तुम्हें अम्हंचा संतोष ॥
तुम्हें अम्हंची मुकुति । तुम्हे अम्हंचा मोष ॥ ११ ॥

तुम्हें अम्हंचा सिव । तुम्हे अम्हंची सकति ॥
तुम्हें अम्हंचा आगम । तुम्हें अम्हंची उकति ॥ १२ ॥
तूँ सति तूँ अबिगति । तूँ अपरंपार ॥
तूँ निराकार । तुम्हंचा नाम ॥
दादू चा बिश्राम । देहु देहु अब बिलँब न राम ॥ १३ ॥
हमरे कुल के सब है । सगा न सिरजनहार ॥
जाति हमारी जगतगुरु । परमेस्वर परिवार ॥ १४ ॥
एक संग संसार में । जेहि हम सिरजे सोइ ॥
मनसा बाचा करमना । और न दूजा कोइ ॥ १५ ॥
साईं सनमुख जीवना । मरना सनमुख होइ ॥
दादू जीवन मरन का । सोच करइ जिनि कोइ ॥ १६ ॥
राम कहूँ ते जोडिबा । राम कहूँ तें साखी ॥
राम कहूँ तें गाइबा । राम कहूँ तें राखी ॥ १७ ॥
साहिब मिला न सब मिले । भेंटइ भेंटा होइ ॥
साहिब रहा तो सब रहे । नहीं तो नाहीं कोइ ॥ १८ ॥
सब सुख मेरे साइँया । मंगल अति आनंद ॥
दादू साजन सब मिले । भेंटे परमानंद ॥ १९ ॥
दादू रीझइ राम पर । अनत न रीझइ मन्न ॥
मीठा भावइ एक रस । दादू सोई जन्न ॥ २० ॥
मेरे हिरदय हरि बसइ । दूजा नाहीं और ॥
कहउँ कहाँ धौं राखिये । नहीं आन को ठौर ॥ २१ ॥
नारायन नैना बसइ । मनहीं मोहनराइ ॥
हिरदय माहें हर बसइ । आतम एक समाइ ॥ २२ ॥
तन मन मेरा पीव सों । एक सेज सुख सोइ
गहिरा लोक न जानई । पचि पचि आया खोइ ॥ २३ ॥
एक हमारे उर बसइ । दूजा मेला दूरि
दूजा देखत जाइगा । एक रहा भरपूरि ॥ २४ ॥

निहचल का निहचल रहइ । चंचल का चलि जाइ ॥
दादू चंचल छाडि सब । निहचल सों लव लाइ ॥ २५ ॥
साहिब रहता सब रहा । साहिब जाता जाइ ॥
दादू साहिब राखिये । दूजा सँग न समाइ ॥ २६ ॥
मन चित मनसा पलक में । साईं दूरि न होइ ॥
निहकामी निरखइ सदा । दादू जीवन सोइ ॥ २७ ॥
जहाँ नावँ तहँ चाहिये । सदा राम का राज ॥
निर्बिकार तन मन भया । दादू सीझे काज ॥ २८ ॥
जिसकी खूबी खूब सब । सोई खूब सँभारि ॥
दादू सुंदर खूब सों । नख सिख साज सँवारि ॥ २९ ॥
पंच अभूषन पीव करि । सोलह सबही ठावँ ॥
सुंदर यह सिंगार करि । लेइ लेइ पिय का नावँ ॥ ३० ॥
यह ब्रत सुंदरि ले रहइ । सदा सोहागिन होइ ॥
दादू भावइ पीय को । तासम और न कोइ ॥ ३१ ॥
साहिब जिव का भावना । कोइ करइ कलि माहिं ॥
मनसा बाचा करमना । दादू घट घट नाहिं ॥ ३२ ॥
आज्ञा महँ बैठइ उठइ । आज्ञा आवइ जाइ ॥
आज्ञा महँ लेवइ देवइ । आज्ञा पहिरइ खाइ ॥ ३३ ॥
आज्ञा महँ बाहरि भितरि । आज्ञा रहइ समाइ ॥
आज्ञा महँ मन राखई । दादू रहइ लव लाइ ॥ ३४ ॥
पतिब्रता ग्रिह आपने । करइ खसम की सेव ॥
ज्यों राखइ त्यों हीं रहइ । आज्ञाकारी टेव ॥ ३५ ॥
नीँच ऊँच कुल सुंदरी । सेवा सारी होइ ॥
सोई सोहागिन कीजिये । रूप न पीजइ धोइ ॥ ३६ ॥
तन मन सौंपा राम को । तासन का व्यभिचार ॥
सहज सील संतोष मन । प्रेम भगति लेइ सार ॥ ३७ ॥

परपुरषा सब पहरई । सुंदर देखइ आगि ॥
अपना पीय पिछानि करि । दादू रहिये लागि ॥ ३८ ॥

आन पुरुषहूँ बहु बड़ी । परम पुरुष भरतार ॥
हउँ अबला समझउँ नहीं । तूँ जानइ करतार ॥ ३६ ॥

जिसका तिसको दीजिये । साईं सनमुख आइ ॥
दादू नख सिख सौंपि सब । जिनि यह बंझा जाइ ॥ ४० ॥

दिल साईं सो राखई । दादू सोई सयान ॥
जो दिल बाटइ आपनी । सो सब मूढ अजान ॥ ४१ ॥

साईं सो दिल तोरि करि । साईं सों जोरइ ॥
साईं सेतीं जोरि करि । काहे को तोरइ ॥ ४२ ॥

साहिब देवइ राखना । सेवक दिल चोर ॥
दादू सब धन साहु का । भूला मन थोर ॥ ४३ ॥

मनसा बाचा करमना । अंतर आवइ एक ॥
ताको परतछ राम जी । बातैं और अनेक ॥ ४४ ॥

मनसा बाचा करमना । हिरदे हरि का भाव ॥
अलख पुरुष आगे खड़ा । ताके त्रिभुवनराव ॥ ४५ ॥

मनसा बाचा करमना । हरि ही सौं हित होइ ॥
साहिब सनमुख संग है । आदि निरंजन सोइ ॥ ४६ ॥

मनसा बाचा करमना । आतुर कारन राम ॥
समरथ साईं सब करइ । परगट पूरे काम ॥ ४७ ॥

नारी पुरुषा देखि करि । पुरुषा नारी होइ ॥
दादू सेवक राम का । सीलवंत है सोइ ॥ ४८ ॥

परपुरुषा रति बाँझनी । जानइ जो फल होइ ॥
जनम बिगोवइ आपना । दादू निहफल सोइ ॥ ४९ ॥

दादू तजि भरतार को । परपुरुषा रति होइ ॥
ऐसी सेवा सब करइ । राम न जानइ सोइ ॥ ५० ॥

नारी सेवक तब लगइ । जब लग साईं पास ॥
दादू परसइ आन को । ताकी कैसी आस ॥ ५१ ॥
दादू नारी पुरुष को । जानइ जो बस होइ ॥
पिय की सेवा ना करइ । कामिनि नारी सोइ ॥ ५२ ॥
काया मन का भावना । मेटी आज्ञाकार ॥
क्या ले मुख दिखलाइये । दादू उस भरतार ॥ ५३ ॥
करामाल अकलंक है । जाके हिरदे एक ॥
अति आनंद व्यभिचारिनी । जाके खसम अनेक ॥ ५४ ॥
पतिव्रता को एक है । व्यभिचारिनि को दोइ ॥
पतिव्रता व्यभिचारिनी । मेला क्यों कर होइ ॥ ५५ ॥
पतिव्रता के एक है । दूजा नाहीं आन ॥
व्यभिचारनि के दोइ है । परघर एक समान ॥ ५६ ॥
पुरुष हमारा एक है । हम नारी बहु अंग ॥
जो जैसा है ताहि सों । खेलइ तिसहि रंग ॥ ५७ ॥
दादू रहता राखिये । बहता देइ बहाय ॥
बहते संग न जाइये । रहते सों लव लाइ ॥ ५८ ॥
जिन बाछइ केहु करम सों । दूजे आरँभि जाइ ॥
दादू एकइ मूल गहि । दूजा देइ बहाइ ॥ ५९ ॥
बायें देख न दाहिने । तन मन सनमुख राखि ॥
दादू निरमल तन गही । संत सबद यह साखि ॥ ६० ॥
दूजा नैन न देखिये । स्रवनहुं सुनइ न जाइ ॥
जिभ्या आन न बोलिये । अंग न और सोहाइ ॥ ६१ ॥
चरनहुं अनत न जाइये । उलटा माहिं समाइ ॥
उलट अपूठा आप में । दादू रह लव लाइ ॥ ६२ ॥
दूजे अंतर होत है । जिनि आनइ मन माहिं ॥
तहँ ले मन को राखिये । जहँ कुछ दूजा नाहिं ॥ ६३ ॥

भरम तिमिर भाजइ नहीं। रे जिव आन उपाइ ॥
दादू दीपक साजि ले। सहजइ सो मिटि जाइ ॥ ६४ ॥
सो बेदन नहिं बावरे। आन किये जो जाइ ॥
सब दुख भंजन साइँयाँ। ताही सों लव लाइ ॥ ६५ ॥
ओषध मूली कुछ नहीं। ये सब झूठी बात ॥
जो ओषधही जीइये। काहे को मरिजात ॥ ६६ ॥
मूल गहइ सो निहचला। सुख में रहइ समाइ ॥
डार पात भरमत फिरइ। बेदों दिया बहाइ ॥ ६७ ॥
सौ धक्का सुनहा को देवइ। घर बाहर काढइ ॥
दादू सेवक राम का। दरबार न छाडइ ॥ ६८ ॥
साहिब का दर छाडि करि। सेवक कहीं न जाइ ॥
दादू बैठा मूल गहि। डारों फिरइ बलाइ ॥ ६६ ॥
जब लग मूल न सींचिये। तब लग हरा न होइ ॥
सेवा निहफल सब गई। फिरि पछतावा सोइ ॥ ७० ॥
दादू सींचइ मूल को। सब सींचा बिस्तार ॥
दादू सींचे मूल बिन। बादि गई बेगार ॥ ७१ ॥
सब आया उस एक में। डार पात फल फूल ॥
दादू पीछे का रहा। जब निज पकडा मूल ॥ ७२ ॥
खेत न उपजइ बीज बिन। जल सींचे का होइ ॥
निहफल दादू राम बिन। जानत हैं सब कोइ ॥ ७३ ॥
जब मुख मांहैं मेलिये। सबही त्रिपिता होइ ॥
मुख बिन मेले आन दिसि। त्रिपित न मानइ कोइ ॥ ७४ ॥
देव निरंजन पूजिये। सब आया उस माहिं ॥
डार पात फल फूल सब। दादू न्यारा नाहिं ॥ ७५ ॥
दादू टीका राम का। दूसर दीजे नाहिं ॥
ज्ञान ध्यान तप भेष पछ। सब आये उस माहिं ॥ ७६ ॥

साधू राखइ राम को । संसारी माया ॥
संसारी पालव गहइ । मूल साधू पाया ॥ ७७ ॥
दादू जो कछु कीजिये । अविगत बिन आराध ॥
कहिबा सुनबा देखिबा । करिबा सब अपराध ॥ ७८ ॥
सब चतुराई देखिये । जे कुछ कीजे आन ॥
दादू आया सउँपि सब । पिय को लेहु पिछान ॥ ७६ ॥
दादु दूजा कुछ नहीं । एक सत्त करि जान ॥
दादू दूजा का करइ । जिन एक लिय पहिचान ॥ ८० ॥
कोई बाँछे मुक्ति फल । कोइ अमरापुर बास ॥
कोई बाँछे परमागती । दादु मिलन कि आस ॥ ८१ ॥
तुम्ह हरि हिरदय हेत सों । प्रगटहु परमानंद ॥
दादू देखइ नैन भरि । केता होइ अनंद ॥ ८२ ॥
प्रेम पियाला रामरस । हम को भावइ एइ ॥
रिधि सिधि मागहिँ मुक्तिफल । चाह तिन्ही को देइ ॥ ८३ ॥
कोटि बरस का जीवना । अमर भये का होइ ॥
प्रेम भगति रस राम बिन । दादु जिवन का सोइ ॥ ८४ ॥
कछू न कीजे कामना । सरगुन निरगुन होइ ॥
पलटि जीव तें ब्रह्मगति । सब मिलि मानइ मोइ ॥ ८५ ॥
घट जरावर होय रहइ । बंधन नाहीं कोइ ॥
मुक्ता चौरासी मिटइ । दादू संसय सोइ ॥ ८६ ॥
निकट निरंजन लागि रहु । जब लग अलख अभेव ॥
दादू पीवइ रामरस । निहकामी निज सेव ॥ ८७ ॥
सत्य लोक संगति रहइ । सामिप सनमुख सोइ ॥
सोइ सरूप सारिक भया । जोगी एकइ होइ ॥ ८८ ॥
राम रसिक बाँचइ नहीं । परम पदारथ चार ॥
आठसिद्धि नवनिधि करइ । दाता सिरजनहार ॥ ८६ ॥

स्वारथ सेवा कीजिये। ताते ँ भला न होइ॥
दादू ऊसर उबहि करि। कोठा भरइ न कोइ॥ ६० ॥
सुत बित माँगहिं बावरे। साहिब सौं निधि मेलि॥
दादू वे निहफल गये। जैसे नागरबेलि॥ ६१॥
फल कारन सेवा करइ। जाँचइ त्रिभुवनराव॥
दादू सो सेवक नहीं। खेलइ अपना दाव॥ ६२॥
सहकामी सेवा करइ। माँगइ मुरुख गवाँर॥
दादू ऐसे बहुत हैं। फल के भच्छनहार॥ ६३॥
तन मन लव लागा रहइ। दाता सिरजनहार॥
दादू कुछ माँगइ नहीं। ते बिरला संसार॥ ६४॥
साईं को संभारता। कोटि बिघन टरि जाहिं॥
राइ समान बसुंधरा। केते काठ जराहिं॥ ९५॥
एक राम के नाम बिन। जिव की जरनि न जाइ॥
दादू केते पचि मुये। करि करि बहुत उपाइ॥ ९६॥
करम करम काटइ नहीं। करमइ करम न जाइ॥
करम करम छूटइ नहीं। करमइ करम बँधाइ॥ ९७॥

इति निहकरमी पतिव्रता को अंग संपूर्णम्॥८॥

———o———

अथ चेतवनी को अंग ।

---:o:---

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
साहिब को भावइ नहीं । सो हम तें जिन होइ ॥
सतगुरु लाजइ आपना । साधु न मानइ कोइ ॥ २ ॥
साहिब को भावइ नहीं । सो सब परहर प्रान ॥
मनसा बाचा करमना । जो तूँ चतुर सुजान ॥ ३ ॥
साहिब को भावइ नहीं । सो जिव न कीजे रे ॥
परहरि बिषय बिकार सब । अम्रित रस पीजे रे ॥ ४ ॥
साहिब को भावइ नहीं । सो बाट न बूझी रे ॥
साईं सो सनमुख रहे । इस मन से झूझी रे ॥ ५ ॥
दादु अचेत न होइये । चेतन सो चित लाइ ॥
मनुआँ सोता नींद भरि । साईं संग जगाइ ॥ ६ ॥
दादु अचेत न होइये । चेतन सों करि चित्त ॥
अनहद जहँ तें ऊपजइ । खोजइ तहँही नित्त ॥ ७ ॥
दादू जिन कुछ चेत करि । सौदा लीजइ सार ॥
निरख कमाई ना छुटइ । अपनो जीव बिचार ॥ ८ ॥
करि साँईं की चाकरी । हरी नावँ ना छोडि ॥
जाना है उस देस को । प्रीति पिया सों जोडि ॥ ९ ॥
आपा परबस दूर करि । रामनाम रस लागि ॥
दादू अवसर जात है । जागि सकइ तो जागि ॥ १० ॥
बार बार यह तन नहीं । नर नारायन देह ॥
दादू बहुरि न पाइये । जनम अमोलिक येह ॥ ११ ॥

एका एकी राम सोँ । एकइ साधू संग ॥
दादू अनत न जाइये । और काल का अंग ॥ १२ ॥
तन मन का गुन छाडि सब । होइ जब न्यारा ॥
अपने नैनहुँ देखिये । परगट पिय प्यारा ॥ १३ ॥
जहँ तेँ पाये पसु पिरी । सोई अंदरि आहि ॥
होनी पानी बीच मेँ । सो है मेहरिन लाहि ॥ १४ ॥
जहँ तेँ पाये पसु पिरी । हाँ तैँ लाई बेर ॥
साथ सभोँ के यह लियो । पोइ पसंदो केर ॥ १५ ॥

इति चेतावनी को अंग संपूर्णम् ॥ ९ ॥

——:०:——

अथ मन को अंग ।

——:o:——

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
वंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
यह मन बरजी बावरे । घट मे राखी घेरि ॥
मन हस्ती माना बहइ । अंकुस दे दे फेरि ॥ २ ॥
हस्ती छूटा मन फिरइ । क्योँ हीँ बँधा न जाइ ॥
बहुत महावत पचि गये । दादू कछु न बसाइ ॥ ३ ॥
जहवाँ तें मन उठि चलइ । फेरि तहाँही राखि ॥
तहँ दादू लवलीन करि । साधु कहइ गुरुसाखि ॥ ४ ॥
थोरे थोरे हटि किये । न रहैगा लव लाइ ॥
जब लागा उनमनि सों । तब मन कहीँ न जाइ ॥ ५ ॥
आडा देवे राम को । दादू राखइ मन्न ॥
साखी दे अस्थिर करइ । सोई साधू जन्न ॥ ६ ॥
सोई सूर जो मन गहइ । निमिष न चलने देइ ॥
दादू जबही पग धरइ । तबही पकडि के लेइ ॥ ७ ॥
जेती लहर समुद्र की । मनहिँ मनोरथ मारि ॥
वैसे सब संतोष करि । आतम एक विचारि ॥ ८ ॥
दादू जो मुख बोलता । स्रवनहुँ सुनता आइ ॥
नैनहुँ महँ सो देखता । सो अंतरि उरझाइ ॥ ९ ॥
दादू चुंबक देखि करि । लोहा लागइ आइ ॥
मन गुन इंद्री एक सों । दादू लीजइ लाइ ॥ १० ॥
मन का आसन जो जिय जानइ । ठौर ठौर सब सूझइ ॥
पाँचों आनि एक घर राखइ । अगम निगम सब बूझइ ॥ ११ ॥

बैठे सदा एक रस पीवइ। निरबैरी कत जूझइ॥
आतम राम मिलइ जब दादू। अंग न लागइ दूजइ॥ १२॥
जब लग मन असथिर नहीँ। तब लग परस न होइ॥
दादू मनुआँ थिर भया। सहज मिलइगा सोइ॥ १३॥
बिन अवलंबहि क्योँ रहइ। मन चंचल चलि जाइ॥
अस्थिर मनुआँ तब रहइ। सुमिरन सेतीँ लाइ॥ १४॥
मन अस्थिर करि लीजइ नाम। दादू कहइ तहाँ ही राम॥ १५॥
हरि सुमिरन सोँ हेत करि। मनुआँ निहचल होइ॥
दादू बेधा प्रेम रस। बिष नहिँ चालइ सोइ॥ १६॥
अंतर उरझा एक सोँ। थाके सकल उपाइ॥
दादू निहचल थिर भया। तब चालि कहीँ न जाइ॥ १७॥
कउवा बोहित बैठि करि। माँझि समंदा जाइ॥
उडि उडि थाका देखि कर। निहचल बैठा आइ॥ १८॥
यह मन कागद की गुडी। उडि कर चढी अकास॥
दादू भीँगइ प्रेम जल। आइ रहइ हम पास॥ १९॥
दादू खीला गाडि का। निहचल थिर न रहाइ॥
दादू पग नहिँ साँच के। भरमइ दहदिसि जाइ॥ २०॥
सुख आनँद है आतमा। मन थिर मेरा होइ॥
दादू निहचल राम सोँ। जो करि जानइ कोइ॥ २१॥
मन निरमल थिर होत है। रामनाम आनंद॥
दादू दरसन पाइया। पूरन परमानंद॥ २२॥
फूटे तेँ सारा भया। संधी संधि मिलाइ॥
बाहुरि बिषय न भूँजिये। कबहूँ फूटि न जाइ॥ २३॥
यह मन भूला बहु गली। नरक जान के घाट॥
मन यह अविगत नाथ सोँ। गुरू दिखाई बाट॥ २४॥

मन सुध स्याबति आपना । निहचल होवइ हाथ ॥
इहवाँ ही आनंद है । सदा निरंजन साथ ॥ २५ ॥
मन लागइ जो राम सों । अनत काहि को जाइ ॥
दादू पानी नून ज्यों । ऐसे रहइ समाइ ॥ २६ ॥
ज्यों जल पैठइ दूध में । त्यों पानी में नोन ॥
ऐसे आतम राम सों । मन हठ साधइ कौन ॥ २७ ॥
मन का मस्तक मूडिये । काम क्रोध के केस ॥
दादू विषय बिकार सब । सतगुरु के उपदेस ॥ २८ ॥
वह कुछ हम तें ना भया । जा पर रीझइ राम ॥
दादू इस संसार में । हम आये बेकाम ॥ २९ ॥
का ले मुँह हँसि बोलिये । दादू दीजइ रोइ ॥
जनम अमोलिक आपना । चले अकारथ खोइ ॥ ३० ॥
जा कारन जग में जिये । सो पद हिरदय नाहिं ॥
दादू हरि की भगति बिन । ध्रिग जीवन कलि माहिं ॥ ३१ ॥
कीया मन का भावना । मेटी आज्ञाकार ॥
का ले मुख दिखलाइये । दादू उस भरतार ॥ ३२ ॥
इंद्री स्वारथ सब किया । मन माँगइ सो दीन्ह ॥
जा कारन जग सीरजा । दादू कछू न कीन्ह ॥ ३३ ॥
कीया था इस काम को । सेवा कारन साज ॥
दादू भूला बंदगी । सधा न एकउ काज ॥ ३४ ॥
दादू विषय बिकार सों । जब लग मन राता ॥
तब लग चित्त न आवइ । त्रिभुवनपतिदाता ॥ ३५ ॥
बादिहि जनम गवाँइया । कीये बहुत बिकार ॥
यह मन अस्थिर ना भया । जहँ दादू निज सार ॥ ३६ ॥
दादू सब कुछ बेलसना । खाना पीना होइ ॥
दादू मन का भावना । कहि समझावइ कोइ ॥ ३७ ॥

दादू मन का भावना । मेरी कहइ बलाइ ॥
सांच राम का भावना । दादु कहइ सुनि आइ ॥ ३८ ॥
ये सब मन का भावना । जो कछु कीजइ आन ॥
मन गहि राखइ एक सोँ । दादू साधु सुजान ॥ ३६ ॥
जो कुछ भावइ राम को । सो तत कहि समझाइ ॥
दादू मन का भावना । सब कोइ कहइ बनाइ ॥ ४० ॥
पैँडे पग चालइ नहीँ । होइ रहा गरियार ॥
राम अरथ निबहइ नहीँ । खइबे को हुसियार ॥ ४१ ॥
का परमोधैँ आन को । आपन बहिया जात ॥
औराँ को अम्रित कहइ । अपना ही बिष खात ॥ ४२ ॥
पाँचो ये परमोधि ले । इनहीँ को उपदेस ॥
यह मन अपना हाथ कर । तब चेला सब देस ॥ ४३ ॥
पाँचो का मुख मूल है । मुख का मनवाँ होइ ॥
यह मन राखइ जतन करि । साधु कहावइ सोइ ॥ ४४ ॥
जब लग मन के दुइ गुन । तब लग निपुना नाहिँ ॥
दुइ गुन मन के मिटि गये । तब निपुना मिलि माहिँ ॥ ४५ ॥
काचा पाका जब लगइ । तब लग अंतर होइ ॥
काचा पाका दूर करि । दादू एकइ सोइ ॥ ४६ ॥
सहज रूप मन का भया । होइ होइ मिटी तरंग ॥
तातहु सीतल सम भया । दादू एकइ अंग ॥ ४७ ॥
यह बहुरूपी मन लगइ । जब लग माया रंग ॥
जब मन लागा राम सोँ । दादू एकइ अंग ॥ ४८ ॥
हीरा मनि परि राखिये । दूजा चढइ न रंग ॥
दादू योँ मन थिर भया । अबिनासी के संग ॥ ४६ ॥
सुख दुख सब साईँ पठइ । तब लग काचा मन्न ॥
दादू कुछ ब्यापइ नहीँ । तब मन भया रतन्न ॥ ५० ॥

१२

पाका मन डोलइ नहीं । निहचल रहइ समाइ ॥
काचा मन दहु दिसि फिरइ । चंचल चहुँ दिसि जाइ ॥ ५१ ॥
सीप सुधा रस ले रहइ । पिवइ न खारा नीर ॥
माहें मोती उपजई । दादू बंद सरीर ॥ ५२ ॥
दादू मन पंगुल भया । सब गुन गये बिलाइ ॥
काया है नव ज्वान यह । मन बूढा होइ जाइ ॥ ५३ ॥
दादू अपने करि लिये । मन इंद्री निज ठौर ॥
नाम निरंजन लागि रहु । प्रानी परिहरि और ॥ ५४ ॥
मन इंद्री आधा किया । घट में लहर उठाइ ॥
साईं सतगुरु छाड़ि करि । देखि दिवाना जाइ ॥ ५५ ॥
बिना राम मन रंक है । जाँचइ तीनउँ लोक ॥
मन लागा जब राम सौं । भगे दरिद्दर सोक ॥ ५६ ॥
इंद्री के आधीन मन । जीव जंतु सब जाँचइ ॥
तिन तिन के आगे दादू । तीनउँ लोक फिरि नाचइ ॥ ५७ ॥
इंद्री अपने बस करइ । काहे जाँचन जाइ ॥
दादू अस्थिर आतमा । आसन बइठइ आइ ॥ ५८ ॥
मन मनसा दोनों मिले । तब जिव कीया भाँड ॥
पाँचो का फेरा फिरइ । मया नचावइ राँड ॥ ५९ ॥
नकटी आगे नकटा नाचइ । नकटी ताल बजावइ ॥
नकटी आगे नकटा गावइ । नकटी नकटा भावइ ॥ ६० ॥
पाँचो इंद्री भूत हैं । मन बाँधे तरपाल ॥
मनसा देवी पूजिये । दादू तीनउँ काल ॥ ६१ ॥
जीवत लूटइ जगत सब । मिरतक लूटइ देव ॥
दादू कहाँ पुकारिये । करि करि मूये सेव ॥ ६२ ॥
अगिनि धूम ज्यों निकलई । देखत सबइ बिलाइ ॥
त्यों मन बिछुड़ा राम सों । दहु दिसि बिखरइ जाइ ॥ ६३ ॥

घर छाडे से का भया। मन बहुरि न आया॥
दादू अगिनि के धूम ज्यों। पुर खोज न पाया॥ ६४॥
सब काहू के होत हैं। तन मन पसरइ जाइ॥
ऐसा कोई एक है। उलटा माहिँ समाइ॥ ६५॥
क्यों करि उलटा आनिये। पसरि गया मन फेरि॥
दादू डोरी सहज की। यों आनी घर घेरि॥ ६६॥
साधु सबद सों मिलि रहइ। मन राखइ बिलमाइ॥
साधु सबद बिन क्यों रहइ। तब ही बिखरी जाइ॥ ६७॥
चंचल चहुँ दिसि जात है। गुरु बाइक सों बंधि॥
दादू संगति साधु की। पारब्रह्म सौं संधि॥ ६८॥
एक निरंजन नावँ सों। साधू संगति माहिँ॥
दादू मन बिलमाइये। दूजा कोई नाहिँ॥ ६६॥
तन में मन आवइ नहीं। निस दिन बाहर जाइ॥
दादू मेरा जिव दुखी। रहइ नहीं लव लाइ॥ ७०॥
तन मे मन आवइ नहीं। चंचल चहुँ दिसि जाइ॥
दादू मेरा जिव दुखी। रहइ न राम समाइ॥ ७१॥
कोटि जतन करि करि मुये। यह मन दह दिसि जाइ॥
रामनाम रोका रहइ। नाहीं आन उपाइ॥ ७२॥
यह मन बहु बकवाद सों। बायु भूत होइ जाइ॥
दादू बहुत न बोलिये। सहजइ रहइ समाइ॥ ७३॥
भूला भरमइ फेरि मन। मूरख मगध गवाँर॥
सुमिरि सनेही आपना। आतम का आधार॥ ७४॥
मानिक मूरख राख रे। जन जन हाथ न देहु॥
दादू पारिखी जौहरी। रामसाधु दुइ लेहु॥ ७५॥
मारा बिन मानइ नहीं। यह मन हरि का आन॥
ज्ञान खडग गुरुदेव का। ता सँग सदा सुजान॥ ७६॥

मन मिरगा मारइ सदा। ता की मीठी मास॥
दादू खाइबे को हिला। तातैं आन उदास॥ ७७॥
कहा हमारा मान मन। पापी परिहर काम॥
विषयी का सँग छाड़ि दे। दादू कहि ले राम॥ ७८॥
केता कहि समझाइये। मानइ नहिं निर्लज्ज॥
मूरख मन समझइ नहीं। कीये काज अकज्ज॥ ७९॥
मन हीं मंजन कीजिये। दादू दरपन देह॥
माहीं सूरत देखिये। हरि अवसर करि लेह॥ ८०॥
तब ही कारा होत है। हरि बिन चितवत आन॥
का कहिये समझइ नहीं। दादू सिखवत ज्ञान॥ ८१॥
पानी धोवहिं बावरे। मन का मैल न जाइ॥
मन निरमल तब होयगा। जब हरि के गुन गाइ॥ ८२॥
ध्यान धरे का होत है। मन नहिं निरमल होइ॥
तब बक सबही ऊधरें। येहि बिधि सीझइ कोइ॥ ८३॥
ध्यान धरे का होत है। मन का मैल न जाइ॥
बकउ मीन का ध्यान धरि। पसू बिचारे खाइ॥ ८४॥
काले तें धोया भया। दिल दरिया में धोइ॥
मालिक सेतीं मिलि रहा। सहजइ निरमल होइ॥ ८५॥
जिस का दरपन ऊजरा। दरसन देखइ माहिं॥
जिस की मैली आरसी। सो मुख देखइ नाहिं॥ ८६॥
दादू निरमल सुद्ध मन। हरि रँग राता होइ॥
दादू कंचन करि लिया। काच कहइ नहिं कोइ॥ ८७॥
यह मन अपना थिर नहीं। करि नहिं जानइ कोइ॥
दादू निरमल देव का। सेवा क्यों करि होइ॥ ८८॥
यह मन तीनउँ लोक में। अरस परस सब होइ॥
देही की रच्छा करइ। हम जिन भँटइ कोइ। ८९॥

देह जतन करि राखिये । मन राखा नहिं जाइ ॥
उत्तम मद्धिम बासना । भला बुरा सब खाइ ॥ ६० ॥
दादू हाडहु मुख भरा । चाम रहा लपटाइ ॥
माहैं जिभ्भा मास की । ताही सेतीं खाइ ॥ ६१ ॥
नवहू द्वारे नरक के । निस दिन बहइ बलाइ ॥
सौच कहाँ तक कीजिये । राम सुमिरि गुन गाइ ॥ ६२ ॥
प्रानी तन मन मिलि रहा । इंद्री सकल बिकार ॥
दादू ब्रह्मा सूद्र घर । कहाँ रहइ आचार ॥ ९३ ॥
दादू जीवइ पलक में । मरता कलप बिहाइ ॥
दादू यह मन मसखरा । जिन कोई पतियाइ ॥ ६४ ॥
दादू मूआ मन हमैं । जैसे मरघट भूत ॥
मूआ पीछे उठि लगइ । ऐसा मेरा पूत ॥ ९५ ॥
निहचल करता जुग गये । चंचल तबही होइ ॥
दादू पसरइ पलक मे । यह मन मारइ मोइ ॥ ९६ ॥
दादू यह मन मीन का । जल सों जीवइ सोइ ॥
दादू यह मन रइ है । जिन न पतीजइ कोइ ॥ ६७ ॥
माहैं सुखिया होइ रहइ । बहर पसारइ अंग ॥
पवन लागि पौढा भया । काला नाग भुवंग ॥ ६८ ॥
सपना तब लग देखिये । जब लग चंचल होइ ॥
निहचल लागा नावँ सों । सपना नाहीं कोइ ॥ ६९ ॥
जागत जहँ जहँ मन रहइ । सोवत तहँ तहँ जाइ ॥
दादू जो जो मन बसइ । सो सो देखइ आइ ॥ १०० ॥
दादू जो जो चित बसइ । सो सो आवइ चीति ॥
बाहर भीतर देखिये । जाही सेतीं प्रीति ॥ १०१ ॥
सावन हरिअरि देखिये । मन चित ध्यान लगाइ ॥
दादू केते जुग गये । तो भी हरा न जाइ ॥ १०२ ॥

जिस की सुरति जहँ रहइ। तिसकी तहँ बिश्राम ॥
भावइ माया मोह मे ँ। भावइ आतमराम ॥ १०३ ॥
जहँ मन राखइ जीवता। मरता तिस घर जाइ ॥
दादू बासा प्रान का। पहिले रहा समाइ ॥ १०४ ॥
जहाँ सुरति तहँ जीव है। जहँ नहीँ तहँ नाहिँ॥
गुन निरगुन जहँ राखिये। दादू घर बन माहिँ ॥ १०५ ॥
जहाँ सुरति तहँ जीव है। आदि अंत अस्थान ॥
मया ब्रह्म जहँ राखिये। दादू तहँ बिश्राम ॥ १०६ ॥
जहाँ सुरति तहँ जीव है। जिवन मरन जिस ठौर ॥
बिष अम्रित तहँ राखिये। दादू नाहीँ और ॥ १०७ ॥
जहाँ सुरति तहँ जीव है। जहँ चाहइ तहँ जाइ ॥
आगम गम जहँ राखिये। दादू तहाँ समाइ ॥ १०८ ॥
मन मनसा का भाव है। अंत फलैगा सोइ ॥
दादू बानिक बानियाँ। आसय आसनि होइ ॥ १०९ ॥
जप तप करनी करि गये। सरग पहूँचे जाइ ॥
दादू मन की बासना। नरक पडे फिरि आइ ॥ ११० ॥
पाका काचा होइ गया। जीतइ हारइ दाव ॥
अंतकाल गाफिल भया। दादू फिसलइ पाव ॥ १११ ॥
यह मन पंगुल पाँच दिन। सब काहू का होइ ॥
दादू उतरि आकास तेँ। धरती आया सोइ ॥ ११२ ॥
ऐसा कोई एक मन। मरइ सो जीवइ नाहिँ ॥
दादू ऐसे बहुत हैँ। फिरि आवहिँ कलि माहिँ ॥ ११३ ॥
देखा देखी सब चले। पार न पहुँचा जाइ ॥
दादू आसनि पहिर के। फिरि फिरि बइठे आइ ॥ ११४ ॥
बरतन एकइ भाँति सब। दादू संत असंत ॥
भिन्न भाव अंतर घना। मनसा तहँ गच्छंत ॥ ११५ ॥

यह मन मारइ मोमिना। यह मन मारइ मीर ॥
यह मन मारइ साधु का। यह मन मारइ पीर ॥ ११६ ॥
मन मारे मुनिवर मुये। सुर नर किये सँघार ॥
ब्रह्मा विस्नु महेस सब। राखइ सिरजनहार ॥ ११७ ॥
मन चाहे मुनिवर बड़े। ब्रह्मा विस्नु महेस ॥
सिध साधक जोगी जती। दादू दे सब देस ॥ ११८ ॥
पूजा मान बड़ाइयाँ। आदर माँगइ मन्न ॥
राम गहइ सब परिहरइ। सोई साधू जन्न ॥ ११९ ॥
जहँ जहँ आदर पाइये। तहाँ तहाँ जिव जाइ ॥
बिन आदर का रामरस। छाडि हलाहल खाइ ॥ १२० ॥
करनी किरका को नहीं। कथी अनंत अपार ॥
दादू यों क्यों पाइये। रे मन मूढ गवाँर ॥ १२१ ॥
दादू मन मिरतक भया। इंद्री अपने हाथ ॥
तौभी कधी न कीजिये। कनक कामिनी साथ ॥ १२२ ॥
मन निरभय है घर नहीं। भय में बइठा आइ ॥
निरभय सँग तें बीछुड़ा। सोइ कायर होइ जाइ ॥ १२३ ॥
दादू मन के सीस मुख। हस्त पाँव है जीव।
स्रवन नेत्र रसना रटइ। दादू पाया पीव ॥ १२४ ॥
जहाँ नवाये सब नवइ। सोई सिर करि जानि ॥
जहाँ बोलाये बोलिये। सोई मुख परवानि ॥ १२५ ॥
जहाँ सुनाये सब सुनइ। सोई स्रवन सयान ॥
जहँ के देखाये देखिये। सोई नैन सुजान ॥ १२६ ॥
मनही सों मल उपजई। मनही सों मल धोइ ॥
सीख चलइ गुरु साधु की। तो तूँ निर्मल होइ ॥ १२७ ॥
मनही माया उपजई। मनही माया जाइ ॥
मनही राता राम सों। मनही रहा समाइ ॥ १२८ ॥

मनहीं मरना उपजई। मनहीं मरना खाइ॥
मन अबिनासी होइ रहा। साहिब सों लव लाइ॥ १२६॥
मनहीं सनमुख नूर है। मनहीं सनमुख तेज॥
मनहीं सनमुख जोति है। मनहीं सनमुख सेज॥ १३०॥
मनहीं सों मन थिर भया। मनहीं सों मन लाइ॥
मनहीं सों मन मिलि रहा। दादू अनत न जाइ॥ १३१॥

इति मन को अंग संपूर्णम्॥ १०॥

———:o:———

अथ सूक्ष्म जनम को अंग ।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
चौरासी लख जीव की । पर कीरति घट माहिँ ॥
नेक जनम दिन के करइ । कोई जानइ नाहिँ ॥ २ ॥
जेत गुन व्यापइ जीव को । तेते ही अवतार ॥
अवागमन यह दूरि करि । समरथ सिरजनहार ॥ ३ ॥
सब गुन सबही जीव के । दादू व्यापइ आइ ॥
घट माहेँ जामइ मरइ । कोई न जानइ ताहि ॥ ४ ॥
जीव जनम जानइ नहीं । पलक पलक मेँ होइ ॥
चौरासी लख भोगई । दादू लखइ न कोइ ॥ ५ ॥
नेक रूप दिन के करइ । यह मन आवइ जाइ ॥
अवागमन मन का मिटइ । दादू रहइ समाइ ॥ ६ ॥
निसबासर यह मन चलइ । सूच्छम जीव सँघार ॥
दादू मन थिर कीजिये । आतम लेहु उबारि ॥ ७ ॥
कबहूँ पावक कबहूँ पानी । धर अंबर गुन बाई ॥
कबहूँ कुंजर कबहूँ कीरी । नर पसु होई जाई ॥ ८ ॥
सूकर स्वान सियार सिँह । सरप रहइ घट माहिँ ॥
कुंजर कीरी जीव सब । पँवरहिँ जानहिँ नाहिँ ॥ ९ ॥

इति सूच्छम जनम को अंग संपूर्णम् ॥ ११ ॥

———:o:———

अथ माया को अंग ।

:o:

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
साहिब है पर हम नहीं । सब जग आवइ जाइ ॥
दादू सपना देखिये । जागत गया बिलाइ ॥ २ ॥
माया का सुख पाँच दिन । गरब्यो कहाँ गवाँर ॥
सपने पायेउ राजधन । जात न लागइ बार ॥ ३ ॥
सपने सोता प्रान है । कीये भोग बिलास ॥
जागत झूठा होइ गया । ताकी कैसी आस ॥ ४ ॥
माया का सुख मन करइ । सेजा सुंदरि पास ॥
अंतकाल आया गया । दादू होहु उदास ॥ ५ ॥
जो नाहीं सो देखिये । सूता सपने माहि ॥
दादू झूठा होइ गया । जागइ तो कुछ नाहिं ॥ ६ ॥
यह सब माया मिरिग जल । झूठी झिलिमिलि होइ ॥
दादू चिसका देखि करि । सत करि जाना सोइ ॥ ७ ॥
झूठी झिलिमिलि मिरिग जल । पानी करि लीया ॥
दादू जग प्यासा मरइ । पसु प्रानी पीया ॥ ८ ॥
छलावा छलि जाइगा । सपना बाजी सोइ ॥
दादू देखि न भूलिये । यह निज रूप न होइ ॥ ९ ॥
सपने सब कुछ देखिये । जागइ तो कुछ नाहिं ॥
ऐसा यह संसार है । समझि देखि मन माहिं ॥ १० ॥
जो कछु सपने देखिये । तैसा यह संसार ॥
ऐसा आपा जानिये । फूलहु कहाँ गवाँर ॥ ११ ॥

दादू जतन करि राखिये। दिढ़ गहि आतम मूल ॥
दूजा दृष्टि न देखिये। सबही से बल फूल ॥ १२ ॥
नैनहुँ भरि नाहिं देखिये। सब माया का रूप ॥
तहँ ले नैना राखिये। जहँ है तत्त अनूप ॥ १३ ॥
हस्ती बरधन देखि करि। फूलेउ अँग न समाइ ॥
फेरि दमामा एक दिन। सबही छाडे जाइ ॥ १४ ॥
माया बिहडइ देखतइ। काया संग न जाइ ॥
कितिम बिहडइ बावरे। अजरअमर लव लाइ ॥ १५ ॥
माया का बल देखि करि। आया अँत अहँकार ॥
अंध भया सूझइ नहीं। का है सिरजनहार ॥ १६ ॥
मन मनसा माया रती। पाँच तत्त परकास ॥
चौदह तीनउँ लोक सब। दादू दोऊ उदास ॥ १७ ॥
माया देखे मन सुखी। हिरदय होइ बिकास ॥
दादू यह गति जीव का। अंत न पूजइ आस ॥ १८ ॥
मन की मूठि न माडिये। माया केर निसान ॥
पीछे ही पछताउगे। दादू खोटे बान ॥ १६ ॥
कुछ खाते कुछ खेलते। कुछ सोवत दिन जाइ ॥
कुछ बिषयारस बेलसते। दादू गये बिलाइ ॥ २० ॥
माखन मन पाहन भया। मायारस पीया ॥
पाहन मन माखन भया। रामरस लीया ॥ २१ ॥
माया सों मन बीगडा। ज्यों काँजी करि दूध ॥
है कोई संसार में। मन करि देवइ सूध ॥ २२ ॥
गंदे सों गंदा भया। यों गंदा सब कोइ ॥
दादू लागइ खूब सों। खूब सरीखा होइ ॥ २३ ॥
माया मैं मन रत भया। बिषयरस माता ॥
दादू साचा छाडि करि। झूठइ रँग राता ॥ २४ ॥

माया के सँग जो गये। ते बहुरि न आये॥
दादू माया डाँकिनी। इन्ह केते खाये॥ २५॥
माया मोह बिकार की। कोई सकइ न डारि॥
बहि बहि मूये बापुरे। गये बहुत पचि हारि॥ २६॥
रूप राग गुन अनुसरे। जहँ माया तहँ जाइ॥
बिद्या आखर पंडिता। तहाँ रहइ घर छाइ॥ २७॥
साधु न कोई पग भरइ। कबहूँ राज दुआरि॥
दादू उलटा आप में। बैठा ब्रह्म बिचारि॥ २८॥
अपने अपने घर गये। माया अंग बिचारि॥
सहकामी माया मिले। निकमी ब्रह्म सँभारि॥ २९॥
मायामगन जो होइ रहइ। हम से जीव अपार।
माया माहैं ले रही। डूबे काली धार॥ ३०॥
बिषय कारन रूप राते रहैं। नैन नापाक यौं कीन्ह भाई॥
बदी की बात सुनत सारा दिन। स्रवन नापाक यौं कीन्ह जाई॥
स्वाद कारन लुबधि लागी रहै। जिभ्भा नापाक यौं कीन्ह खाई॥
भोग कारन भूख लागी रहै। अंग नापाक यौं कीन्ह लाई॥ ३२॥
दादू नगरी चैन तब। जब एकराजी होइ॥
दोउ राजी दुख द्वंद में। सुखी न बइठ कोइ॥ ३३॥
एकराजी आनंद है। नगरी निहचल बास॥
राजा परजा सुख बसइ। दादू जोतिप्रकास॥ ३४॥
जैसे कुंजर कामरस। आपा बंधा आइ॥
ऐसे दादू हम भये। क्योंकर निकसा जाइ॥ ३५॥
जैसे मरकट जीभरस। आपा बंधा अंध॥
ऐसे दादू हम भये। क्योंकर छूटइ फंद॥ ३६॥
ज्यों सूवा सुख कारने। बंधा मूरख माहिँ॥
ऐसे दादू हम भये। क्योंही निकसइ नाहिँ॥ ३७॥

ऐसे अंध अज्ञान ग्रिह। बंधा मूरख स्वादि ॥
ऐसे दादू हम भये। जनम गवाँया बादि ॥ ३८ ॥
बूडि रहा रे बापुरे। माया ग्रिह के कूप ॥
मोह कनक अरु कामिनी। नाना बिध के रूप ॥ ३६ ॥
स्वाद लागि संसार सब। देखत परलय जाइ ॥
इंद्री स्वारथ साच तजि। सबइ बँधाये आइ ॥ ४० ॥
बिष सुख माहैं रमि रहे। माया हित चित लाइ ॥
सोइ संत जन ऊबरे। स्वाद छाडि गुन गाइ ॥ ४१ ॥
झूठी काया झूठ घर। झूठा यह परिवार ॥
झूठी माया देखि करि। फूला कहाँ गवाँर ॥ ४२ ॥
दादू झूठा संसार झूठ परिवार। झूठा घरबार झूठ नरनार ॥
तहाँ मन मानैं झूठा कुल जात। झूठ मात पितु झूठा बंधुभ्रात ॥
झूठ तन गात सत करि जानइ। झूठ सब धंध झूठा सब फँध ॥
झूठ सब अंध झूठा जाचंत। कहाँ मधु छानइ ॥
दादू भागि झूठ सब त्यागि। जागि रे जागि देखि दिवाने ॥४३॥
जनम गया सब देखते। झूठे के सँग लागि ॥
साचे प्रीतम को मिलइ। भागि सकइ तो भागि ॥ ४४ ॥
झूठ तन के कारने। कीये बहुत बिकार ॥
ग्रिह दारा धन संपदा। पूत कुटुँब परिवार ॥ ४५ ॥
ता कारन हति आतमा। झूठ कपट अहँकार ॥
सो माटी मिलि जाइगा। बिसरा सिरजनहार ॥ ४६ ॥
गतं गृहं गतं धनं। गतं दारासुतजोबनं ॥
गतं माता गतं पिता। गतं बंधु सज्जनं ॥ ४७ ॥
गतं आपा गतं परः। गतं संसाररंजनं ॥
भजसि भजसि रे मन। परब्रह्म निरंजनं ॥ ४८ ॥
जीवहि माहैं जिव रहइ। ऐसा माया मोह ॥
साईं सूधा सब गया। दादू नहिं अंदोह ॥ ४९ ॥

माया पग हर खेत खर। सतगति के दिन होइ॥
जो बाँचे सो देवता। राम सरीखे सोइ॥ ५० ॥
कारर बीज न उपजई। जौं बाहइ सौ बार॥
दादू दाना बीज का। का पचि मरइ गँवार॥ ५१ ॥
दादू इस संसार सों। निमिष न कीजइ नेह॥
जनम मरन से अवटना। छिन छिन दागइ देह॥ ५२ ॥
दादू मोह सँसार को। बिहरइ तन मन प्रान॥
दादू छूटइ ज्ञान करि। कोई संत सुजान॥ ५३ ॥
मन हथ माया हस्तिनी। सिंह बना संसार॥
तामें निरभय होइ रहा। दादू मुरुख गवाँर॥ ५४ ॥
काम कठिन घट चोर है। घर फोरइ दिन रात॥
सोवत साहु न जागई। तत्त बस्तु ले जात॥ ५५ ॥
काम कठिन घट चोर है। मूसइ भरइ भँडार॥
सोवत ही ले जायगा। चेतन पहरइ चार॥ ५६ ॥
ज्यों घुन लागइ काठ को। लोहइ लागइ काट॥
काम किया घट जाजरा। दादू बारह बाट॥ ५७ ॥
राहु उगिल ज्यों चंद को। गहन उगिल ज्यों सूर॥
करम उगिल ज्यों जीव को। नख सिख लागे पूर॥ ५८ ॥
चंदा उगिलइ राहु को। गहन उगिलई सूर॥
जीव उगिलई करम को। राम रहा भरपूर॥ ५९ ॥
करम कुल्हाडा अंग बन। काटत बारंबार॥
अपने हाथे आप को। काटत है संसार॥ ६० ॥
आपइ मारइ आप को। यह जीव बिचारा॥
साहिब राखनहार है। सो हितू हमारा॥ ६१ ॥
आपइ मारइ आप को। आप आप को खाइ॥
आपइ अपना काल है। दादू कह समुझाइ॥ ६२ ॥

मरिबे को सब उपजई । जीबे को कछु नाहिँ ॥
जीबे को जानइ नहीं । मरिबे को मन माहिँ ॥ ६३ ॥
बाँधा बहुत बिकार सोँ । सरप पाप का मूल ॥
ढाहइ सब आकार को । दादू यह अस्थूल ॥ ६४ ॥
दादू दोनोँ देखिये । काम क्रोध अहँकार ॥
रात दिवस जरिबो करइ । आपा अगिनि बिकार ॥ ६५ ॥
बिषय हलाहल खाइ करि । सब जग मरि मरि जाइ ॥
दादू मेहरा नाम ले । हृदय राखि लव लाइ ॥ ६६ ॥
जेती बछिया बेलासिये । तेती हत्या होइ ॥
परतछ मान सँभारिये । सकल सिरोमनि सोइ ॥ ६७ ॥
बिषया का रस मद भया । नर नारी का मास ॥
माया माते मद पिया । किया जनम का नास ॥ ६८ ॥
दादू भावइ भगत होइ । बिषय हलाहल खाइ ॥
तहँ जन तेरा रामजी । सपने कभी न जाइ ॥ ६९ ॥
खाँडा बूजी भगत है । लोहर बाडा माहिँ ॥
परगट बेडा इत बसइ । तहँ काहे को जाहिँ ॥ ७० ॥
साँपिन एक सब जीव को । आगे पीछे खाइ ॥
दादू कह उपकार करि । कोइ जन ऊबरि जाइ ॥ ७१ ॥
दादू खाय साँपिनी । क्योँ करि जीवइ लोग ॥
राममंत्र गुन गारुडी । जीवइ येहि संजोग ॥ ७२ ॥
माया कारन जग मरइ । पिय के कारन कोइ ॥
देखो ज्योँ जग परजरइ । निमिख न न्यारा होइ ॥ ७३ ॥
काल कनक अरु कामिनी । परिहर इनका संग ॥
दादू सब जग जरि मुआ । दीपक जोति पतंग ॥ ७४ ॥
जहाँ कनक अरु कामिनी । जीव पतँग होइ जाहिँ ॥
आदि अंत सूझइ नहीं । जरि जरि मूये माहिँ ॥ ७५ ॥

घट माहैँ माया घनी । बाहर त्यागी होइ ॥
फाटी कंथा पहिरि करि । चिन्ह न कर सब कोइ ॥ ७६ ॥
काया राखइ बंद करि । मन दह दिसि खेलइ ॥
दादु कनक अरु कामिनी । माया नहिँ मेलइ ॥ ७७ ॥
मन सोँ मीठा सुख सोँ खारि । माया त्यागी कहइ बजारी ॥७८॥
माया मंदिर मीच का । तामेँ पइठा धाइ ॥
अंध भया सूझइ नहीँ । साधू कह समुझाइ ॥ ७९ ॥
दादू केते जरि मुये । इस जोगी के आगि ॥
दादू दूरहि बाचिये । उस जोगी सँग लागि ॥ ८० ॥
ज्योँ जल मेँ है माछरी । तैसा यह संसार ॥
माया माते जीव सब । दादू मरत न बार ॥ ८१ ॥
माया फोडइ नैन दोउ । राम न सूझइ काल ॥
साधु पुकारइ मेर चढ़ि । देखि अगिनि की झार ॥ ८२ ॥
बिना भुअंगम मनि बसइ । बिन जल बूडइ जाइ ॥
बिन पावक के ज्योँ जरइ । दादू कछु न बसाइ ॥ ८३ ॥
अम्रित रूपी आप है । और सबइ बिष जाल ॥
राखनहारा राम है । दादू दूजा काल ॥ ८४ ॥
बाजी चिहर रचाइ करि । रहा अपरछन होइ ॥
माया पट परदा दिया । तातेँ लखइ न कोइ ॥ ८५ ॥
दादू बाहा देखता । ढिग ही दौरी लाइ ॥
पिय पिय करते सब गये । आपा देह दिखाइ ॥ ८६ ॥
मैँ चाहूँ सो ना मिलइ । साहिब का दीदार ॥
दादू बाजी बहुत है । नाना रंग अपार ॥ ८७ ॥
हम चाहहिँ सो ना मिलइ । औ बहुतेरे आहिँ ॥
दादू मन मानइ नहीँ । केते आवहिँ जाहिँ ॥ ८८ ॥
बाजी मांह जीव सब । हमरी मुरकी बाहि ॥

दादू कैसा करि गया । आपन रहा छिपाहि ॥ ८६ ॥
दादू साईं सत्त है । दूजा भरम बिकार ॥
नावँ निरंजन निरमला । दूजा घोर अधार ॥ ९० ॥
दादू सो धन लीजिये । जो तुम्ह सेतीं होइ ॥
माया बाँधे कइ मुये । पूरा पडा न कोइ ॥ ६१ ॥
जो हम छाडहिँ हाथ तें । सो तुम लिया पसार ॥
जो हम लेवहिँ प्रीति सों । सो तुम्ह दीया डारि ॥ ६२ ॥
हीरा पग सों ठेलि करि । कंकड को कर लीन्ह ॥
पारब्रह्म को छाडि करि । जीवन सों हित कीन्ह ॥ ६३ ॥
सब कोइ बानिक पारखी । हीरा कोइ न लेइ ॥
हीरा लेगा जौहरी । जो माँगइ सो देइ ॥ ६४ ॥
दँडी चोट ज्यों मारिये । तिहूँ लोक में फेरि ॥
धुरि पहुँचे संतोष है । दादू चढिबा मेरि ॥ ९५ ॥
अनल पंखि आकास को । माया मेरि उलंघ ॥
दादू उलटे पंथ चढि । जाइ बिलंबे अंध ॥ ६६ ॥
माया आगे जीव सब । ठाढ रहे करजोरि ॥
जिन सिरजे जल बूँद सों । ता सों बइठे तोरि ॥ ६७ ॥
सुर नर मुनिवर बस किये । ब्रह्मा बिस्नु महेस ॥
सकल लोक के सिर खडी । साधू के पग हेस ॥ ६८ ॥
माया चेरी संत की । दासी उस दरबार ॥
ठकुरानी सब जगत की । तीनउँ लोक मँझार ॥ ६६ ॥
माया दासी संत की । साकत की सिरताज ॥
साकत सेंती भाँडनी । संतो सेतीं लाज ॥ १०० ॥
चारि पदारथ मुक्ति बापुरी । आठ सिद्धि नव निद्ध चेरी ॥
माया दासी ताके आगे । जहाँ भगति निरंजन तेरी ॥ १०१ ॥
कहइ ज्यों आवई । त्यों जाइ बिचारी ॥
बेलर्मा बितडी । मैं माथे मारी ॥ १०२ ॥

माया सब गहिरे किये । चौरासी लख जीव ॥
तिन्ह के चेरी का करइ । जो रँग राते पीव ॥ १०३ ॥
माया बैरी जीव को । जिन कोइ लावइ प्रीति ॥
माया देखइ नरक करि । यह संतन की रीति ॥ १०४ ॥
माया मत चक चाल करि । चंचल कीये जीव ॥
माया माते मद पिया । दादू बिसरा पीव ॥ १०५ ॥
जने जने को राम की । घर घर की नारी ॥
पतिब्रता नाहिँ पीय की । सो माथे मारी ॥ १०६ ॥
जन जन के उठि पीछे लागइ । घर घर भरमत डोलइ ॥
ता तेँ दादू खाइ तमाचे । मातल उनमुख बोलइ ॥ १०७ ॥
जो नर कामिनि परिहरइ । छूटे गरभ के बास ॥
दादू सूधे मुख नहीँ । रहे निरंजन पास ॥ १०८ ॥
रोक न राखइ झूठ न भाषइ । दादू खरचइ खाइ ॥
नदी पूर पुरवाह ज्योँ । माया आवइ जाइ ॥ १०९ ॥
सदिके सिरजनहार का । केते आवइ जाइ ॥
दादू धन संचइ नहीँ । बइठि खिलावइ खाइ ॥ ११० ॥
जोगिनि होइ जोगी गहइ । धन करि होइ धनेस ॥
भगतिन होइ भगता गहइ । करि करि नाना भेस ॥ १११ ॥
बुधि बिबेक बल हरनि । सदा त्रयताप उपावनि ॥
अंग अंगन परजालि । जीव घरबार नचावनि ॥ ११२ ॥
नाना बिधि का रूप धरि । सब बाँधे भामिनि ॥
जग बिडंब परलइ किया । हरि नावँ भुलावनि ॥ ११३ ॥
बाजीगर की पूतली । ज्योँ मरकट मोहा ॥
दादू माया राम की । सब जगत बिगोहा ॥ ११४ ॥
मोर मोरनी देखि करि । नाचइ पंख पसारि ॥
योँ दादू घर आँगने । हम नाचहिँ कइ बार ॥ ११५ ॥

जिस घट दीपक राम का । तेहि घट तिमिर न होइ ॥
उस उँजियारे जोति को । सब जग देखइ सोइ ॥ ११६ ॥
जेहि घट ब्रह्म न परगटइ । माया मंगल गाइ ॥
दादू जागइ जोति जब । माया भरम बिलाइ ॥ ११७ ॥
जोती चमकइ तिरवरे । दीपक देखइ लोइ ॥
चंद सूरज की चाँदिनी । परगट छाया होइ ॥ ११८ ॥
दादू दीपक देह का । माया परगट होइ ॥
चौरासी लख पंछियाँ । तहाँ परइ सब कोइ ॥ ११६ ॥
यह घट दीपक साधु का । ब्रह्म जोति परकास ॥
दादू पंछी संत जन । तहाँ परहिँ निज दास ॥ १२० ॥
दादू मन मिरतक भया । इंद्री अपने हाथ ॥
तो भी कधी न कीजिये । कनककामिनी साथ ॥ १२१ ॥
जानइ बूझइ जीव सब । त्रिया पुरुष का अंग ॥
आपा पर भूला नहीँ । दादू कैसा संग ॥ १२२ ॥
माया के घट साजी होइ । त्रिया पुरुष धरि नाउँ ॥
दोनोँ सुंदर खेलइ दादू । राखि लेहु बलि जाउँ ॥ १२३ ॥
बहुत बीर सब देखिये । नारी अरु भरतार ॥
परमेस्वर के पेट के । दादू सब परिवार ॥ १२४ ॥
पर घर परिहर आपनी । सब एकइ उनहार ॥
पसु प्रानी समुझइ नहीँ । दादू मुरुख गवाँर ॥ १२५ ॥
पुरुष पलट बेटा भया । नारी माता होइ ॥
दादू कोइ समझइ नहीँ । बडा अचंभा मोइ ॥ १२६ ॥
माता नारी पुरुष की । पुरुष नारि का पूत ॥
दादू ज्ञान बिचारि करि । छाडि गये अवधूत ॥ १२७ ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस लोँ । सुर नर उर छाया ॥
बिष का अंम्रित नावँ धरि । सब किन्हहूँ खाया ॥ १२८ ॥

माया का जल पीवता । व्याधी होइ बिकार ॥
सेजे का जल पीवता । प्रान सुखी सुख सार ॥ १२९ ॥
जिव गहिरा जिव बावला । जीव दिवाना होइ ॥
दादू अम्रित छाडि करि । बिष पीवइ सब कोइ ॥ १३० ॥
माया मैली गुन भई । धरि धरि उज्जल नावँ ॥
दादू मोहइ सबहि कोँ । सुर नर सब ही ठावँ ॥ १३१ ॥
बिष का अम्रित नावँ धरि । सब कोइ खावइ ॥
दादू खारा ना कहइ । यह अचरज आवइ ॥ १३२ ॥
दादू जो बिष खाइ करि । जिन मुख मेँ मेलइ ॥
आदि अंत परलइ गया । जो बिष सोँ खेलइ ॥ १३३ ॥
जिन्ह बिष खाये ते मुये । का मेरा तेरा ॥
आग पराई आपनी । सब करइ निबेरा ॥ १३४ ॥
जिन बिष पीवइ बावरे । दिन दिन बाढइ रोग ॥
देखत ही मरि जाइगा । तज बिषया रस भोग ॥ १३५ ॥
अपन पराया खाइ बिष । देखत ही मरि जाइ ॥
दादू कोइ जीवइ नहीँ । यहि भोरे जिनि खाइ ॥ १३६ ॥
ब्रह्म सरीखा होइ करि । माया सोँ खेलइ ॥
दादू दिन दिन देखता । अपने गुन मेलइ ॥ १३७ ॥
माया मारइ लात सोँ । हरि को घालइ हाथ ॥
संग तजइ सब झूठ का । गहइ साच का साथ ॥ १३८ ॥
घर के मारे बन के मारे । मारे सरग पताल ॥
सूच्छिम मोटा गूथ करि । बढा माया जाल ॥ १३९ ॥
दादू उभामार बैठा बिचार । संभार जागत सूता ॥
तीन भवन नत्तजाल बिडारनी । तहाँ जाइगा पूता ॥ १४० ॥
मुये सरीखे होइ रहे । जीवन का का आस ॥
दादू राम बिसार करि । बांछा भोग बिलास ॥ १४१ ॥

माया रूपी राम को। सब कोई धावइ॥
अलख आदि अनादि है। सो दादू गावइ॥ १४२॥
ब्रह्मा का बेद बिस्नु की मूरति। पूजइ सब संसारा॥
महादेव की सेवा लागे। कहाँ है सिरजनहारा॥ १४३॥
माया का ठाकुर किया। माया की महामाई॥
ऐसे देव अनंत करि। सब जग पूजन जाई॥ १४४॥
माया बइठी राम होइ। कहइ मैं ही मोहनराई॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस लों। जोनी आवइ जाई॥ १४५॥
माया बइठी राम होइ। ता को लखइ न कोइ॥
सब जग मानइ सत्त करि। बडा अचंभा मोइ॥ १४६॥
अंजन किया निरंजना। गुन निर्गुन जानइ॥
धरा दिखावइ अधर करि। कैसे मन मानइ॥ १४७॥
नीरंजन की बात कहि। आवइ अंजन माहिं॥
दादू मन मानइ नहीं। सरग रसातल जाहिं॥ १४८॥
कामधेनु के पटतरइ। करइ काठ की गाइ॥
दादू दूध दुहइ नहीं। मूरख देइ बहाइ॥ १४६॥
चिंतामनि कंकर किया। मागे कछू न देइ॥
दादू कंकर डारि दे। चिंतामनि कर लेइ॥ १५०॥
पारस किया पषान का। कंचन कधी न होइ॥
दादू आतम राम बिन। भूलि पडा सब कोइ॥ १५१॥
सूरज फाटिक पषान का। तासों तिमिर न जाइ॥
साचा सूरज परगटइ। दादू तिमिर नसाइ॥ १५२॥
मूरति खडी पषान की। कीया सिरजनहार॥
दादु साच सूझइ नहीं। यों बूडा संसार॥ १५३॥
पुरुष बदे कामिनि किया। उस ही के उनहारि॥
कारज को सीझइ नहीं। दादू माथे मारि॥ १५४॥

कागद का मानस किया । छत्रपती सिरमौर ॥
राज पाट साधइ नहीँ । दादू परिहर और ॥ १५५ ॥
सकल भुवन भाँडे घने । चतुर चलावनहार ॥
दादू सो सूझइ नहीँ । तिसका वार न पार ॥ १५६ ॥
पहिली आप उपाय करि । न्यारा पद निर्बान ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस मिलि । बाँधा सकल बँधान ॥ १५७ ॥
नावँ नीति अनीति सब । पहिली बाँधे बंद ॥
पसू न जानहिँ पारधी । दादू रोंये बंद ॥ १५८ ॥
दादू बाँधे बेद बिधि । भरम करम उरझाइ ॥
मरजादा माहैँ रहइ । सुमिरन किया न जाइ ॥ १५९ ॥
दादु माया मिठबोलिनी । नय नय लागइ पाइ ॥
दादू पइठइ पेट मेँ । काटि करेजा खाइ ॥ १६० ॥
नारी नागनि जे डँसे । ते नर मुये निदान ॥
दादू कोइ जीवइ नहीँ । पूछउ सबइ सयान ॥ १६१ ॥
नारी नागिनि एक सी । बाघिनि बडी बलाइ ॥
दादू जे नर रत भये । तिन्हका सरबस खाइ ॥ १६२ ॥
नारी नैन न देखिये । मुख सोँ नावँ न लेहु ॥
कानो कामिनि जिन सुनउ । यह मन जान न देहु ॥ १६३ ॥
सुंदर खाये साँपिनी । केते येहि कलि माहिँ ॥
आदि अंत इन सब डँसे । दादू चेतइ नाहिँ ॥ १६४ ॥
दादू पइठइ पेट मेँ । नारी नागिनि होइ ॥
दादू प्रानी सब डँसे । काढि सकइ नहिँ कोइ ॥ १६५ ॥
माया साँपिनि सब डँसे । कनककामिनी होइ ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस लौँ । दादू बचइ न कोइ ॥ १६६ ॥
माया मारे जीव सब । खंड खंड करि खाइ ॥
दादू घट का नास करि । रोवइ जग पतिआइ ॥ १६७ ॥

बाबा कहि कहि के गिरइ । भाई कहि कहि खाइ ॥
पूत पूत कहि पी गई । पुरुषा जिन पतिआइ ॥ १६८ ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस की । नारी माता होइ ॥
दादू खाये जीव सब । जिन न पतीजे कोइ ॥ १६९ ॥
माया बहुरूपी नटिनि । सुर नर मुनि को मोहै ॥
ब्रह्मा बिस्नु महादेव बाहे । दादू बपुरा को है ॥ १७० ॥
माया फाँसी हाथ ले । बइठी गोपि छिपाइ ॥
जे क्रोधी जे प्रानियाँ । ताही के गल बाइ ॥ १७१ ॥
पुरुषा फाँसी हाथ करि । कामिनि के गल बाइ ॥
नारि कटारी कर गहइ । मारि पुरुष का खाइ ॥ १७२ ॥
नारी बैरनि पुरुष की । पुरुषा बैरी नारि ॥
अंतकाल दोनों मुये । दादू देखि बिचारि ॥ १७३ ॥
नारि पुरुष को ले मुई । पुरुषा नारी साथ ॥
दादू दोनों पचि गये । कछू न आया हाथ ॥ १७४ ॥
भवँरा लुबधी बास का । कमल बँधाना आइ ॥
दिन दस माहैं देखता । दोनों गये बिलाइ ॥ १७५ ॥
नारी पीवइ पुरुष कों । पुरुष नारि को खाइ ॥
दादू गुरु के ज्ञान बिन । दोनों गये बिलाइ ॥ १७६ ॥

इति माया को अंग संपूर्णम् ॥ १२ ॥

——*——

अथ साच को अंग ।

—— :o: ——

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
दादु दया जिन्ह के नहीं । बहुरि कहावइ साध ॥
जो मुख उनका देखिये । लागइ बहु अपराध ॥ २ ॥
मेहरि मुहब्बति मन नहीं । दिल के बज्र कठोर ॥
काले काफिर ते अहहिं । मोमिन मालिक और ॥ ३ ॥
कोई काहू जीव की । करइ आतमाघात ॥
साच कहूँ संसा नहीं । सोई दोजगि जात ॥ ४ ॥
नाहर सिंह सियार सब । केते मुसलमान ॥
मास खाइ मोमिन भये । बड़े मियाँ का ज्ञान ॥ ५ ॥
मासअहारी जो नरा । ते नर सिंह सियार ॥
बाग मँझार सुनहा सही । एता परतछ काल ॥ ६ ॥
मुई मार मानस घने । ते परतछ जम काल ॥
मेहरि दया नहिं सिंह दिल । कूकर काग सियाल ॥ ७ ॥
मासअहारी मद पिवइ । बिषय बिकारी सोइ ॥
दादू आतम राम बिन । दया कहाँ तें होइ ॥ ८ ॥
लंगर लोग लोभ सो लागइ । बोल सदा उनहूँ की भीर ॥
जोर जुलुम बीच बाट पर । आदि अंत उनहीं सी सीर ॥ ९ ॥
तन मन मारि रहे साईं सौं । तिनको देखि करइ ताजीर ॥
ये बडि बूझि कहाँ तें पाई । ऐसी कजा अउलिया पीर ॥१०॥
बे मेहर गुमराह गाफिल । गोस्त खुरदनी ॥
बे दिल बदकार आलम । हयात मुरदनी ॥ ११ ॥

छल करि बल करि धाइ करि । मारइ जेहि तेहि फेरि ॥
दादू ताहि न दीजिये । परइ न सगी पितेरि ॥ १२ ॥
दुनियाँ सोँ दिल बाँधि करि । बैठे दीन गवाँइ ॥
नेकी नावँ बिसारि करि । मरद कसाई खाइ ॥ १३ ॥
गर काटइ कलमा भरइ । आय बिचारा दीन ॥
पाँचो बखत निवाज गुजारइ । साबति नहीँ अकीन ॥ १४ ॥
दुनियाँ के पीछे पड़ा । दौड़ा दौड़ा जाइ ॥
दादू जिन पैदा किया । साहिब को छिटकाइ ॥ १५ ॥
कूकर जाके मन रमे । मीयाँ मुसलमान ॥
दादू सेया भंग मे । बीसारे रहिमान ॥ १६ ॥
आपस को मारइ नहीँ । पर को मारन जाइ ॥
दादु आप मारे बिना । कैसे मिलइ खुदाइ ॥ १७ ॥
भीतरि दुंदर भरि रहे । तिन्ह को मारइ नाहिँ ॥
साहिब के अरवाह को । ताको मारन जाहिँ ॥ १८ ॥
दादु मुये को मारिये । माया मुइ मुइ मार ॥
आपस को मारइ नहीँ । औरोँ को हुँसियार ॥ १९ ॥
जिस का था तिस को हुआ । तब काहे को दोस ॥
दादू बंदा बंदगी । मीयाँ ना कर रोस ॥ २० ॥
सेवक सिरजनहार का । साहिब का बंदा ॥
दादू सेवा बंदगी । दूजा का धंधा ॥ २१ ॥
सोइ काफिर जो बोलइ काफ । दिल अपनी नहिँ राखइ साफ ॥
साइँ को पहिचानइ नाहीँ । कूढ कपट सब उन्हहीँ माहीँ ॥२२॥
साईँ का फुरमान न मानइ । कहा पीय ऐसइ करि आनइ ॥
मन अपने मे समझत नाहीँ । निरखत चलइ आपनी छाहीँ ॥२३॥
जोर करइ मस्तकि न सतावइ । उसके दिल मेँ दरद न आवइ ॥
साईँ सेती नाहीँ नेह । गरब करइ अति अपनी देह ॥ २४ ॥

इन बातन को पाइये पीव । परथम ऊपर राखइ जीव ॥
जोर जुलुम करि कुटुँब जो खाई । सो काफिर दोजग में जाई॥२५
जाको मारन जाइये । सोई फिरि मारइ ॥
जाको मारन जाइये । सोई फिरि तारइ ॥ २६ ॥
दादू नफस नावँ सौं मारिये । गोस माल दे पंद ॥
दोइ है सो दूरि करि । तब घर में आनंद ॥ २७ ॥
मुसलमान जो राखइ मान । साईं का मानइ फुरमान ॥
सारों को सुखदाई होई । मुसलमान करि जानउँ सोई ॥ २८ ॥
मुसलमान मेहर गहि रहइ । सबको सुख की सही न दहइ ॥
मुआ न खाइ जिभवत नहिं मारइ । करइ बंदगी राह सँवारइ॥२६।
सो मोमिन मन में करि जानि । सत्य सबूरी बइसइ आनि ॥
चलइ साच सँवारइ बाट । तिनको खुलें भिस्त के पाट ॥ ३० ॥
सो मोमिन जो मोम दिल होई । साईं को पहिचानइ सोई ॥
जोर न करइ हराम न खाइ । सोई मोमिन भिस्त में जाइ ॥३१
जो हम नहीं गुजारते । तुमको का भाई ॥
सिर नाहीं कुछ बंदगी । कहु क्यों फरमाई ॥ ३२ ॥
अपने अमल्ल छूटिये । काहू के नाहीं ॥
सोई पीर पुकारसी । जो दूखइ माहीं ॥ ३३ ॥
कोई खाइ अघाइ करि । भूखे क्यों भरिये ॥
खूँटी पूगी आन की । आपइ क्यों मरिये ॥ ३४ ॥
फूटी नाव समुद्र में । सब डूबन लागे ॥
अपना अपना जीव ले । सब कोई भागे ॥ ३५ ॥
सिर सिर लागी अपने । कहु कवन बुझावइ ॥
अपना अपना साथ दे । साईं को भावइ ॥ ३६ ॥
साचा नावँ अलाह का । सोई सत करि जानि ॥
निहचल करि ले बंदगी । दादू सो परवानि ॥ ३७ ॥

आवट कूटा होत है । अवसर बीता जाइ ॥
दादू करि ले बंदगी । राखनहार खुदाइ ॥ ३८ ॥
इस कलि मँ केते होइ । गये हिंदू मुसलमान ॥
दादू साची बंदगी । झूठा सब अभिमान ॥ ३६ ॥
पोथी अपनी पाठ करि । हरि जस माहैँ लेख ॥
पंडित पारायन करइ । दादू कथहु अलेख ॥ ४० ॥
काया हमारी किताब कहिये । लिखि राखउ रहिमान ॥
मन हमारा मुल्ला कहिये । सुरता है सुभहान ॥ ४१ ॥
कया महल मेँ निमाज गुजारइ । तहाँ और न आवन पावइ ॥
मन मनि के नहँ तसबी फेरइ । तब साहिब के वह मन भावइ ॥४२॥
दिल दरिया मेँ कुसल हमारा । ऊजू करि चित लाऊँ ॥
साहिब आगे करउँ बंदगी । बेर बेर बलि जाऊँ ॥ ४३ ॥
पाँचउ संगि सँभारूँ साईँ । तन मन तो सुख पाऊँ ॥
प्रेम पियारा पिय जो देवइ । कलमा ये लेइ लाऊँ ॥ ४४ ॥
सोभा कारन सब करइ । रोजा बाँग निवाज ॥
मुआ न एकइ आहि सो । साहिब सेतीँ काज ॥ ४५ ॥
रोज हजूरी होइ रहु । काहे करइ कलाप ॥
मुल्ला तहाँ पुकारिये । अरस इलाही आप ॥ ४६ ॥
हरदम हाजिर होना बाबा । जब लग जीवइ बंदा ॥
दादू मंदिर साईँ सेँती । पाँच बखत का धँधा ॥४७॥
हिंदू मारग कहइ हमारा । तुरुक कहइ रह मेरी ॥
कहाँ पंथ है कहो अलख का । तुम्ह तो ऐसी हेरी ॥ ४८ ॥
दो दरोग लोग को भावइ । साईँ साच पियारा ॥
कौन पंथ हम चलइ कहो धौँ । संतो करहु बिचारा ॥ ४६ ॥
खंड खंड करि ब्रह्म को । पख पख लीया बाँट ॥
दादू पूरनब्रह्म तजि । बाँधे भरम कि गाँठ ॥ ५० ॥

जीवत दीसइ रोगिया । मूआ पीछे जाइ ॥
दादू दुख के पाढ़ में । ऐसी दारू लाइ ॥ ५१ ॥
सो दारू किस काम की । जा तें दरद न जाइ ॥
दादू काटइ रोग को । सो दारू ले लाइ ॥ ५२ ॥
अनभव काटइ रोग को । अनहद उपजइ आइ ॥
सेभे काजर निर्मला । पीवइ रुचि लव लाइ ॥ ५३ ॥
अनभव सोई उपजई । सोइ सबद तत सार ॥
सुननहि तेहि साहिब मिलइ । मन के जाहिँ बिकार ॥ ५४ ॥
ओखद खाइ न पचि रहइ । विषम ब्याधि क्यों जाइ ॥
दादू रोगी बावरा । दोस बैद को लाइ ॥ ५५ ॥
एक सेर का काथढा । क्यों ही भखा न जाइ ॥
भूख न भागी जीव की । दादू केता खाइ ॥ ५६ ॥
पसु की नाईं भरि भरि खाइ । ब्याधि घनेरी बढ़ती जाइ ॥
पसु की नाईं करइ अहार । दादू बाढइ रोग अपार ॥५७॥
रामरसायन भरि भरि पीवइ । दादू जोगी जुग जुग जीवइ ॥५८॥
दादू चारइ चित दिया । चिंतामनि को भूलि ॥
जनम अमोलिक जात है । बइठे माँझी फूलि ॥ ५९ ॥
भरि अघोरी भाव की । बइठा पेट फुलाइ ॥
दादू सूकर स्वान ज्यों । ज्यों आवइ त्यों खाइ ॥ ६० ॥
खाटा मीठा खाइ करि । स्वाद चित दिया ॥
इन में जीव बिलंबिया । हरि नावँ न लिया ॥ ६१ ॥
भगति न जानइ राम की । इंद्री के आधीन ॥
दादू बंधा स्वाद सों । ताते नाव न लीन ॥ ६२ ॥
अपना नीका राखिये । औरना दिया बहाइ ॥
अपने सेतीं काज है । भावइ तिधरि मैं जाइ ॥ ६३ ॥
जो हम जाना एक करि । काहे लोक रिसाइ ॥

मेरा था सो मैं लिया । लोगों का का जाइ ॥ ६४ ॥
दादू दो दो पद किये । साखी भी दो चार ॥
हमको अनभव ऊपजी । हम ज्ञानी संसार ॥ ६५ ॥
सुनि सुनि परचे ज्ञान के । साखी सबदा होइ ॥
तब हीं आपा उपजई । हम से और न कोइ ॥ ६६ ॥
सो उपजी किस काम की । जो जन करइ कलेस ॥
साखी समुझइ साधु की । ज्यों रसना रस सेस ॥ ६७ ॥
पद जोड़इ साखी कहइ । विषय न छाडइ जीव ॥
पानी घालि बिलोइये । क्यों करि निकसइ घीव ॥ ६८ ॥
पद जोडे का पाइये । साखी कहे का होइ ॥
सत्त सिरोमनि साइँयाँ । तत्त न चीन्हा सोइ ॥ ६९ ॥
कहिबे सुनिबे मन खुसी । करिबा औरइ खेल ॥
बातें तिमिर न भाजई । दीया बाती तेल ॥७०॥
करिबेवाले हम नहीं । कहिबे को हम सूर ॥
कहिबा हम तें निकट है । करिबा हम तें दूर ॥ ७१ ॥
कहे कहे का होत है । कहे न सीझइ काम ॥
कहा कहे का पाइये । हृदय न आवइ राम ॥ ७२ ॥
कहइ राम कहां तें ओडिबा । राम कहाँ ते साखी ॥
राम कहाँ ते गाइबा । राम कहाँ ते राखी ॥ ७३ ॥
दादू सुरता घरि नहीं । बकत बकइ सो बादि ॥
बकता सुरता एक रस । कथा कहावइ आदि ॥ ७४ ॥
बकता सुरता घरि नहीं । कहइ सुनइ को राम ॥
दादू यह मन थिर नहीं । बादि बकइ बेकाम ॥ ७५ ॥
देखा देखी सब चले । पार न पहुँचा जाइ ॥
दादू आसनि पहिरि के । फिरि फिरि बहके आइ ॥ ७६ ॥
अंतर सरझे समझ करि । फिरि नहिं अरझे जाइ ॥

बाहरि सुरझे देखता । बहुरि अरुझे आइ ॥ ७७ ॥
आतम लावइ आप सों । साहिब सेती नाहिं ॥
दादू कोइ निबहइ नहीं । दोनों निहफल जाहिं ॥ ७८ ॥
तूँ मुझको मोटा कहइ । तुझे बडाई मान ॥
साईं को समुझइ नहीं । दादू झूठा ज्ञान ॥ ७९ ॥
सेवक नावँ बुलाइये । सेवा सपने नाहिं ॥
नावँ धराये का भया । एक नहीं मन माहिं ॥८० ॥
नावँ धरावइ दास का । दासा तन तें दूर ॥
दादू कारज क्यों सरइ । हरि सों नहीं हजूर ॥ ८१ ॥
भगत न होवइ भगति बिन । दासा तन बिन दास ॥
बिन सेवा सेवक नहीं । दादू झूठी आस ॥ ८२ ॥
रामभगति भावइ नहीं । अपनी भगति का भाव ॥
रामभगति मुख सों कहइ । खेलइ अपना दाव ॥ ८३ ॥
भगति निराली रह गई । भूलि पडे बन माहिं ॥
भगति निरंजन राम की । दादू पावइ नाहिं ॥ ८४ ॥
सोइ दसा कतहूँ रही । जेहि दिसि पहुँचे साधु ॥
मैं तैं मूरख गहि रहे । लोभ बढाई बाध ॥ ८५ ॥
दादू राम बिसारि करि । किये बहुत अपराध ॥
लाजों मरिगे संत सब । नावँ हमारा साध ॥८६ ॥
मनसा के पकवान सों । क्यों पेट भरावइ ॥
ज्यों कहिये त्यों कीजिये । तब ही बनि आवइ ॥ ८७ ॥
मिस्री मिस्री कीजिये । मुख मीठा नाहीं ॥
मीठा तब ही होइगा । छिटकावइ माहीं ॥ ८८ ॥
बातही पहुँचइ नहीं । घर दूर पयाना ॥
मारग पंथ उठि चले । दादू सोई सयाना ॥ ८९ ॥
बातें सब कुछ कीजिये । अंत कछू ना देखइ ॥

मनसा बाचा करमना। तब लागे लेखइ ॥ ९० ॥
कासों कहि समुझाइये। सब कोइ चतुर सुजान ॥
कीरी कुंजर आदि ले। नाहीं कोई अजान ॥ ॥ ९१ ॥
सूना घट सोधी नहीं। पंडित ब्रह्मा पूत
अगम निगम सब सब कथइ। घर में नाचइ भूत ॥ ९२ ॥
पढे न पावइ परम गति। पढे न लाँघइ पार ॥
पढे न पहुँचहिँ प्रानियाँ। दादू पीर पुकार ॥ ९३ ॥
दादू निबरे नावँ बिन। झूठा कहते ज्ञान ॥
बइठे सिर खाली करहिँ। पंडित बेद पुरान ॥ ९४ ॥
केते पुस्तक पाढि मुये। पंडित बेद पुरान ॥
केते ब्रह्मा कथि गये। नाहीं राम समान ॥ ९५ ॥
सब हम देखा सोधि करि। बेद कुरानों माहिँ ॥
जहाँ निरंजन पाइये। देस दूर इत नाहिँ ॥ ९६ ॥
पढि पढि थाके पंडिता। किन्हहुँ न पाया पार ॥
कथि कथि थाके मुनिजना। दादू नाहिँ अधार ॥ ९७ ॥
काजी कजा न जानहीं। कागद हाथ कतेब ॥
पढते पढते दिन गये। भीतरि नाहीं भेव ॥ ९८ ॥
मसि कागद के आसरे। क्यों छूटइ संसार ॥
राम बिना छूटइ नहीं। दादू भरम बिकार ॥ ९९ ॥
कागद काले करि मुये। केते बेद पुरान ॥
एकइ अच्छर पीय का। दादू पढइ सुजान ॥ १०० ॥
कहते कहते दिन गये। सुनते सुनते जाइ ॥
दादू ऐसा कोइ नहीं। कहि सुनि राम समाइ ॥ १०१ ॥
मौन गहइ ते बावरे। बोले खरे अयान ॥
सहजइ रहते राम सौं। दादू सोई सयान ॥ १०२ ॥
कहते सुनते दिन गये। होइ कछू नहिँ आवा ॥

दादू हरि की भगति बिन। प्रानी पछतावा ॥ १०३ ॥
दादु कहानी और कुछ। करनि करइ कुछ और ॥
तिन्ह ते मेरा जिव डरइ। जिन्हके ठीक न ठौर ॥ १०४ ॥
अंतर गति औरइ कछू। मुख रसना कछु और ॥
दादू करनी और कुछ। तिन्ह को नाहीँ ठौर ॥ १०५ ॥
राम मिलन को कहत हैँ। करतब है कछु और ॥
ऐसे पिय क्योँ पाइये। समुझि लेहु मन बौर ॥ १०६ ॥
बगनी भंगा खाइ करि। मतवाले माजी ॥
पइका नाहीँ गाठडी। पतिसाही खाजी ॥ १०७ ॥
दादू ढोटा दालर्दा। लाखोँ का व्यापार ॥
पइका नाहीँ गाठडी। सिरइ साहूकार ॥ १०८ ॥
ये सब हैँ किस पंथ मेँ। धरती अरु असमान ॥
पानि पवन दिन रात का। चंद सूर रहिमान ॥ १०९ ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस का। कौन पंथ गुरुदेव ॥
साईँ सिरजनहार तूँ। कहिये अलख अभेव ॥ ११० ॥
महमद थे किस दीन मेँ। जबरईल किस राह ॥
इन्हके मुरसिद पीर को। कहिये एक अलाह ॥ १११ ॥
ये सब किसके होइ रहे। यह मेरे मन माहिँ ॥
अलख इलाही जगत गुरु। दूजा कोई नाहिँ ॥ ११२ ॥
मोरेँ ही औलाद के। थी पास दइ बीयँनि ॥
सो तूँ माया ना घुरइ। जो मीया मीयँनि ॥ ११३ ॥
आइ रोजी ज्योँ गइ। साहिब का दीदार ॥
गहिरा लोगो कार मेँ। देखइ नहीँ गवाँर ॥ ११४ ॥
सोई सेवक राम का। जिसे न दूजी चींत ॥
दूजा को भावइ नहीँ। एक पियारा मीत ॥ ११५ ॥
अपनी अपनी जाति सोँ। सब कोइ बैसइ पाँति ॥

दादू सेवक राम का। ता को नहीँ भरौंति ॥ ११६ ॥
चोर अन्याई मसखरा। सब मिलि बैसइ पाँति ॥
दादू सेवक राम का। तिन्ह सोँ करइ भराँति ॥ ११७ ॥
सूप बजाये क्योँ टलइ। घर मेँ बड़ी बलाइ ॥
काल जाल इस जीव का। बातन ही क्योँ जाइ ॥ ११८ ॥
साँप गया सहिनान को। सब मिलि मारइ लोक ॥
दादू ऐसा देखिये। कुल का डगरा फोक ॥ ११९ ॥
दादू दोनोँ भरम है। हिंदू तुरुक गवाँर ॥
जो दुहुँ वातेँ रहित हैँ। सो गहइ तत्त बिचार ॥ १२० ॥
अपना अपना करि लिया। भंजन माहैँ बाहि ॥
दादू एकइ कूपजल। मन का भरम उठाइ ॥ १२१ ॥
पानी के बहु नाम धरि। नाना बिधि की जाति ॥
बोलनहारा कौन है। कहहु धौँ कहाँ समाति ॥ १२२ ॥
पूरन ब्रह्म बिचारिये। सकल आतमा एक ॥
काया के गुन देखिये। नाना बरन अनेक ॥ १२३ ॥
लीला राजा राम की। खेलहिँ सबही संत ॥
आपा पर एकइ भये। छूटी सबइ भरंत ॥ १२४ ॥
भाव भगति उपजइ नहीँ। साहिब का परसंग ॥
बिषय बिकार छुटइ नहीँ। सो कैसा सतसंग ॥ १२५ ॥
बासन बिषय बिकार के। तिन को आदर मान ॥
संगी सिरजनहार के। तिन सोँ गरब गुमान ॥ १२६ ॥
अंधे को दीपक दिया। तौ भी तिमिर न जाइ ॥
सोधी नहीँ सरीर की। ता सन का समझाइ ॥ १२७ ॥
कहिये कुछ उपकार को। मानइ अवगुन दोक ॥
अंधे कूप बताइयाँ। सत्त न मानइ लोक ॥ १२८ ॥
कारर खेत न उपजई। जो बोवइ सौ बार ॥
दादू हानी बीज का। का पचि मरहिँ गवाँर ॥ १२९ ॥

कंकर पत्थर सेइया। अपना मूल गवाँइ॥
अलख देव अंतर बसइ। क्या दूजे जग जाइ॥ १३० ॥
पत्थर पीवइ धोइ कर। पत्थर पूजइ प्रान॥
अंत काल पत्थर भये। बहु बूडे येहि ज्ञान॥ १३१ ॥
कंकर बाँधी गाँठरी। हीरे के बिस्वास॥
अंत काल हरि जौहरी। दादू सूत कपास॥ १३२ ॥
पहिले पूजइ ढाढसी। अब भी ढाढस बानि॥
आगे ढाढस होइगा। दादु सत्त करि जानि॥ १३३ ॥
दादू पैंडे पाप के। कधी न दीजइ पावँ॥
पैंडे मेरा पी मिलइ। तेहि पैंडे का चाव॥ १३४ ॥
सुकरित मारग चालना। बुरा न कबहूँ होइ॥
अम्रित खाता प्रानियाँ। मुआ न सुनिया कोइ॥ १३५ ॥
कुछ नाहीं का नावँ का। जो धरिये सो झूट॥
सुर नर मुनि सब बाँधिया। लोका आवट कूट॥ १३६ ॥
कुछ नाहीं का नावँ धरि। भरमा सब संसार॥
साच झूठ समझइ नहीं। ना कुछ किया बिचार॥ १३७ ॥
कोई दौडे द्वारिका। कोई कासी जाहिं॥
कोई मथुरा को चले। साहिब घट ही माहिं॥ १३८ ॥
पूजनहारे पास हैं। देही माहैं देव॥
दादू ताको छाडि कर। बाहर माडी सेव॥ १३९ ॥
ऊपर आलम सब करहिं। साधू जन घट माहिं॥
दादू एता अंतरा। ता तें बनती नाहिं॥ १४० ॥
दादू सब थे एक के। सो एक न जाना॥
जने जने का होइ गया। यह जगत दिवाना॥ १४१ ॥
झूठा साचा करि लिया। बिष अम्रित जाना॥
दुख को सुख सब कोइ कहइ। ऐसा जगत दिवाना॥ १४२ ॥

सूधा मारग साच का। साचा होइ सो जाइ ॥
झूठा कोई ना चलइ। दादू दिया दिखाइ ॥ १४३ ॥
साहिब सौं साचा नहीं। यह मन झूठा होइ ॥
दादू झूठे बहुत हैं। साचा बिरला कोइ ॥ १४४ ॥
साचा अंग न ठेलिये। साहिब मानइ नाहिं ॥
साचा सिर पर राखिये। मिलि रहिये ता माहिं ॥ १४५ ॥
जो कोइ ठेलइ साच कौं। साचा रहइ समाइ ॥
कउडी भर क्यों दीजिये। रतन अमोलिक जाइ ॥ १४६ ॥
साचे साहिब को मिले। साचे मारग जाइ ॥
साचे सौं साचा भया। साचे लिये बुलाइ ॥ १४७ ॥
साचा साहिब सेइये। साची सेवा होइ ॥
साचा दरसन पाइये। साचा सेवक सोइ ॥ १४८ ॥
साचे का साहिब धनी। समरथ सिरजनहार ॥
पाखँड की यह पिरथिवी। परपँच का संसार ॥ १४९ ॥
झूठा परगट साचा छानइ। तिनकी दादू राम न मानइ ॥१५० ॥
पाखँडि पिय ना पाइये। अंतर साच न होइ ॥
ऊपर तें क्योंही रहहु। भीतर के मल धोइ ॥ १५१ ॥
साच अमर जुग जुग रहइ। दादू बिरला कोइ ॥
झूठ बहुत संसार में। उतपति परलय होइ ॥ १५२ ॥
दादू झूठा बदलिये। साच न बदला जाइ ॥
साचा सिर पर राखिये। साधु कहहिं समुझाइ ॥ १५३ ॥
साच न सूझइ जब लगा। तब लग लोचन अंध ॥
दादू मुकता छाडि करि। गल में घाला फंध ॥ १५४ ॥
साच न सूझइ जब लगा। तब लग लोचन नाहिं ॥
दादू निर्बँध छाडि करि। बँधा होइ पख माहिं ॥ १५५ ॥
एक साच सौं गह गही। जीवन मरन निबाहि ॥
दादू दुखिया राम बिन। भावइ तीथरि जाइ ॥ १५६ ॥

कानहिँ छानहिँ कीजिये । चौडे परगट होइ ॥
दादू पैठि पताल मेँ । बुरा करइ जिन कोइ ॥ १५७ ॥
अनकीया लागइ नहीँ । कीया लागइ आइ ॥
साहिब के दर न्याव है । जो कुछ रामरजाइ ॥ १५८ ॥
सोइ जन साधू सिद्ध सो । सोइ सतबादी सूर ॥
सोइ मुनिवर दादू बडे । सनमुख रहनि हजूर ॥ १५९ ॥
सोइ जन साचे सोइ सती । सो साधक सो सुजान ॥
सोइ ज्ञानी सोइ पंडिता । जो रटहीँ भगवान ॥ १६० ॥
सोइ जोगी सोइ जंगमा । सोइ सोफी सोइ सेख ॥
संन्यासी सोइ सेवडा । दादू एक अलेख ॥ १६१ ॥
सोइ काजी सोई मुला । सोइ मोमिन मुसलमान ॥
सोई सयाने सब भले । जो रहते रहिमान ॥ १६२ ॥
राम नाम को बेचन बैठे । तातेँ मढा है हाट ॥
साईँ सो सौदा करइ । दादू खोलि कपाट ॥ १६३ ॥
बिच केसरि खाली करइ । पूरे सुख संतोष ॥
दादू सुध बुध आतमा । ताहि न दीजइ दोष ॥ १६४ ॥
सुध बुध सोँ दुख पाइये । साध बिबेकी होइ ॥
दादू ये बिच के बुरे । दाधेँ रीगे सोइ ॥ १६५ ॥
जो कोई हरि नावँ मेँ । हम को हानी नाइ ॥
ता तेँ तुम्ह से डरत हैँ । क्योँ ही टलइ बलाइ ॥ १६६ ॥
एक राम छाडइ नहीँ । छाडइ सकल बिकार ॥
दूजा सहजहिँ होइ सब । दादू का मत सार ॥ १६७ ॥
जो तूँ चाहइ राम को । एक मना आराधु ॥
दादू दूजा दूर करि । मन इंद्री करि साधु ॥ १६८ ॥
कबिर बिचारा कहि गया । बहुत भाँति समुझाइ ॥
दादू दुनिया बावरी । ता के संग न जाइ ॥ १६९ ॥

पावहिँगे उस ठौर को। लाँघहिँगे यह घाट॥
दादू क्या कहि बोलिये। आज बीचही बाट॥ १७० ॥
साचा राता साच सोँ। झूठा राता झूठ॥
दादू न्याव न बेरिये। सब साधू को पूछ॥ १७१ ॥
जे पहुँचे ते कहि गये। तिनकी एकइ बात॥
सबइ सयाने एक मत। उनकी एकइ जात॥ १७२ ॥
जे पहुँचे ते पूछिये। तिनकी एकइ बात॥
सब साधू का एक मत। बीच के बारह बाट॥ १७३ ॥
सबइ सयाने कहि गये। पहुँचे का घर एक॥
दादू मारग मानि छे। तिनकी बात अनेक॥ १७४ ॥
सूरुज साखी भूत है। साच करइ परकास॥
चोर डरहिँ चोरी करहिँ। रैन तिमिर का नास॥ १७५ ॥
चोर न भावइ चाँदनी। जिनि उँजियारा होइ॥
सूते का सब धन हरउँ। मुझे न देखइ कोइ॥ १७६ ॥
घट घट दादू कहि समझावइ। जैसा करइ सो तैसा पावइ॥१७७

इति साच को अंग संपूर्णम्॥ १३ ॥

——:o:——

अथ भेष कौ अंग ।

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
दादू बूडे ज्ञान सब । चतुराई जर जाइ ॥
अंजन मंजन फूँकि दे । रहहु राम लव लाइ ॥ २ ॥
राम बिना फीके लगहिं । करनी कथनी ज्ञान ॥
सकल अबिरथा कोट करि । दादू जोगवइ ध्यान ॥ ३ ॥
ज्ञानी पंडित बहुत हैं । दाता सूर अनेक ॥
दादू भेष अनंत हैं । लागि रहा सो एक ॥ ४ ॥
कोरा कलस मलाइ का । ऊपरि चित्र अनेक ॥
का कीजइ सो बस्त्र बिन । ऐसे नाना भेष ॥ ५ ॥
बाहर दादू भेष बिन । भीतर बस्त्र अगाध ॥
सो ले हिरदय राखिये । दादू सनमुख साध ॥ ६ ॥
भाँडा भरि भरि बस्तु सों । महँगे मोल बिकाइ ॥
खाली भाँडा बस्तु बिन । कउडी बदलइ जाइ ॥ ७ ॥
कनक कलस बिष सों भरा । सो किस आवइ काम ॥
सो धन कूटा चाम का । जा में अम्रित राम ॥ ८ ॥
दादू देखइ बस्तु को । बासन देखइ नाहिं ॥
दादू भीतर भरि धरा । सो मेरे मन माहिं ॥ ९ ॥
जो तूँ समझइ तो कहूँ । साचा एक अलेख ॥
डार पात तजि मूल गहि । का दिखलावइ भेख ॥ १० ॥
सब दिखलावहिं आप को । नाना भेष बनाइ ॥
आपा मेटन हरि भजन । तेहि दिसि कोई न जाइ ॥ ११ ॥

सोइ दसा कतहूँ रही । जेहि दिसि पहुँचे साध ॥
मैं तो मूरख गहि रहा । लोभ बड़ाई बाद ॥ १२ ॥
भेष बहुत संसार में । हरिजन बिरला कोइ ॥
हरिजन दाता राम सों । दादू एकइ होइ ॥ १३ ॥
हीरा रीझइ जौहरी । खल रीझइ संसार ॥
स्वामि साधु यह अंतरा । दादू सत्त बिचार ॥ १४ ॥
स्वामि साधु बहु अंतरा । जेता धरति अकास ॥
साधू दाता राम सों । स्वामि जगत की आस ॥ १५ ॥
स्वामी सब संसार है । साधू बिरला कोइ ॥
जैसे चंदन बासना । बन बन कहीं न होइ ॥ १६ ॥
स्वामी सब संसार है । साधू कोई एक ॥
हीरा दूर दिसंतरा । कंकर और अनेक ॥ १७ ॥
स्वामी सब संसार है । साधु समंदा पार ॥
अनल पंछि कहँ पाइये । पंछी कोटि हजार ॥ १८ ॥
स्वामी सब संसार है । साधू सोधि सुजान ॥
पारस परदे सों भया । दादू बहुत पखान ॥ १९ ॥
दादू चंदन बन नहीं । सूरन के दल नाहिं ॥
सकल समँद हीरा नहीं । त्यों साधू जग माहिं ॥ २० ॥
जो साईं का होइ रहइ । साईं तिसका होइ ॥
दादू दूजी बात सब । भेष न पावइ कोइ ॥ २१ ॥
स्वामि सगाई कुछ नहीं । राम सगाई साच ॥
दादू नाता नावँ का । दूजइ अंग न राच ॥ २२ ॥
दादू एकइ आतमा । साहिब है सब माहिं ॥
साहिब के नाते मिलइ । भेष पंथ के नाहिं ॥ २३ ॥
माला तिलक सो कुछ नहीं । काहू सेती काम ॥
अंतर मेरे एक है । अहनिसि उस का नाम ॥ २४ ॥

भेष धरे मिथ्या बोलइ। निंदा पर अपवाद॥
साचे को झूठा कहइ। लागइ बहु अपराध॥ २५॥
कबहूँ कोइ जिन मिलइ। भगत भेष सों जाइ॥
जीव जनम का नास है। कहइ अम्रित बिष खाइ॥ २६॥
पहुँचे पूत पठाउ करि। नट ज्यों काछा भेष॥
खबरि न पाई खोज की। हम को मिला अलेख॥ २७॥
माया कारन मूँड मुडाया। यह तो जोग न होइ॥
पारब्रह्म सों परचा नाहीं। कपट न सीझइ कोइ॥ २८॥
पीय न पावइ बावरी। रचि रचि करइ सिँगार॥
दादू फिरि फिरि जगत सों। सो करैगी बिभिचार॥ २९॥
प्रेम प्रीति अउ नेह बिन। सब झूठे सिँगार॥
दादू आतम रत नहीं। क्यों मानइ भरतार॥ ३०॥
जग दिखलावइ बावरी। षोडस करइ सिँगार॥
तहँ न सँवारइ आप को। जहँ भीतर भरतार॥ ३१॥
सुध बुध जीवधि जाइ करि। माला सकल निबाहि॥
दादू माया ज्ञान सों। स्वामी बइठा खाइ॥ ३२॥
जंगम जोगी से बड़े। बोध सन्यासी सेष॥
षट दरसन सब राम बिन। सबइ कपट के भेष॥ ३३॥
सेष मँसा एक अवलिया। पैगंबर सब पीर॥
दरसन सों परसन नहीं। अजहूँ बैली तीर॥ ३४॥
नाना भेष बनाइ करि। आपा देखि दिखाइ॥
दादू दूजा दूर करि। साहिब सों लव लाइ॥ ३५॥
देखा देखी लोक सब। केते आवा जाहिं॥
राम सनेही ना मिलइ। जो निज देखे माहिं॥ ३६॥
सब देखइ अस्थूल को। यह ऐसा आकार॥
सूच्छम सहज न सूझई। निराकार निरधार॥ ३७॥

बाहर का सब देखिये । भीतर लखा न जाइ ॥
बहर दिखाया लोक का । भीतर राम दिखाइ ॥ ३८ ॥
यह पारिख का ऊपजी । भीतर की यह नाहिँ ॥
अंतर की जानइ नहीँ । ता तेँ खोटा खाहिँ ॥ ३९ ॥
सच बिन साईँ ना मिलइ । भावइ भेष बनाइ ॥
भावइ कर ऊरधमुखी । भावइ तीरथ जाइ ॥ ४० ॥
साचा हरि का नावँ है । सो ले हिरदय राखि ॥
पाखँड परपँच दूर करि । सब साधू की साखि ॥ ४१ ॥
झूठा राता झूठ सोँ । साचा हाता साच ।
येता अंध न जानहीँ । कहँ कँचन कहँ काँच ॥ ४१ ॥
हिरदय की हरि लेइगा । अंतरजामी राइ ॥
साच पियारा राम को । कोटिक करि दिखलाइ ॥ ४२ ॥
दादू मुख की ना गहइ । हिरदय की हरि लेइ ॥
अंतर सूधा एक सोँ । बोला दोस न देइ ॥ ४३ ॥
सब चतुराई देखिये । जो कुछ कीजइ आन ॥
मन गहि राखइ एक सोँ । दादू साधु सुजान ॥ ४४ ॥
सबद सुई सुरता धगा । काया कंठा लाइ ॥
जोगी जुग जुग पहिरहीँ । कबहूँ फाटि न जाइ ॥ ४५ ॥
ज्ञान गुरू का गूदडी । सबद गुरू का भेष ॥
अतिथ हमारी आतमा । दादू पंथ अलेख ॥ ४६ ॥
इस्क अजब अवलाद है । दरदवंत दरबेस ॥
दादू सिका सबुर है । अकल पीर उपदेस ॥ ४७ ॥

इति भेष को अंग संपूर्णम् ॥ १४ ॥

———:o:———

अथ साधु को अंग ।

——:o:——

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
निराकार मन सुरति सों । प्रेम प्रीति सों सेव ॥
जो पूजइ आकार को । साधू परतछ देव ॥ २ ॥
भोजन दीजइ देह को । लिया न मन बिस्राम ॥
साधू के मुख मेलिये । पाया आतमराम ॥ ३ ॥
ज्यों यह काया पीव की । त्यों साईं के साध ॥
दादू सब संतोषिये । माहिं आप अगाध ॥ ४ ॥
साधू जन संसार में । भव जल बोहित अंग ॥
दादू तेते ऊधरे । जेते बइठे संग ॥ ५ ॥
साधू जन संसार में । सीतल चंदन बास ॥
दादू केते ऊधरे । जो आये उन पास ॥ ६ ॥
साधू जन संसार में । हीरा जैसा होइ ॥
दादू केते ऊधरे । संगति आये सोइ ॥ ७ ॥
साधू जन संसार में । पारस परगट गाइ ॥
दादू केते ऊधरे । जेते परसे आइ ॥ ८ ॥
रूख बिरिछ बन राइ सब । चंदन पासइ होइ ॥
दादू बास लगाइ करि । किये सुगंधे सोइ ॥ ९ ॥
जहाँ रेंड अरु आक थे । चंदन ऊगा माहिं ॥
दादू चंदन करि लिये । आक कहइ कोइ नाहिं ॥ १० ॥
साधु नदी जल रामरस । तहाँ पखारे अंग ॥
दादू निरमल मल गया । साधू जन के संग ॥ ११ ॥

साधू बरसइ रामरस। अम्रित बानी आइ॥
दादू दरसन देखता। त्रिविध ताप तन जाइ॥ १२॥
जगत बिचारा जात है। बहता लहर तरंग॥
भेरइ बइठा ऊबरै। सत साधू के संग॥ १३॥
दादू नेडा परम पद। साधू संगति होइ॥
दादू सहजइ पाइये। सेवत सनमुख सोइ॥ १४॥
दादू नेडा परम पद। साधू जन के साथ॥
दादू सहजइ पाइये। परम पदारथ हाथ॥ १५॥
साधु मिलइ तब उपजई। हिरदय हरि का भाव॥
दादू संगति साधु की। जब हरि करइ पसाव॥ १६॥
साधु मिलइ तब उपजई। हिरदय हरि का हेत॥
दादू संगति साधु की। क्रिपा करइ तब देत॥ १७॥
साधु मिलइ तब उपजई। प्रेम भगति रुचि होइ॥
दादू संगति साधु की। दया करि देवइ सोइ॥ १८॥
साधु मिलइ तब उपजई। हिरदय हरि की प्यास॥
दादू संगति साधु की। अबिगति पूरे आस॥ १९॥
साधु मिले तब हरि मिले। सब सुख आनँदमूर॥
दादू संगति साधु की। राम रहा भरपूर॥ २०॥
परम कथा उस एक की। दूजा नाहीँ आन॥
दादू तन मन लाइ करि। सदा सुरति रस पान॥ २१॥
प्रेमकथा हरि की कहइ। करइ भगति लव लाइ॥
पिवइ पिलावइ रामरस। सो जन मिलवइ आइ॥ २२॥
पिवइ पिलावइ रामरस। प्रेम भगति गुन गाइ॥
नित्य कथा हरि की कहइ। हेत सहित लव लाइ॥ २३॥
आन कथा संसार की। हमहिँ सुनावइ आइ॥
तिसका मुख दादू कहइ। दइ न दिखावइ भाइ॥ २४॥

मुख दिखलाई साधु की। तुम्हहीँ मिलवइ आइ॥
तुम्ह माहीँ अंतर करइ। दइ न दिखावइ आइ॥ २५॥
जब दरसो तब दीजियो। तुम्ह पै मागहुँ एह॥
दिन प्रति दरसन साधु का। प्रेम भगति दृढ देह॥ २६॥
साधु सपीडा मन करइ। सतगुरु सबद सुनाइ॥
मीरा मेरा मिहर करि। अंतर बिरह उपाइ॥ २७॥
ज्यौँ ज्यौँ होवइ त्यौँ कहइ। घट बध कहइ न जाइ॥
दादू सो सुध आतमा। साधू परसइ आइ॥ २८॥
साहिब सौँ सनमुख रहइ। सत संगति मेँ आइ॥
दादू साधू सब कहहिँ। सो निहफल क्योँ जाइ॥ २९॥
ब्रह्म गाइ त्रिन लोक मेँ। साधू असतन पान॥
मुख मारग अम्रित झरइ। कत ढूँढइ सो आन॥ ३०॥
दादू पाया प्रेमरस। साधू संगति माहिँ॥
फिरि फिरि देखे लोक सब। यह रस कतहूँ नाहिँ॥ ३१॥
जिस रस को मुनिवर मरहिँ। सुर नर करहिँ कलाप॥
सो रस सहजइ पाइये। साधू संगति आप॥ ३२॥
संगति बिन सीझइ नहीँ। कोटि करइ जो कोइ॥
दादू सतगुरु साधु बिन। कबहुँ सुध नहिँ होइ॥ ३३॥
दादू नेडा दूर तेँ। अबिगति का आराध॥
मनसा बाचा करमना। दादू संगति साध॥ ३४॥
सरग न सीतल होइ मन। चंद न चंदन पास॥
सीतल संगति साधु की। कीजइ दादू दास॥ ३५॥
दादू सीतल जल नहीँ। हिम नहिँ सीतल होइ॥
दादू सीतल संत जन। राम सनेही सोइ॥ ३६॥
दादू चंदन कब कहा। अपना प्रेम प्रकास॥
येहि दिसि परगट होइ रहा। सीतल गंध सुबास॥ ३७॥

दादू पारस कब कहा। मुझ तें कंचन होइ ॥
पारस परगट होइ रहा। साच कहइ सब कोइ ॥ ३८ ॥
तन में मन भूला नहीं। पंच न भूला प्रान ॥
साधु सबद क्यौं भूलिये। रे मन मूढ़ अजान ॥ ३९ ॥
रतन पदारथ मनि मोती। हीरहु का है दरिया ॥
चिंतामनि चित रामधन। घाट अम्रित रस भरिया ॥ ४० ॥
समरथ सूरा साधु सौं। मन मस्तक धरिया ॥
दादू दरसन देखना। सब कारज सरिया ॥ ४१ ॥
धरती अंबर रात दिन। रबि ससि बिनवहिं सीस ॥
दादू बलि बलि बरनहीं। जो सुमिरहिं जगदीस ॥ ४२ ॥
चंद सूर सिजदा करहिं। नावँ अलह का लेइ ॥
दादू जिमि असमान सब। उन पाऊँ सिर देइ ॥ ४३ ॥
जो जन राते राम सौं। तिनकी मैं बलिजावँ ॥
दादू उन पर वारने। लागि रहहिं हरिनावँ ॥ ४४ ॥
जो जन हरि के रँग रँगे। सो रँग कभी न जाइ ॥
सदा सुरँगे संत जन। रँग में रहे समाइ ॥ ४५ ॥
दादू दाता राम का। अबिनासी रँग माहिँ ॥
सब जग धोबी धोइ मरहिँ। तौ भी छूटइ नाहिँ ॥ ४६ ॥
साहिब किया सो क्यौं मिटइ। सुंदर सोभा रंग ॥
दादू धोवहिं बावरे। दिन दिन होइ सुरंग ॥ ४७ ॥
परमारथ को सब किया। आपा स्वारथ नाहिँ ॥
परमेस्वर परमारथी। की साधू कलि माहिँ ॥ ४८ ॥
पर उपकारी संत सब। आये येहि कलि माहिँ ॥
पिवहिँ पिलावहिँ रामरस। आपा स्वारथ नाहिँ ॥ ४९ ॥
पर उपकारी संत जन। साहेब जी तेरे ॥
जाती देखी आतमा। रामहि कहि टेरे ॥ ५० ॥

चंद सूर पावक पवन । पानी का मत सार ॥
धरती अंबर रात दिन । तरवर फरइ अपार ॥ ५१ ॥
काजन भोज परमारथी । आतम देव अधार ॥
साधू सेवक राम के । दादू पर उपकार ॥ ५२ ॥
जिसका तिसको दीजिये । सुकरित पर उपकार ॥
दादू सेवक सो भला । सिर नाहिँ लेवइ भार ॥ ५३ ॥
परमारथ को राखिये । कीजे पर उपकार ॥
दादू सेवक सो भला । नीरंजन निरकार ॥ ५४ ॥
सेवा सुकरित सब गया । मैँ मेरा मन माहिँ ॥
दादू आया जब लगे । साहिब मानइ नाहिँ ॥ ५५ ॥
जिनके मस्तक मनि बसइ । सकल सिरोमनि अंग ॥
जिनके मस्तक मनि नहीँ । ते बिष भरे भुवंग ॥ ५६ ॥
दादू इस संसार मेँ । ये दो रतन अमोल ॥
एक साईँ अरु संत जन । इनका मोल न तोल ॥ ५७ ॥
दादू इस संसार मेँ । ये दो रहे लुकाइ ॥
राम सनेही साधु जन । अउ बहुतेरा आइ ॥ ५८ ॥
संग हमारे साधु हैँ । सिर पर सिरजनहार ॥
दादू सतगुरु सो सगा । दूजा दंभ बिकार ॥ ५९ ॥
जिनके हिरदय हरि बसइ । सदा निरंतर नावँ ॥
दादू साचे साधु की । मैँ बलिहारी जावँ ॥ ६० ॥
साचा साधु दयाल घट । साहिब का प्यारा ॥
राता माता रामरस । सो प्रान हमारा ॥ ६१ ॥
फिरता चाक कुम्हार का । योँ देखइ संसार ॥
साधू जन निहचल भये । जिनके राम अधार ॥ ६२ ॥
जरती बरती आतमा । साधु सरोवर जाइ ॥
दादू पीवइ रामरस । सुख मेँ रहइ समाइ ॥ ६३ ॥

काँजी माहैं मेरि करि । पीवइ सब संसार ॥
करता केवल निरमला । साधू पीवनहार ॥ ६४ ॥
असत मिलइ अंतर पडइ । भाव भगति रस जाइ ॥
साधु मिलइ सुख ऊपजइ । आनँद अंग नवाइ ॥ ६५ ॥
साधू संगति पाइये । राम अमी फल होइ ॥
असता संगति पाइये । बिष फल देवइ सोइ ॥ ६६ ॥
दादु सभा जो संत की । सुमति ऊपजइ आइ ॥
सकत सभा का बैठता । ज्ञान कथा तें जाइ ॥ ६७ ॥
सब जग दीखइ एकला । सेवक स्वामी दोइ ॥
जगत दुहागी राम बिन । साधु सुहागी सोइ ॥ ६८ ॥
साधू जन सुखिया भये । दुनियाँ को बहु द्वंद ॥
दुनी दुखी हम देखते । साधुन्ह सदा अनंद ॥ ६९ ॥
दादू देखन हम सुखी । साईं के सँग लाग ॥
यों सो सुखिया होइगा । जा के पूरे भाग ॥ ७० ॥
मीठा पीवइ रामरस । सो भी मीठा होइ ॥
सहजइ कडुआ मिटि गया । दादू निरबिष सोइ ॥ ७१ ॥
अंतर एक अनंत सों । सदा निरंतर प्रीति ॥
जेहि प्रानी प्रीतम बसइ । बैठा त्रिभुवन जीति ॥ ७२ ॥
मैं दासी तेहि दास की । जेहि सँग खेलइ पीव ॥
बहुत भाँति करि बरनऊँ । तापर दीजे जीव ॥ ७३ ॥
लीला राजा राम की । खेलहिँ सब ही संत ॥
आपा पर एकइ भया । छूटी सबइ भरंत ॥ ७४ ॥
आनँद सदा अडोल सो । राम सनेही साध ॥
प्रेमी प्रीतम को मिलइ । यह सुख अगम अगाध ॥ ७५ ॥
यह घट दीपक साधु का । ब्रह्मजोति परकास ॥
दादू पंछी संत जन । तहाँ परइ निज दास ॥ ७६ ॥

घर बन माहैँ राखिये। दीपक जोति जगाइ॥
दादू प्रान पतंग सब। जहँ दीपक तहँ जाइ॥ ७७॥
घर बन माहैँ राखिये। दीपक जरता होइ॥
दादू प्रान पतंग सब। आइ मिले सब कोइ॥ ७८॥
घर बन माहैँ राखिये। दीपक प्रगट प्रकास॥
दादू प्रान पतंग सब। आइ मिले उस पास॥ ७९॥
घर बन माहैँ राखिये। दीपक जोति सहेत॥
दादू प्रान पतंग सब। आइ मिले उस हेत॥ ८०॥
जेहि घट परगट राम है। सो घट तजा न जाइ॥
नैनोँ माहैँ राखिये। दादू आप नसाइ॥ ८१॥
जेहि घट दीपक राम का। तेहि घट तिमिर न होइ॥
उस उँजियारे जोत को। सब जग देखइ सोइ॥ ८२॥
कबहुँ न बिहडइ सो भला। साधु ढीठ मत होइ॥
दादू हीरा एक रस। बाँधि गाँठरी सोइ॥ ८३॥
गरंथ न बाँधइ गाँठरी। नाहिँ नारी सोँ नेह॥
मन इंद्री अस्थिर करइ। छाडि सकल गुन देह॥ ८४॥
निराकार सोँ मिलि रहइ। अखँड भगति करि लेइ॥
दादू क्योँकर पाइये। उन चरनोँ का खेह॥ ८५॥
साधु सदा संजम रहइ। मैला कभी न होइ॥
सुन्न सरोवर हंसला। दादू बिरला कोइ॥ ८६॥
साहिब का होनहार सब। सेवक माहैँ होइ॥
दादू सेवक साधु सोँ। दूजा नाहीँ कोइ॥ ८७॥
जब लग नैन न देखिये। साधु कहहिँ ते अंग॥
तब लग क्योँकर मानिये। साहिब का परसंग॥ ८८॥
सोइ जन साधू सिद्ध सो। सोई सकल सिर मौर॥
जेहि के हिरदय हरि बसहिँ। दूजा नाहीँ और॥ ८९॥

साधु सिरोमनि सोधि ले। नदी पूर परि आइ॥
सतजीवन सभा चढ़इ। दूजा बहता जाइ॥ ९० ॥
अवगुन छाडइ गुन गहइ। सोई सिरोमनि साध॥
गुन अवगुन तें रहित है। सो निज ब्रह्म अगाध॥ ९१ ॥
सिंधव फटिक पषान का। ऊपर एकइ रंग॥
पानी माहिं देखिये। न्यारा न्यारा अंग॥ ९२ ॥
सिंधव के आपा नहीं। नीर खीर परसंग॥
आपा फटिक पषान के। मिलइ न जल के संग॥ ९३ ॥
सब जग फटिक पषान है। साधू सिंधव होइ॥
सिंधव एकइ होइ रहा। पानी पत्थर दोइ॥ ९४ ॥
साधू जन उस देस का। आया येहि ससार॥
दादू उसको पूछिये। प्रीतम क समचार॥ ९५ ॥
समाचार सत पीव के। साधु कहइगा आइ॥
दादू सीतल आतमा। सुख में रहइ समाइ॥ ९६ ॥
साधु सबद सुबृष्टि है। सीतल होइ सरीर॥
दादू अंतर आतमा। पीवइ हरि जल नीर॥ ९७ ॥
दादू सत दरबार का। साधू बाटइ आइ॥
तहा रामरस पाइये। जहँ साधू तहँ जाइ॥ ९८ ॥
सुरत सनेही राम का। सो मुझ मिलवहु आन॥
तिस आगे हरिगुन कथउं। सुनत न कारइ कान॥ ९९ ॥
सब ही म्रितक समान हैं। जीया तब ही जानि॥
दादू छींटा अमी का। साधू मांहिं आनि॥ १०० ॥
सब ही मिरतक होइ रहे। जीवइ कौन उपाइ॥
दादू अम्रित रामरस। साधू सींचइ आइ॥ १०१ ॥
सब ही मिरतक माहिं हैं। क्यों कर जीवइ सोइ॥
दादू साधू प्रेमरस। आनि पिलावइ कोइ॥ १०२ ॥

सब ही मिरतक देखिये। केहि बिधि जीवइ जीव॥
साधु सुधारस आनि कर। दादू बरसइ पीव॥ १०३॥
हरि जल बरसै बाहिरा। सूखइ काया खेत॥
दादू हरियरी होइगी। सींचनहार सुचेत॥ १०४॥
गंगा जमुना सुरसती। मिल जब सागर माहिं॥
खारा पानी होइ गया। दादू मीठा नाहिं॥ १०५॥
दादू राम न छोडिये। गहिरा तजि संसार॥
साधू संगति सोधि ले। कुसँगति संग निवारि॥ १०६॥
दादू कुसंगति सब हरी। मात पिता कुल मोइ॥
सजन सनेही बंधुआ। भावइ आपा होइ॥ १०७॥
अज्ञो मूर्खो हित करः। सज्जनेन समो रिपुः॥
ज्ञात्वा त्यजन्ति ते सर्वे। निरयाश्च मनोजिताः॥ १०८॥
कुसँगति में केते गये। तिनका नावँ न ठावँ॥
दादू ते क्यों ऊधरइ। साधु नहीं जिस गावँ॥ १०९॥
भाव भगति का भंग करि। बटपर मारहिं बाट॥
दादू द्वारा मुक्ति का। खोलइ जडे कपाट॥ ११०॥
साधू सँग अंतर पडे। भागइगा किस ठौंर॥
प्रेम भगति भावइ नहीं। यह मन का मन और॥ १११॥
राम मिलन के कारनहिं। जो तूं खरा उदास॥
साधू संगति सोधि ले। राम उन्हहुं के पास॥ ११२॥
ब्रह्मा संकर सेस मुनि। नारद ध्रुव सुकदेव॥
सकल साधु दादू सही। जो लागे हरिसेव॥ ११३॥
साधु कमल हरि बासना। संत भवँर सँग आइ॥
दादू परिमल ले चले। मिले राम को जाइ॥ ११४॥
सहजइ मेला होइगा। हम तुम्ह हरि के दास॥
अंतरगति तब मिलि रहे। पुनि परगट परकास॥ ११५॥

आतम माहैं राम है। पूजा ता की होइ॥
सेवा बंदन आरती। साधु करहिं सब कोइ॥ ११६॥
संत उतारहिं आरती। तन मन मंगलचार॥
बेरि बेरि वारहिं नहीं। तुम्ह पर सिरजनहार॥ ११७॥
मम सिर मोटे भाल। साधू का दरसन किया॥
कहा करहिं जम काल। रामरसायन भरि पिया॥ ११८॥
एता अविगत आप तें। साधू को अधिकार॥
चौरासी लख जीव का। तन मन फेरि सँवार॥ ११९॥
बिष का अम्रित करि लिया। पावक का पानी॥
बाँका सूधा करि लिया। सो साधु बिरानी॥ १२०॥
ऊरा पूरा करि लिया। खारा मीठा होइ॥
फूटा सारा करि लिया। साधु बिबेकी सोइ॥ १२१॥
बंध्या मुक्ता करि लिया। उरझा सुरझ समान॥
बैरी मीता करि लिया। दादू उत्तम ज्ञान॥ १२२॥
झूठा साचा करि लिया। काचा कंचनसार॥
मैला निर्मल करि लिया। दादू ज्ञान बिचार॥ १२३॥
काया कर्म लगाइ करि। तीरथ धोवइ आइ॥
तीरथ माहैं कीजिये। सो कैसे करि जाइ॥ १२४॥
जहँ तिरिये तहँ डूबिये। मन में मैला होइ॥
जहँ छूटइ तहँ बाँधिये। कपट न सीझइ कोइ॥ १२५॥
दादू जब लग जीइये। सुमिरन संगति साध॥
दादू साधू राम बिन। दूजा सब अपराध॥ १२६॥

इति साधु को अंग संपूर्णम्॥ १९॥

———:0:———

अथ मध्य को अंग।

——:o:—

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः॥
बंदनं सर्व साधवा। परनामं पारंगतः॥ १॥

दो पख रहना सहज में। सुख दुख एक समान॥
मरइ न जीवइ सहज में। पूरा पद निरबान॥ २॥

सहज रूप मन का भया। दोनों मिटे तरंग॥
ताता सीता सम भया। दादू एकइ अंग॥ ३॥

सुख दुख मन मानइ नहीं। राम रंग राता॥
दादू दूजा छाडि सब। प्रेमरस माता॥ ४॥

मति मोटी उस साधु की। दोनों रहत समान॥
दादू आपा मेटि करि। सेवा करइ सुजान॥ ५॥

कुछ न कहावइ आप को। काहू संग न जाइ॥
दादू निहपख होइ रहइ। साहिब सों लव लाइ॥ ६॥

सुख दुख मन मानइ नहीं। आपा पर सम भाइ।
सो मन मन करि सेइये। सब पूरन लव लाइ॥ ७॥

ना हम छाडहिं ना गहहिं। ऐसा ज्ञान बिचार॥
मध भाइ सेवइ सदा। दादू मुक्ति दुआर॥ ८॥

सहज सुन्य मन राखिये। इन्ह दोनों के माहिं॥
लेइ समाधि रस पीजिये। तहाँ काल भय नाहिं॥ ९॥

आपा मेटें म्रित्तिका। आपा धरें अकास॥
दादू जहाँ दोनों नहीं। मध्य निरंतर बास॥ १०॥

नहीं म्रितक नहीं जीवता। नहिं आवहिं नहिं जाहिं॥
नहिं सूता नहिं जागता। नहिं भूखा नहिं खाहिं॥ ११॥

दादू इस आकार तैं । दूजा सूच्छम लोक ॥
तातैं आगे और है । तबहूँ हर छन सोक । १२ ॥
हद छाडि बेहद मैं । निरभय निरपछ होइ ॥
लागि रहइ उस एक सों । जहाँ न दूजा कोइ ॥ १३ ॥
दूजा अंतर होत है । जिनि आनइ मन माहिँ ॥
तहँ ले मन को राखिये । जहँ कुछ दूजा नाहिँ ॥ १४ ॥
निराधार पर कीजिये । जहाँ न धरनि अकास ॥
दादू निहचल मन रहइ । निर्गुन के बिस्वास ॥ १५ ॥
मन चित मनसा आतमा । सहज सुरति ता माहिँ ॥
दादू पाँचों पूरि ले । धरती अंबर नाहिँ ॥ १६ ॥
अघडी चाल कबीर की । आसा धी नहीँ जाइ ॥
दादू डाँकइ मिरिग ज्यों । उलटि पडइ भू आइ ॥ १७ ॥
दादू रहन कबीर की । कठिन बिषम यह चाल ॥
अधड एक सों मिलि रहा । जहाँ न झाँकइ काल ॥ १८ ॥
निराधार निज भगति करि । निराधार निजसार ॥
निराधार निज नावँ ले । निराधार निरकार ॥ १९ ॥
निराधार निज रामरस । साधू पीवनहार ॥
निराधार निर्मल रहइ । दादू ज्ञान बिचार ॥ २० ॥
निराधार मन रहि गया । आतम के आनंद ॥
दादू पीवइ रामरस । भेँटे परमानंद ॥ २१ ॥
राम अकेला दूनहुँ बिच । आवइ जाइ न देइ ॥
जहँ के तहँ ले राखिये । पारिख पहुँचे सेइ ॥ २२ ॥
चल दादू तहँ जाइये । मरइ न जीवइ कोइ ॥
अवागमन भय को नहीँ । सदा एक रस होइ ॥ २३ ॥
चल दादू तहँ जाइये । चंद सुरुज नहिँ जाइ ॥
रात दिवस की गम नहीँ । सहजहिँ रहा समाइ ॥ २४ ॥

चल दादू तहँ जाइये । मया मोह तेँ दूर ॥
सुख दुख को ब्यापइ नहीँ । अबिनासी घर पूर ॥ २५ ॥
चल दादू तहँ जाइये । जहँ चौरासी नाहिँ ॥
काल मीँच लागइ नहीँ । मिलि रहिये ता माहिँ ॥ २६ ॥
एक देस हम देखिया । ऋतु नहिँ पलटइ कोइ ॥
हम दादू उस देस के । सदा एक रस होइ ॥ २७ ॥
एक देस हम देखिया । ऊजड बस्ती नाहिँ ॥
हम दादू उस देस के । सहज रूप ता माहिँ ॥ २८ ॥
एक देस हम देखिया । नाहिँ नियरे नहिँ दूर ॥
हम दादू उस देस के । रहे निरंतर पूर । २९ ॥
एक देस हम देखिया । जहँ निस दिन नहिँ घाम ॥
हम दादू उस देस के । निकट निरंजनराम ॥ ३० ॥
बारह मास्स ऊपजइ । तहाँ किया परवेस ॥
दादू सूखा ना पडइ । हम आये उस देस ॥ ३१ ॥
बेद कोरान का गम नहीँ । तहाँ किया परवेस ॥
तहँ कुछु अचरज देखिया । यह कुछु औरहि देस ॥ ३२ ॥
ना घर रहा न बन गया । ना कुछु किया कलेस ॥
दादू मनहीँ मन मिला । सतगुरु के उपदेस ॥ ३३ ॥
काहे दादू घर रहइ । काहे बनखँड जाइ ॥
घर बन रहता राम है । ताही सोँ लव लाइ ॥ ३४ ॥
जिन प्रानी कर जानिया । घर बन एक समान ॥
घर माहैँ बन ज्योँ रहइ । सोई साधु सुजान ॥ ३५ ॥
सब जग माहैँ एकला । देह निरंतर बास ॥
दादू कारन राम के । घर बन माहिँ उदास ॥ ३६ ॥
घर बन माहैँ सुख नहीँ । सुख है साँईँ पास ॥
दादू तासोँ मन मिला । इन तेँ भया उदास ॥ ३७ ॥

ना घर भला न बन भला। जहँ नाहीं निज नावँ ॥
दादू उन मैं मन रहइ। भला न सोई ठावँ ॥ ३८ ॥
बैरागी बन मैं रहै। घरबारी घर माहिं ॥
राम निराला रहि गया। दादू इन मैं नाहिं ॥ ३९ ॥
दीन दुनी साधक करहु। देखन दे दीदार ॥
तन मन को छिन छिन करहु। भिस्त दोजक भी द्वार ॥ ४० ॥
दादू जीवन मरन का। मुझ पछतावा नाहिं ॥
मुझ पछितावा पीव का। रहा न नैनहुँ माहिं ॥ ४१ ॥
सरग नरक संसय नहीं। जिवन मरन भय नाहिं ॥
राम बिमुख जो दिन गये। सो सालइ मन माहिं ॥ ४२ ॥
सुरग नरक सुख दुख तजे। जीवन मरन नसाइ ॥
दादू लोभी राम का। को आवहिं को जाहिं ॥ ४३ ॥
हिंदू तुरुक न होइबा। साहिब सेंती काम ॥
दरसन संग न जाइबा। निरपख कहिबा राम ॥ ४४ ॥
षट दरसन दोनों नहीं। निरालंब निज बाट ॥
दादू एकइ आसरे। लाँघइ अवघट घाट ॥ ४५ ॥
ना हम हिंदू होयँगे। ना हम मूसलमान ॥
षट दरसन मैं हम नहीं। हम राटहहिं रहिमान ॥ ४६ ॥
जोगी जंगम सेवड़े। बौध सन्यासी भेष ॥
षट दरसन सब राम बिन। सबइ कपट के भेष ॥ ४७ ॥
दादू अलह राम का। दोनों पख तें न्यारा ॥
रहिता गुन आकार का। सो गुरू हमारा ॥ ४८ ॥
मेरा तेरा बावरे। मैं तैं की तज बानि ॥
जिन यह सब कुछु सिरजता। करताहि को जानि ॥ ४९ ॥
करनी हिंदू तुरुक की। अपनी अपनी ठौर ॥
दोनों बिच मग साधु का। संतों का रह और ॥ ५० ॥

दादू हिंदू तुरुक का । रोय पच्छ पथ वारि ॥
संगति साची साधु की । साईं को संभारि ॥ ५१ ॥
हिंदू लागे देवहरा । मुसलमान महजीति ॥
हम लागे एक अलख सों । सदा निरंतर प्रीति ॥ ५२ ॥
तहाँ न हिंदू देवहरा । नहीं तुरुक महजीति ॥
दादू आपइ आप है । तहाँ नहीं रह रीति ॥ ५३ ॥
यह मसीति यह देवहरा । सतगुरु दिया दिखाइ ॥
भीतर सेवा बंदगी । बाहर काहे जाइ ॥ ५४ ॥
दोनों हाथों होइ रहे । मिलि रस पिया न जाइ ॥
दादू आपा मेटि कर । दोनों रहे समाइ ॥ ५५ ॥
भीत भयानक होइ रहे । देखा निरपख अंग ॥
दादू एकइ ले रहा । दूजा चढइ न रंग ॥ ५६ ॥
जानइ बूझइ साच दे । सब को देखइ धाइ ॥
चाल नहीं संसार की । दादू गहा न जाइ ॥ ५७ ॥
पछ काहू का ना मिलइ । निरपछ निरमल नावँ ॥
साईं सों सनमुख सदा । मुक्ता सब ही ठावँ ॥ ५८ ॥
जब तें हम निरपछ भये । सबइ रिसाने लोक ॥
सतगुरु के परसाद तें । मेरे हरष न सोक ॥ ५९ ॥
निरपछ होइ के पछ गहइ । नरक पडइगा सोइ ॥
निरपछ लागे नाव सों । करता करइ सो होइ ॥ ६० ॥
पछ काहू का ना मिलइ । निहकामी है साध ॥
एक भरोसे राम के । खेलइ खेल अगाध ॥ ६१ ॥
पछापछी संसार सब । निरपछ बिरला कोइ ॥
सोई निरपछ होइगा । नावँ निरंजन होइ ॥ ६२ ॥
अपने अपने पंथ की । सब कोइ कहइ बढाइ ॥
ता तें दादू एक सों । अंतरगति लव लाइ ॥ ६३ ॥

दोनों पच्छा दूर करि। निरपछ निरमल नावँ॥
आपा मेटइ हरि भजइ। ताकी मैं बलि जावँ॥ ६४॥
दादू तजि संसार सब। रहइ निराला होइ॥
अबिनासी के आसरे। काल न लागइ कोइ॥ ६५॥
कलिजुग को कर करिमुहाँ। उठि उठि लागइ धाइ॥
दादू क्यों कर छूटिये। कलिजुग बड़ी बलाइ॥ ६६॥
काला मुँह संसार का। नीले कीये पाँव॥
दादू तीनों त्याग दे। भावइ तीधरगाँव॥ ६७॥
भावहीन जो पिरथिबी। दया बिहीना देस॥
भगति नहीं भगवंत की। तहँ कैसा परबेस॥ ६८॥
जो बोलउँ तो चुप कहहिं। चुप तो कहहिं पुकार॥
दादू क्यों कर छूटिये। ऐसा है संसार॥ ६९॥
ना जानहिं ना चुप गही। मेटी अगिनि की झाल॥
सदा सजीवन सुमिरिये। दादू बाँचइ काल॥ ७०॥
पंथ चलइ ते प्रानियाँ। तेता कुल ब्यवहार॥
निरपछ साधू सो सही। जिन्हके एक अधार॥ ७१॥
दादू पंथहिं पर गये। बपुरे बारह बाट॥
इन्हके संग न जाइये। उलटा अबिगति घाट॥ ७२॥
जागे को आया कहैं। सूते को कहैं जाइ॥
अवना जाना झूठ है। जहँ का तहाँ समाइ॥ ७३॥

इति भेष को अंग संपूर्णम्॥ १६॥

अथ सारग्राही को अंग।

——:o:——

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः॥
बंदनं सर्ब साधवा। परनामं पारंगतः॥ १॥
साधू तो गुन को गहइ। अवगुन तजइ बिकार॥
मानसरोवर हंस ज्यौं। छाडि नीर गह सार॥ २॥
हंसा ज्ञानी सो भला। अंतर राखइ एक॥
बिष में अम्रित काढि ले। दादू बडा बिबेक॥ ३॥
पहिले न्यारा मन करइ। पीछे सहज सरीर॥
दादू हंस बिचार सों। न्यारा कीया नीर॥ ४॥
आपइ आप प्रकासिया। निर्मल ज्ञान अनंत॥
खीर नीर न्यारा किया। दादू भज भगवंत॥ ५॥
खीर नीर का संत जन। नावँ न बेडहिं आइ॥
दादू साधू हंस बिन। मैल से मेलहिं जाइ॥ ६॥
मन हंसा मोती चुँगइ। कंकर दीया डार॥
सतगुरु कहि समुझाइया। पाया भेद बिचार॥ ७॥
दादु हंस मोती चुँगइ। मानसरोवर जाइ॥
बकुला छीलर बापुरा। चुनि चुनि मछरी खाइ॥ ८॥
दादु हंस मोती चुँगइ। मानसरोवर न्हाइ॥
फिरि फिरि बइठइ बापुरा। काक करंका जाइ॥ ९॥
दादू हंस परेखिये। उत्तम करनी चाल॥
बकुला बैठइ ध्यान धरि। परतक्ष कहिये काल॥ १०॥
उज्जल करनी हंस है। मैली करनी काग॥
मध्यम करनी छाडि सब। दादू उत्तम भाग॥ ११॥

निरमल करनी साधु की। मैला सब संसार॥
मैला मध्यम होइ गया। निरमल सिरजनहार॥ १२॥
करनी ऊपर जात है। दूजा सोच निवार॥
मैला मध्यम होइ गया। उज्जल ऊँच बिचार॥ १३॥
उज्जल करनी राम है। दादू दूजा धंध॥
का कहिये समझइ नहीं। चारों लोचन अंध॥ १४॥
गउ बछडा का ज्ञान गहि। दूध रहइ लव लाइ॥
सींग पूँछ पग परहरइ। अस्तन लागइ धाइ॥ १५॥
काम गाय के दूध सों। हाड चाम सों नाहिं॥
येहि विधि अम्रित पीजिये। साधू के मुख माहिं॥ १६॥
काम धनी के नाम सों। लोगन सों कुछ नाहिं॥
लोगन सों मन ऊपजी। मन की मनहीं माहिं॥ १७॥
हिरदय जैसा होइगा। सो तैसा ले जाइ॥
दादू तूँ निरदोष रह। नावँ निरंतर गाइ॥ १८॥
साधु सबइ कर देखना। असत न दीखइ कोइ॥
जिन के हिरदय हरि नहीं। तेहि तन टोटा होइ॥ १६॥
साधू संगति पाइये। इंद्र दूर बिनसाइ॥
दादू वह हित बैठि कर। ढूँढइ निकट न जाइ॥ २०॥
परम पदारथ पाइये। कंकर दीया डारि॥
दादू साचा सों मिलइ। कूडा काँच निवारि॥ २१॥
जीवन मूरी पाइये। मरिबा कौन बिसाहिं॥
दादू अम्रित छाडि करि। कौन हलाहल खाहिं॥ २२॥
मानसरोवर पाइये। छीछल को छिटकाइ॥
दादू हंसा हरि मिले। कागा गये बिलाइ॥ २३॥
जहँ दिनकर तहँ निस नहीं। निस तहँ दिनकर नाहिं॥
दादू एकहि दूइ नहीं। साधुन के मत माहिं॥ २४॥

एकहि घोड़ा चढ़ि चलइ । दूजा केतिक होइ ॥
दोनौं घोड़ा बइठता । पार न पहुँचा कोइ ॥ २५ ॥

इति सारग्राही को अंग संपूर्णम् ॥ १७ ॥

अथ विचार को अंग ।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
जल में गगन मगन में जल है । पुनि वे गगन निरालम् ॥
ब्रह्म जीव यहि बिधि रहइ । ऐसा भेद बिचारम् ॥ २ ॥
दरपन में मुख देखिये । पानी में प्रतिबिंब ॥
ऐसे आतम राम है । दादू सब ही संग ॥ ३ ॥
दरपन माहैं देखिये । अपना सूझइ आप ॥
दरपन बिन सूझइ नहीं । दादू पुनि रुप आप ॥ ४ ॥
जीये तेला तिलन में । जीये गंध फुलन्न ॥
जीये मक्खन खीर में । जीये रूब रुहन्न ॥ ५ ॥
जीये रूब रुहन्न में । जीये रूह रगन्न ॥
जीये जो रउ सूर माँ । ठंढउ चंद्र बसन्न ॥ ६ ॥
जिन्ह यह दिल मंदर किया । दिल मंदिर में सोइ ॥
दिल माहैं दिलदार है । और न दूजा कोइ ॥ ७ ॥
मीत तुम्हारा तुम्ह कने । तुम्ह हीं लेहु पिछानि ॥
दादू दूर न देखिये । प्रतीबिंब ज्यों जानि ॥ ८ ॥
लाल कमल जल ऊपजइ । क्यों सो जुदा जल माहिं ॥
चंद हि तें नहिं प्रीतडी । यों जल सेतीं नाहिं ॥ ९ ॥
दादू एक बिचार सों । सब तें न्यारा होइ ॥
माहैं है पर मन नहीं । सहज निरंजन सोइ ॥ १० ॥
गुन निर्गुन मन मिलि रहा । क्यों बेगार होइ जाइ ॥
जहँ मन नाहीं सो नहीं । जहँ मन चेतन आइ ॥ ११ ॥

दादू सब ही व्याधि का । औषधि एक बिचार ॥
समझे तें सुख पाइये । कोइ कुछ कहइ गवाँर ॥ १२ ॥
एक निर्गुन एक गुनमई । सब घट ये दाे ज्ञान ॥
काया का माया मिलइ । आतम ब्रह्म समान ॥ १३ ॥
कोटि अचारिन एक बिचारी । तबहुँ न सर भर होइ ॥
आचारी सब जग भरा । बिचारी बिरला कोइ ॥ १४ ॥
घट में सुख आनंद है । तब सब ठाहर होइ ॥
घट में सुख आनंद बिन । सुखी न देखा कोइ ॥ १५ ॥
काया लोक अनंत सब । घट में भारी भीर ॥
जहाँ जाइ तहँ संग सब । दरिया पयली तीर ॥ १६ ॥
काया माया होइ रही । जोधा बहु बलिवंत ॥
दादू दूतर क्यों तिरहिं । काया लोक अनंत ॥ १७ ॥
मोटी माया तजि गये । सूच्छम लीन्हे जाइ ॥
दादू को छूटइ नहीं । माया बड़ी बलाइ ॥ १८ ॥
दादू सूच्छम माहिं ले । तिन का कीजइ त्याग ॥
सब तजि दाता राम सों । दादू यह बैराग ॥ १९ ॥
गुन अतीर सो दरसनी । आपा धरइ उठाइ ॥
दादू निर्गुन राम गहि । डोरी लागा जाइ ॥ २० ॥
मंड मुक्ति सब को करइ । प्रान मुक्ति नहिं होइ ॥
प्रान मुक्ति सतगुरु करइ । दादू बिरला कोइ ॥ २१ ॥
छुधा त्रिखा क्यों भूलिये । सीत तपन क्यों जाइ ॥
क्यों सब छूटहिं देह गुन । सतगुरु कह समझाइ ॥ २२ ॥
माहैं तैं मन काढि कर । ले राखइ निज ठौर ॥
दादू भूले देहगुन । बिसरि जाइ सब और ॥ २३ ॥
नावँ भुलावइ देह गुन । जीव दसा सब जाइ ॥
दादू छाडइ नावँ को । तो फिरि लागइ आइ ॥ २४ ॥

दादू दाता राम सों । दिन दिन अधिक सनेह ॥
दिन दिन पीवइ रामरस । दिन दिन दरपन देह ॥ २५ ॥
दिन दिन भूलइ देहगुन । दिन दिन इंद्री नास ॥
दिन दिन मन मनसा मरइ । दिन दिन होइ प्रकास ॥ २६ ॥
देह रहइ संसार में । जीव राम के पास ॥
दादू कुछ ब्यापइ नहीं । काल जाल दुख त्रास ॥ २७ ॥
काया की संगति तजइ । बइठा हरिपद माहिं ॥
दादू निरभय होइ रहइ । कोइ गुन ब्यापइ नाहिं ॥ २८ ॥
काया माहिं भय घना । सब गुन ब्यापइ आइ ॥
दादू निरभय घर किया । रहे नूर में जाइ ॥ २९ ॥
खड्ग धार बिष ना मरइ । कोइ गुन ब्यापइ नाहिं ॥
राम रहइ त्यों जन रहइ । काल जाल जल माहिं ॥ ३० ॥
सह बिचार सुख में रहइ । दादू बडा बिबेक ॥
मन इंद्री पसरइ नहीं । अंतर राखहु एक ॥ ३१ ॥
मन इंद्री पसरइ नहीं । अहनिसि एकइ ध्यान ॥
पर उपकारी प्रानियाँ । दादू उत्तम ज्ञान ॥ ३२ ॥
आपा ऊरझ उरझियाँ । दीखइ सब संसार ॥
आपा सुरझे सुरझियाँ । यह गुरुज्ञान बिचार ॥ ३३ ॥
मैं नाहीं तब नावँ का । कहा कहावहिं आप ॥
साधो कहहु बिचार करि । मेटहु तन की ताप ॥ ३४ ॥
समझा तबही सुरझियाँ । उलट समाना सोइ ॥
कछू कहावइ जब लगा । तब लग समुझ न होइ ॥ ३५ ॥
जब समझा तब सुरझियाँ । गुरुमुख ज्ञान अलेख ॥
उरध कमल में आरसी । फिरि कर आपा देख ॥ ३६ ॥
प्रेम भगति दिन दिन बढइ । सोई ज्ञान बिचार ॥
दादू आतम सोधि करि । मथ करि काढा सार ॥ ३७ ॥

जेहि बेरियाँ सब कुछ भया । सो कुछ करहु बिचार ॥
काजी पंडित बावरे । का लिखि बाँधे भार ॥ ३८ ॥
जब मनही में मन मिला । तब पाया कुछ भेद ॥
दादू लेकर लाइये । का पढ़ि मरिये बेद ॥ ३९ ॥
पानी पावक अगिनि जल । जानइ नहीं अजान ॥
आदि अंत बीचार करि । दादू ज्ञान सुजान ॥ ४० ॥
सुख माहैं दुख बहुत है । दुख माहैं सुख होइ ॥
दादू देखि बिचारि करि । आदि अंत फल दोइ ॥ ४१ ॥
मीठा खारा खार मिठ । जानहिं नहीं गवाँर ॥
आदि अंत गुन देखि कर । दादू किया बिचार ॥ ४२ ॥
कोमल कठिन कठिन है कोमल । मूरुख मरम न बूझइ ॥
आदि अंत बीचार करि । दादू सब कुछ सूझइ ॥ ४३ ॥
पहिले प्रान बिचार करि । पीछहिं पग दीजइ ॥
आदि अंत गुन देखि कर । दादू कुछ कीजइ ॥ ४४ ॥
पहिले प्रान बिचार करि । पीछहिं चलिये साथ ॥
आदि अंत गुन देखि कर । दादू घालहिं हाथ ॥ ४५ ॥
पहिले प्रान बिचार करि । पीछे कुछ कहिये ॥
आदि अंत गुन देखि कर । दादू निज गहिये ॥ ४६ ॥
पहिले प्रान बिचार करि । पीछे आवइ जाइ ॥
आदि अंत गुन देखि कर । दादू रहइ समाइ ॥ ४७ ॥
जो मति पीछहि ऊपजइ । सो मति पहिली होइ ॥
कबहुँ न होवइ जिव दुखी । दादू सुखिया सोइ ॥ ४८ ॥
आदि अंत गरहन किया । माया ब्रह्म बिचार ॥
जहँ का तहवाँ ले धरा । दादू देत न बार ॥ ४९ ॥

इति बिचार को अंग संपूर्णम् ॥ १८ ॥

——:o:——

अथ बिस्वास को अंग ।

——:o:——

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
सहजइ सहजइ होइगा । जो कुछ रचिया राम ॥
काहे को कलपहिं मरहिं । दुखी होत बेकाम ॥ २ ॥
साईं किया सो होइ गया । जो कुछ करइ सो होइ ॥
करता करइ सो होत है । काहे कलपइ कोइ ॥ ३ ॥
उंतै किया सो होइ गया । जो तूं करइ सो होइ ॥
करन करावन एक तूं । दूजा नाहीं कोइ ॥ ४ ॥
सोई हमारा साँइयाँ । सब का पूरनहार ॥
दादू जीवन मरन का । जाके हाथ बिचार ॥ ५ ॥
सरग भवन पाताल मधि । आदि अंत सब स्रिष्ट ॥
सिरज सबहिं को देत है । सोई हमारा इष्ट ॥ ६ ॥
करनहार करता पुरुष । हम को कैसी चिंत ॥
सब काहू की करत है । सो दादू का मिंत ॥ ७ ॥
मनसा बाचा करमना । साहिब को बिस्वास ॥
सेवक सिरजनहार का । करइ कौन की आस ॥ ८ ॥
सुमिर न आवइ जीव को । आन किया सब होइ ॥
दादू मारग मिहर का । बिरला बूझइ कोइ ॥ ९ ॥
उद्यम अवगुन को नहीं । जो करि जानइ कोइ ॥
उद्यम में आनंद है । साईं सेतीं होइ ॥ १० ॥
पूरनहारा पूर सो । जो चित रहती ठाम ॥
अंतर जेत उमंग•सों । सकल निरंतर राम ॥ ११ ॥

पूरा पूरक पास है । नाहीं दूर गवाँर ॥
सब जानत हैं बावरे । देवइ को हुँसियार ॥ १२ ॥
दादू चिंता राम को । समरथ सब जानहिं ॥
दादू राम सँभारिये । चिंता जिन आनहिं ॥ १३ ॥
चिंता कीये कुछ नहीं । चिंता जीव को खाइ ॥
होना था सो होइ रहा । जाना है सो जाइ ॥ १४ ॥
जिन्ह पहुँचाया प्रान को । उदर उरधमुख खीर ॥
जठर अगिनि में राखिया । कोमल कया सरीर ॥ १५ ॥
समरथ संगी संग है । बिकट घाट घट भीर ॥
साईं सों है गहगही । जिन भूलइ मन बीर ॥ १६ ॥
गोबिंद के गुन चेत करि । नैन बैन पग सीस ॥
जिन मुख दीया कान कर । प्राननाथ जगदीस ॥ १७ ॥
तन मन सवज सँभारि सब । राखइ बिस्वा बीस ॥
साहिब को सुमिरइ नहीं । दादू भा निहदीस ॥ १८ ॥
सो साहिब जिनि बीसरइ । जिन्ह घट दीया जीव ॥
गरभबास में राखिया । पालइ पोषइ पीव ॥ १९ ॥
राज काज कलि में खडा । देवइ हाथहुँ हाथ ॥
पूरा पूरक पास है । सदा हमारे साथ ॥ २० ॥
हिरदय राम सँभारि ले । मन राखइ बिस्वास ॥
दादू समरथ साइँयाँ । सब की पुरवइ आस ॥ २१ ॥
दादू साईं सबहि को । सेवक होइ सुख देइ ॥
आप मूढ मति जीव का । तबहुँ नावँ नहिं लेइ ॥ २२ ॥
सिरजनहारा सबन का । ऐसा है समरत्थ ॥
साईं सेवक होइ रहा । सकल पसारइ हत्थ ॥ २३ ॥
धन धन साहिब तूँ बडा । कौन अनूपम रीत ॥
सकल लोक सिर साइँयाँ । होइ कर रहा अतीत ॥ २४ ॥

हउँ बलिहारी सुरत की । सब की करइ सँभाल ॥
कीरी कुंजर पलक में । करता है प्रतिपाल ॥ २५ ॥
छाजन भोजन सहज में । साईं देइ सो लेइ ॥
ता तें अधिक न और कुछ । सो तूँ काह करेइ ॥ २६ ॥
दादू टूका सहज का । संतोषी जन खाइ ॥
मिरतक भोजन गुरुमुखी । काहे कलपइ जाइ ॥ २७ ॥
दादू भाँडा देह का । तेता सहज बिचार ॥
जेता हरि बिच अंतरा । तेता सबइ निवार ॥ २८ ॥
दादू जल दल राम का । हम लेवहिँ परसाद ॥
संसारी समुझइ नहीं । अबिगत भाव अगाध ॥ २९ ॥
परमेस्वर के भाव का । एक कनहुँ को खाइ ॥
दादू जेता पाप था । भरम करम सब जाइ ॥ ३० ॥
कौन पकावइ को पीसइ । जहँ तहँ सीधा ही दीसइ ॥ ३१ ॥
जो कुछ खुसी खुदाइ की । होवइगा पइ सोइ ॥
पचि पचि कोई जिन मरइ । सुनि लीजहु सब लोइ ॥ ३२ ॥
छूटी खुदाई कहीं को नाहीं । फिरिहहिँ पृथिवी सारी ॥
दूजी दहनि दूर करि बोरइ । साधू सबद बिचारी ॥ ३३ ॥
बिना राम कहीं को नाहीं । फिरिहहु देस बिदेसा ॥
दूजी दहनि दूर करि बोरइ । सुनि यह साधुसँदेसा ॥ ३४ ॥
सदक सबूरी साच गहि । सेवत राखि अकीन ॥
साहिब सौं दिल लाइ रह । मुरदा होइ मसकीन ॥ ३५ ॥
अनबंधा टुक खात है । भरमहिं लागा मन्न ॥
नावँ निरंजन लेत है । निरमल साधू जन्न ॥ ३६ ॥
अनबंधा आगे पडइ । पीछे लेइ उठाइ ॥
दादू के सिर दोष यह । जो कुछ रामरजाइ ॥ ३७ ॥
अनबधा आगे पडइ । फिरा बिचार रुखाइ ॥

दादू फिरइ न तोरता । तरवर ताकि न जाइ ॥ ३८ ॥
मीठे का मीठा लगइ । भावइ बिष भरि देइ ॥
दादू कडुवा ना कहइ । अम्रित करि करि लेइ ॥ ३९ ॥
बिपति भली हरि नावँ सोँ । कया कसौटी दुःख ॥
राम बिना किस काम का । दादू संपति सुक्ख ॥ ४० ॥
दादू बर बिस्वास बिन । जियरा डावाँडोल ॥
निकट निधी दुख पाइये । चिंतामनी अमोल ॥ ४१ ॥
बिन बिस्वासी जीयरा । चंचल नाहीँ ठौर ॥
निहचय निहचल ना रहइ । कछू और की और ॥ ४२ ॥
होना था सो होइ गया । जिन बाँछे सुख दुःख ॥
सुख माँगे दुख पाइया । पिय न बिसारी मुक्ख ॥ ४३ ॥
होना रहा सो होइ गया । सरग न पहुँची धाइ ॥
नरकहु तेँ हम ना डरी । हुआ सो होइगा आइ ॥ ४४ ॥
होना था सो होइ गया । जो कुछ कीया पीव ॥
पल बरधइ नहिँ छन घटइ । ऐसा जाना जीव ॥ ४५ ॥
होना था सो होइ गया । और न होवइ आइ ॥
लेना था सो लेइ रहा । और न लीया जाइ ॥ ४६ ॥
जो बिरचा सो होइगा । काहे को सिर लेइ ॥
साहिब ऊपर राखिये । देखि तमासा येइ ॥ ४७ ॥
जो जानहुँ त्योँ राखिये । तुम्ह सिर डारि राइ ॥
दूजा को देखहु नहीँ । दादू अनत न जाइ ॥ ४८ ॥
जो तुम्ह भावइ सो खुसी । हम राजी उस बात ॥
दादू के दिल सहक सो । भावइ दिन को रात ॥ ॥ ४९ ॥
करनहार जो कुछ किया । सो तो बुरा न होइ ॥
सोई सेवक संत जन । रहिबा रामरजोइ ॥ ५० ॥
करनहार जो कुछ किया । सोइ निहचय कर जानि ॥

जो तूँ चतुर सुजान है । तो याही परवांनि ॥ ५१ ॥
दादू करता हम नहीं । करता औरइ कोइ ॥
करता है सो करइगा । तूँ जिनि करता होइ ॥ ५२ ॥
कासी तजि मग्गह गया । कबिर भरोसे राम ॥
सो देही साईं मिला । दादू पूरे काम ॥ ५३ ॥
दादू रोजी राम है । राजक रजक हमार ॥
दादू उस परसाद सौं । पोषा सब परिवार ॥ ५४ ॥
पंच सँतोषा एक सौं । मन मतवाला माहिं ॥
दादू भागी भूख सब । दूजा भावइ नाहिं ॥ ५५ ॥
साहिब मेरा कापड़ा । साहिब मेरा खान ॥
सो साहिब सिरताज है । साहिब पिंड परान ॥ ५६ ॥
साईं सत संतोष दे । भाव भगति बिस्वास ॥
सदक सबूरी साच दे । माँगइ दादूदास ॥ ५७ ॥

इति बिचार को अंग संपूर्णम् ॥ २० ॥

———:o:———

अथ पीय पिछानन को अंग।

———ooo———

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः॥
बंदनं सर्व साधवा। परनामं पारंगतः॥ १॥
सारहुँ के सिर देखिये। उस पर कोई नाहिँ॥
दादू ज्ञान विचार कर। सो राखा मन माहिँ॥ २॥
सब लालहु सिर लाल है। सब खूबहुँ सिर खूब॥
सब पाकहुँ सिर पाक है। दादू का महबूब॥ ३॥
परब्रह्म परात्परं। सो मम देव निरंजनं॥
निराकारं निर्मलं। तस्य दादू बंदनं॥ ४॥
एक तत्त ता ऊपर इतनी। तीन लोक ब्रह्मंडा॥
धरती गगन पवन अरु पानी। सप्त द्वीप नव खंडा॥ ५॥
चंद सूरज चौरासी लख दिन। रचि ले सप्त समंदा॥
सवा लाख मेरुगिरि परबत अठारह भारत। तीरथ ब्रत ताहू पर मंडा॥
चौदह लोक रहइ सब रचना। दादूदास ताहि घर बंदा॥ ६॥
जिन्ह एती कर धरी। थंभ बिन राखी॥
सो हम कोँ क्योँ बीसरइ। संत जन साखी॥ ७॥
प्रान पिंड हम को दिया। अंतर सेवइ ताहि॥
जो आवइ अउसान सिर। सोई नावँ सबाहि॥ ८॥
जिन्ह मुझ को पैदा किया। मेरा साहिब सोइ॥
मैँ बंदा उस राम का। जिन्ह सिरजा सब कोइ॥ ९॥
जो था कंत कबीर का। सोई वर वरिहहुँ॥
मनसा बाचा करमना। मैँ और न करिहहुँ॥ १०॥
सब का साहिब एक है। जा के परगट नावँ॥
दादू साईँ सोधि ले। ताकी मैँ बलिजावँ॥ ११॥

साचा साईं सोधि कर । साचा राखी भाव ॥
दादू साचा नावँ ले । साचे मारग आव ॥ १२ ॥
साचा सतगुरु सोधि ले । साचे लीजे साध ॥
साचा साहिब सोधि कर । दादू भगति अगाध ॥ १३ ॥
जा में मरइ सो जीव है । रमता राम न होइ ॥
जनम मरन तें रहित है । मेरा साहिब सोइ ॥ १४ ॥
उठहिँ न बइठहिँ एक रस । जागहिँ सोवहिँ नाहिँ ॥
मरहिँ न जीवहिँ जगतगुरु । उपजि खपहिँ उस माहिँ ॥१५॥
ना वह जामहिँ ना मरहिँ । ना आवहिँ ग्रभबास ॥
दादू अउधे मुख नहीं । नरककुंड दस मास ॥ १६ ॥
क्रित्रिम नहीँ सो ब्रह्म है । घटइ बढइ नहिँ जाइ ॥
पूरन निहचल एक रस । जगत न नाचइ आइ ॥ १७ ॥
उपजइ बिनसइ गुन धरइ । यह माया का रूप ॥
दादू देखत थिर नहीँ । छन छाहीँ छन धूप ॥ १८ ॥
जो नाहीँ सो उपज है । सो तो उपजइ नाहिँ ॥
अलख आदि आनादि है । उपजइ माया माहिँ ॥ १९ ॥
जो यह करता जीव था । सँपुट क्योँ आया ॥
करमहुँ के बसि क्योँ भया । क्योँ आप बँधाया ॥
क्योँ सब जोनि जगत्त मेँ । घरबार नँचाया ॥
क्योँ यह करता जीव होइ । पर हाथ बिकाया ॥ २० ॥
दादू क्रित्रिम काल बस । सो बंधा गुन माहिँ ॥
उपजइ बिनसइ देखता । सो यह करता नाहिँ ॥ २१ ॥
जाती नूर अलाहिदा । सिफ्फाती अरवाह ॥
सिफ्फाती सिजदा करइ । जाती बे परवाह ॥ २२ ॥
खंड खंड जिन्ह ना भया । एक रस एकइ नूर ॥
ज्योँ था त्योँ ही तेज है । जोति रही भरपूर ॥ २३ ॥

तिर सँध नूर अपार है । तेज पुंज सब माहिँ ॥
दादू जोति अनंत है । आगा पीछा नाहिँ ॥ २४ ॥
वार पार नहिँ नूर का । दादू तेज अनंत ॥
कीमत नहिँ करतार की । ऐसा है भगवंत ॥२५ ॥
परम तेज परकास है । परम सो नूर निवास ॥
परम जोति आनंद है । हंसा दादूदास ॥ २६ ॥
परम तेज परात्परं । परम जोति परमेश्वरम् ॥
स्वयं ब्रह्म सदैव सदा । दादू अबिचल अस्थिरम् ॥ २७ ॥
अबिनासी सो सत्य है । उपजइ बिनसइ नाहिँ ॥
जेता कहिये काल मुख । सो साहिब किस माहिँ ॥ २८ ॥
साईँ मेरा सत्य है । नीरंजन निरकार ॥
दादू बिनसइ देवता । झूठा सब आकार ॥ २९ ॥
रामरतन छाडइ नहीँ । हरि ले लागा जाइ ॥
सो बीचहि अटकइ नहीँ । कला कोटि दिखलाइ ॥ ३० ॥
सो घर हीं अटकइ नहीँ । जहाँ राम तहँ जाइ ॥
दादू पावइ परम सुख । बेलसइ बस्तु अघाइ ॥ ३१ ॥
उर हीं मेँ उरझे घंन । मूये गल दे पास ॥
ऐन अंग जहँ आप था । तहाँ गये निज दास ॥ ३२ ॥
सेवा का सुख प्रेमरस । सेज सोहागिन देहु ॥
दादू बाह है दास को । कहँ दूजा सब लेहु ॥ ३३ ॥
परपुरुषा सब परहरइ । सुंदर देखइ जागि ॥
अपना पीय पिछान करि । दादू रहिये लागि ॥ ३४ ॥
आनहु पुरुषहुँ वह नहीँ । परमपुरुष भरतार ॥
हउँ अबला समुझहुँ नहीँ । तूँ जानइ करतार ॥ ३५ ॥
लोहा माटी मिलि गया । दिन दिन काई खाइ ॥
दादू पारस राम बिन । कतहूँ गया बिलाइ ॥ ३६ ॥

लोहा पारस परस करि। पलटइ अपना अंग॥
दादू कंचन होइ रहइ। अपने साईं संग॥ ३८॥
जेहि परसे पलटइ नरा। सोई निज कर लेइ॥
लोहा कंचन होइ गया। पारस का गुन येइ॥ ३९॥
आपा नाहीं बल मिटइ। त्रिबिध तिमिर नहिं होइ॥
दादू यह गुन ब्रह्म का। सुन्न समाना सोइ॥ ४०॥
माया का गुन बल करइ। आपा उपजइ आइ॥
राजस तामस सातकी। मन चंचल होइ जाइ॥ ४१॥
दह दिसि फिरइ सो मन्न है। आवहिं जाहिं सो मन्न॥
राखनहारा प्रान है। देखनहारा ब्रह्म॥ ४२॥

इति पीव पिछानन को अंग संपूर्णम्॥ २१॥

——:०:——

अथ समरथाई को अंग।

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
करता करत निमेष में । कीरी कुंजर होइ ॥
कुंजर तें कीरी करइ । मेटि सकइ नहिं कोइ ॥ २ ॥
करता करइ निमेष में । राई मेरु समान ॥
मेरू को राई करइ । को मेटइ फुरमान ॥ ३ ॥
करता करत निमेष में । जल माहैं थल थाप ॥
थल माहैं जलहर करइ । ऐसा समरथ आप ॥ ४ ॥
करता करत निमष में । खाली भरइ भँडार ॥
भरिया गहि खाली करइ । ऐसा सिरजनहार ॥ ५ ॥
धरती को अंबर करइ । अंबर धरती होइ ॥
निसि अँधिआरा दिन करइ । दिन को रजनी सोइ ॥ ६ ॥
मिरतक काढि मसान तें । कहु कौन चलावइ ॥
अबिगत गति नहिं जानिये । जग आनि देखावइ ॥ ७ ॥
गुपुता गुन परगट करइ । परगट गुपुत समाइ ॥
पलक माहिं भानइ घनहि । ता की लखी न जाइ ॥ ८ ॥
सोइ सही साबित हुआ । जा मस्तक कर देइ ॥
गरिब नेवाजइ देखते । हरि अपना करि लेइ ॥ ९ ॥
सबही मारग साईंयाँ । आगे एक मुकाम ॥
सोई सनमुख कर लिया । जाही सेती काम ॥ १० ॥
मीरा मुझ सों मेहर करि । सिर पर दीया हाथ ॥
दादू कलिजुग का करइ । साईं मेरे साथ ॥ ११ ॥

समरथ सब बिधि साइँयाँ। ता की मैं बलि जावँ॥
अंतर एक जो सो बसइ। और चित्त ना लावँ॥ १२॥
दादू मारग मेहर का। सुखी सहज सों जाइ॥
भवसागर तें काढि कर। अपने लिये बोलाइ॥ १३॥
दादू जो हम चिनवहिं। कछू न होवइ आइ॥
सोई करता सत्त है। कुछ अउरइ कर जाइ॥१४॥
एकहु लेइ बोलाइ करि। एकहु देइ पठाइ॥
दादू अद्भुत साहिबी। क्योँ ही लखी न जाइ॥ १५॥
ज्योँ राखहिं त्योँ रहहिंगे। अपने बल नाहिं॥
सबइ तुम्हारे हाथ है। भागि कहँ जाहिं॥ १६॥
डोरी हरि के हाथ है। गल माहिं मेरइ॥
बाजीगर की बाँदरी। भावइ तहँ फेरइ॥ १७॥
ज्योँ राखइ त्योँ रहहिंगे। मेरा का सारा॥
हुकुमी सेवक राम का। बंदा बेचारा॥ १८॥
साहिब राखइ तो रहइ। काया माहिं जीव॥
हुकुमी बंदा उठि चलइ। जबहि बोलावइ पीव॥ १९॥
खंड खंड परकास है। जहाँ तहाँ भरपूर
दादू करता कर रहा। अनहद बाजइ तूर॥ २०॥
दादू दादू कहत है। आपइ सब घट माहिं॥
अपनी रुचि आपइ कहइ। दादू तें कुछ नाहिं॥ २१॥
हम तें हुआ न होइगा। ना हम करने जोग॥
ज्योँ हरि भावइ त्योँ करइ। दादु कहहिं सब लोग॥ २२॥
दादू दूजा क्योँ कहइ। सिर पर साहिब एक॥
सो हमकों क्योँ बीसरइ। जो जुग जाहिं अनेक॥ २३॥
आप अकेला सब करइ। अउरों के सिर देइ॥
दादू सोभा दास की। अपना नावँ न लेइ॥ २४॥

आप अकेला सब करइ। घट में लहर उठाइ॥
दादू सिर दे जीव के। यों न्यारा होइ जाइ॥ २५॥
ज्यों यह समझइ त्यों कहहु। यह जीव अज्ञानी॥
जेती बाबा तें कही। इन्ह एक न मानी॥ २६॥
परचा माँगहिं लोग सब। हमको कुछ देखलाइ॥
समरथ मेरा साइँआँ। समझइ त्यों समझाइ॥ २७॥
दादू तन मन लाइ करि। सेवा दृढ कर लेइ॥
ऐसा समरथ राम है। जो माँगइ सो देइ॥ २८॥
समरथ सोँ समुझावही। कर अनकरता होइ॥
घट घट व्यापक पूरि सब। रहइ निरंतर सोइ॥ २९॥
रहइ निआरा सब करइ। काहू लिप्त न होइ॥
आदि अंत भानइ घने। ऐसा समरथ सोइ॥ ३०॥
सुर मनहीं सब कुछ करइ। यों कलि धरा बनाइ॥
कौतुकहारा होइ गया। सब कुछ होता जाइ॥ ३१॥
लुकइ छिपइ नहिं सब करइ। गुन नहिं व्यापइ कोइ॥
दादू निहचल एक रस। सहजहिं सब कुछ होइ॥ ३२॥
बिन गुन व्यापइ सब किया। समरथ आपहिं आप॥
निराकार न्यारा रहइ। दादू पुन्य न पाप॥ ३३॥
समता के घरि सहज में। दादू दुविधा नाहिं॥
साइँ समरथ सब किया। समुझि देखि मन माहिं॥ ३४॥
पैदा कीया घाट घडि। आपइ आप उपाइ॥
हिकमत अउ कारीगरी। दादू लखी न जाइ॥ ३५॥
जंत्र बजाया साज करि। कारीगर करतार॥
पाँचहुँ का रस नाद है। दादू बोलनहार॥ ३६॥
पाँच ऊपना सबद सों। सबद पाँच सों होइ॥
साइँ मेरा सब किया। बूझइ बिरला कोइ॥ ३७॥

है तो रती नहिँ तो नहीँ। सबकुछ उतपति होइ॥
हुकुमी हाजिर सब किया। बूझइ बिरला कोइ॥ ३८॥
नहीँ तहाँ तेँ सब किया। आपइ आप उपाइ॥
निज तन न्यारा ना किया। दूजा आवइ जाइ॥ ३६॥
नहीँ तहाँ तेँ सब किया। फिरि नाहीँ होइ जाइ॥
दादू नाहीँ होइ रह। साहिब सोँ लव लाइ॥ ४०॥
मालिक खेलइ खेलि कर। बूझइ बिरला कोइ॥
ले कर सुखिया ना भया। दे कर सुखिया होइ॥ ४१॥
देने को सब भूख है। लेने को कुछ नाहिँ॥
साईँ मेरा सब किया। समुझि देखि मन माहिँ॥ ४२॥
जो साहिब सिरजा नहीँ। आपइ क्योँ कर होइ॥
जो आपइ ह्याँ ऊपजइ। मरि करि जीवइ कोइ॥ ४३॥
करम फिरावहिँ जीव को। करमहुँ को करतार॥
करता को कोई नहीँ। दादू फेरनहार॥ ४४॥

इति समरथाई को अंग संपूर्णम्॥ २३॥

———ooo———

अथ सबद को अंग ।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
सबदहि बंधा सब रहहिँ । सबदे ही सब जाइ ॥
सबदे ही सब ऊपजइ । सबदइ सबइ समाइ ॥ २ ॥
सबदे ही सच पाइये । सबदे ही संतोष ॥
सबदे ही अस्थिर भया । सबदे हि भागा सोक ॥ ३ ॥
सबदे ही सूच्छिम भया । सबदइ सहज समान ॥
सबदे ही निरगुन मिलइ । सबदे हि निरमल ज्ञान ॥ ४ ॥
सबदे ही मुकता भया । सबदइ समझइ प्रान ॥
सबदे ही सूझइ सबइ । सबदइ सुरझइ जान ॥ ५ ॥
ओंकारा तेँ ऊपजइ । अरस परस संजोग ॥
अँकुर बीज दोउ पाप पुन । येहि बिधि जोगऽरु भोग ॥६॥
ओंकारहि तेँ ऊपजइ । बिनसइ बहुत बिकार ।
भाव भगति ले थिर रहइ । दादू आतम सार ॥ ७ ॥
पहिले कीया आप तेँ । उतपत्ती ओंकार ॥
ओंकारहि तेँ ऊपजइ । पंच तत्त आकार ॥ ८ ॥
पाँच तत्त तेँ घट भया । बहु बिधि सब बिस्तार ॥
दादू घट तेँ ऊपजइ । मैँ तैँ बरन बिचार ॥ ६ ॥
एक सबद सब कुछ किया । ऐसा समरथ सोइ ॥
आगे पीछे तो करइ । जो बल हीना होइ ॥ १० ॥
नीरंजन निरकार है । ओंकारइ आकार ॥
दादू सब रँग रूप सब । सब बिध सब विस्तार ॥ ११ ॥

आदि सबद ओंकार है। बोलइ सब घट माहिँ ॥
दादू माया बिस्तरी। परम तत्त यह नाहिँ ॥ १२ ॥
एक सबद सौं ऊनवइ। बरसन लागइ आइ ॥
एक सबद सौं बीखरइ। आप आप को जाइ ॥ १३ ॥
साधू सबद सौं मिलि रहइ। मन राखइ बिलमाइ ॥
साधु सबद बिन क्यों रहइ। तब ही बीखरि जाइ ॥ १४ ॥
सबद जरइ सो मिलि रहइ। एक रस पूरा ॥
कायर भागइ जीव लेइ। पग माँडइ सूरा ॥ १५ ॥
सबद बिचारइ करनी करइ। रामनाम निज हिरदय धरइ ॥
काया माहिँ सोधइ सार। दादू कहहिँ लहहिँ सो पार ॥१६॥
काहे कौडी खरचिये। जा पर सीझइ काम ॥
सबदहु कारज सिध भया। सुर मन दीजइ राम ॥ १७ ॥
सबदबान गुरु साधु के। दूर दिसंतर जाइ ॥
जेहि लागे सो ऊबरे। सूते लिये जगाइ ॥ १८ ॥
राम रिझइ रस मेलि कर। साधू सबद सुनाइ ॥
जानहुँ कर दीपक दिया। भरमत मर सब जाइ ॥ १९ ॥
दादू बानी प्रेम की। कमल बिकासे होइ ॥
साधु सबद माता कहइ। सबदहु मोहा मोइ ॥ २० ॥
हरि मुख बानी साधु की। सोइ पडी मेरे सीस ॥
छूटइ माया मोह तेँ। प्रेमभजन जगदीस ॥ २१ ॥
दादू मुख की राम है। सबद कहहिँ गुरुज्ञान ॥
तिन्ह सबदहुँ मन मोहिया। उनमन लागा ध्यान ॥ २२ ॥
दादू बानी ब्रह्म की। अनभय घट परकास ॥
राम अकेला रहि गया। सबद निरंजन पास ॥ २३ ॥
सबदहु माहैँ रामधन। जो कोइ लेइ बिचारि ॥
दादू इस संसार में। कबहुँ न आवइ हारि ॥ २४ ॥

राम रसायन भरि भरा । साधुन्ह सबद मँझार ॥
परिख्यो पीवइ प्रीति सों । समझइ सबद बिचार ॥ २५ ॥
सबद सरोवर जल भरा । हरिजल निर्मल नीर ॥
दादू पीवइ प्रीति सों । तिन्ह के अखिल सरीर ॥ २६ ॥
सबदहु माहें रामरस । साधु भरहिं दिया ॥
आदि अंत सब संत मिलि । यों दादू पिया ॥ २७ ॥
पानी माहें राखिये । कनक कलंक न जाइ ॥
दादू साचा सबद दे । ताहि अगिनि में बाहि ॥ २८ ॥
कारज को सीझइ नहीं । मीठा बोलहिं बीर ॥
दादू साचे सबद बिन । कटइ न तन की पीर ॥ २९ ॥
गुन तजि निर्गुन बोलिये । तेता बोल अबोल ॥
गुन गहि आपा बोलिये । तेता कहिये बोल ॥ ३० ॥
साचा सबद कबीर का । मीठा लागे मोहिं ॥
दादू सुनता परमसुख । केता आनँद होहिं ॥ ३१ ॥

इति साधु को अंग संपूर्णम् ।

——o——

अथ जीवित म्रितक को अंग ।

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
धरती तत्त अकास का । चंद सुरुज का लेइ ॥
दादू पानी पवन का । रामनाम कहि देइ ॥ २ ॥
दादू धरती होइ रहइ । त्यागि कपट अहँकार ॥
साइँ कारन सिर सहइ । परतछ सिरजनहार ॥ ३ ॥
जीवत माटी मिलि रहइ । साईँ सनमुख होइ ॥
दादू पहिले मरि रहइ । पीछे तो सब कोइ ॥ ४ ॥
आपा गरब गुमान तजि । मद मच्छर अहँकार ॥
गहइ गरीबी बंदगी । सेवा सिरजनहार ॥ ५ ॥
मद मच्छर आपा नहीँ । कैसा गरब गुमान ॥
सपनेही समझइ नहीँ । दादू का अभिमान ॥ ६ ॥
झूठा गरब गुमान तजि । तजि आपा अभिमान ॥
दादू दीन गरीब होइ । पाया पद निर्बान ॥ ७ ॥
भाव भगति दीनता अंग । प्रेम प्रीति सदा तेहि संग ॥ ८ ॥
सिदक सबूरी साच गहि । सेवत राख यकीन ॥
साहिब सोँ दिल लाइ रह । मुरदा होइ मसकीन ॥ ९ ॥
साहिब को सिजदा किया । सिर को धरा उतारि ॥
योँ दादू जीवत मरहिँ । हिरस हवा को मारि ॥ १० ॥
राव रंक सब मरहिँगे । जीवहिँगे ना कोइ ॥
सोई कहिये जीवता । जो मर जीवा होइ ॥ ११ ॥
मेरा बैरी मैँ मुवा । मुझे न मारइ कोइ ॥
मैँ ही मुझ को मारता । मैँ मर जीवा होइ ॥ १२ ॥

दादू आपा जब लगा । तब लग दूजा होइ ॥
यह आपा जब मिटि गया । दूजा नाहीं कोइ ॥ १३ ॥
बैरी मारे मरि गये । चित तें बिसरहिं नाहिं ॥
दादू अजहुं साल है । समुझ देखि मन माहिं ॥ १४ ॥
तौ तूं पावइ पीव को । जीवत मिरतक होइ ॥
आप गवाँये पिव मिलइ । जानत है सब कोइ ॥ १५ ॥
तौ तूं पावइ पीव को । आपा कछू न जान ॥
आपा जिन्ह तें उपजई । सोई सहज पिछान ॥ १६ ॥
दादू पावइ पीव को । मैं अपना सब खोइ ॥
मैं मेरा सहजहिं गया । निरमल दरसन होइ ॥ १७ ॥
मैं ही मेरे पीठ सिर । मारिये ता के भार ॥
दादू गुरुपरसाद सौं । सिर तें धरा उतार ॥ १८ ॥
मेरे आगे मैं खडा । ता तें रहा लुकाइ ॥
दादू परगट पीव है । जो यह आपा जाइ ॥ १९ ॥
जीवत मिरतक होइ कर । मारग माहैं आव ॥
पहिले सीस उतारि कर । पीछे धरिये पाव ॥ २० ॥
दादू मारग साधु का । खरा दुहेला जान ॥
जीवत मिरतक होइ चलहिं । रामनाम नीसान ॥ २१ ॥
दादू मारग कठिन है । जीवत चलइ न कोइ ॥
सोई चलिहैं बापुरा । जीवत मिरतक होइ ॥ २२ ॥
मिरतक होवहिं सो चलहिं । नीरंजन की बाट ॥
दादू पावहिं पीव को । लाँघहिं अउघट घाट ॥ २३ ॥
मिरतक तब ही जानिये । जब गुन इंद्री नाहिं ॥
मन का आपा मिटि गया । ब्रह्म समाना माहिं ॥ २४ ॥
जीवत ही मरि जाइये । मिरत्यु माहिं मिलि जाइ ॥
साईं का सँग छाडि कर । कौन सहइ दुख आइ ॥ २५ ॥

कभि यह आपा जायगा । कभि यह बिसरइ और ॥
कभि यह सुखिया होयगा । कभि यह पावइ ठौर ॥ २६ ॥
आपा कहाँ देखाइये । जो कुछ आपा होइ ॥
यह तो जाता देखिये । रहता चीन्हहु सोइ ॥ २७ ॥
दादू आप छिपाइये । जहाँ न देखइ कोइ ॥
पिय को भेख देखाइये । त्योँ त्योँ आनँद होइ ॥ २८ ॥
अंतरगति आपा नहीँ । मुख सोँ मैँ तैँ होइ ॥
दादू दोख न दीजिये । योँ मिलि खेलइ दोइ ॥ २९ ॥
एकइ दसा अनन्य की । दूजी दसा न जाइ ॥
आपा भूलइ आन सब । एकइ रहइ समाइ ॥ ३० ॥
जे जन आपा मेटि कर । रहे राम लव लाइ ॥
दादू सबही देखना । साहिब सोँ मिल जाइ ॥ ३१ ॥
गरिब गरीबी गहि रहा । मसकीना मसकीन ॥
दादू आपा मेटि कर । होइ गया लवलीन ॥ ३२ ॥
मैँ है मेरा जब लगे । तब लग बिलसइ खाइ ॥
मैँ नाहीँ मेरी मिटइ । दादू निकट न जाइ ॥ ३३ ॥
मना मनी सब ले रहे । मनी न मेटी जाइ ॥
मना मनी जब मिटि गई । तबही मिलइ खुदाइ ॥ ३४ ॥
दादू मैँ मैँ जालि दे । मेरे लागइ आग ॥
मैँ मैँ अपना दूर कर । साहिब के सँग लाग ॥ ३५ ॥
दादू खोई आपनी । लज्जा कुल की कार ॥
मान बड़ाई पति गई । सनमुख सिरजनहार ॥ ३६ ॥
मैँ नाहीँ तब एक है । मैँ आई तब दोइ ॥
मैँ तैँ परदा मिटि गया । ज्योँ था त्योँ ही होइ ॥ ३७ ॥
नूर सरीखा करि लिया । बंदन का बंदा ॥
दादू दूजा कोइ नहीँ । मुझ सरीखा गंदा ॥ ३८ ॥

सीखेहु प्रेम न पाइये । सीखेहु प्रीति न होइ ॥
सीखेहु दरद न उपजई । जब लग आप न खोइ ॥ ३९ ॥
कहिबा सुनबा गत भया । आपा पर का नास ॥
दादू मैं तैं मिटि गया । पूरन ब्रह्म प्रकास ॥ ४० ॥
दादू सूछम माहिँ ले । तिन्ह का कीजइ त्याग ॥
सब तजि राता राम सों । दादू यह बैराग ॥ ४१ ॥
दादू गुनी सो दरसनीं । आपा धरइ उठाइ ॥
दादू निर्गुन राम गहि । डोरी लागा जाइ ॥ ४२ ॥
साईं कारनि माँस का । लोहू पानी होइ ॥
सूखा आटा अस्त का । दादू पावइ सोइ ॥ ४३ ॥
तन मन मैदा पीसि कर । छानि छानि लव लाइ ॥
यों बिन दादू जीव का । कबहूँ सालन जाइ ॥ ४४ ॥
पीसे ऊपर पीसिये । छाने ऊपर छान ॥
तउ आतम कन ऊबरइ । दादू ऐसी जान ॥ ४५ ॥
पहिले तन मन मारिये । इनका मरदइ मान ॥
दादू काढइ अंत में । पीछे सहज समान ॥ ४६ ॥
काटे ऊपर काटिये । दाधे को दउ दाइ ॥
दादू नीर न सींचिये । तरवर बहता जाइ ॥ ४७ ॥
सब को संकट एक दिन । काल गहइगा आइ ॥
जीवत मिरतक होइ रह । ता के निकट न जाइ ॥ ४८ ॥
जीवत मिरतक होइ रहहिँ । सब को बिकरित होइ ॥
काढहु काढहु सब कहहिँ । नावँ न लेवहिँ कोइ ॥ ४९ ॥
सारा गहिरा होइ गया । अंतरजामी जान ॥
तब छूटइ संसार तें । पीवइ सारँग पान ॥ ५० ॥
गूँगा बहिरा बावरा । साईं कारन होइ ॥
दादू दिवाना होइ गया । ता को लखइ न कोइ ॥ ५१ ॥

जीवत मिरतक साधु की । बानी का परकास ॥
दादू मोहे रामजी । लीन भये सब दास ॥ ५२ ॥
जो तूँ मोटा मीर है । सब जीवों में जीव ।
आपा देखि न भूलिये । खरा दुहेला पीव ॥ ५३ ॥
आपा मेटि समाइ रह । दूजा धंधा बाँधि ॥
दादू काहे पचि मरहिं । सहजहिं सुमिरन साधि ॥ ५४ ॥
आपा मेटहिं एक रस । मन अस्थिर कर लीन ॥
अरस परस आनँद करहिं । सदा सुखी में दीन ॥ ५५ ॥
दादू है को भय घना । नाहीं को कुछ नाहिं ॥
दादू नाहीं होइ रह । अपने साहिब माहिं ॥ ५६ ॥
मैं नाहीं तहँ मैं गया । एकहि दूसर नाहिं ॥
नाहीं को ठहरा घना । दादू निज घर माहिं ॥ ५७ ॥
जहाँ राम तहँ मैं नहीं । मैं तहँ नाहीं राम ॥
दादू महल बरीक है । दोऊ कों नहिं ठावँ ॥ ५८ ॥
बिरह अगिनि को दाग दे । जीवत मिरतक गोर ॥
दादू पहिले घर किया । आदि हमारे ठौर ॥ ५९ ॥
हमें हमारा कर लिया । जीवत करनी सार ॥
पीछे को संसा नहीं । दादू अगम अपार ॥ ६० ॥
माटी माहें ठौर कर । माटी माटी माहिं ॥
दादू सम करि राखिये । दोउ पख दुबिधा नाहिं ॥ ६१ ॥

इति सबद को अंग संपूर्णम् ॥ २३ ॥

अथ सूरातन को अंग ।

——:o:——

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
साचा सिर सों खेल है । साधू जन को काम ॥
दादू मरन असंख्य है । सोइ कहइगा राम ॥ २ ॥
राम कहहिं ते मरि कहहिं । जीवत कहा न जाइ ॥
दादू ऐसे राम कह । सती सूर सम होइ ॥ ३ ॥
दादू जब मरिबा गहइ । लोगों का का लाज ॥
सती राम साचा कहइ । सब तजि पति सों काज ॥ ४ ॥
हम कायर कछु होइ रहे । सूर निराला होइ ॥
निकसि खड़ा मैदान में । ता सम और न कोइ ॥ ५ ॥
मरइ न जीवइ सँग चलइ । जीवइ तो घर आन ॥
जीवन मरना राम सों । सोइ सत्य करि जान ॥ ६ ॥
जनमहिं तें व्यभिचारिनी । नख सिख भरी कलंक ॥
पलक एक सब मुख जरी । दादू धोये अंक ॥ ७ ॥
सोहग सती का पहिर करि । करइ कुटुँब का सोच ॥
बाहर सूरा देखिये । दादू भीतर पोच ॥ ८ ॥
सती न सिरजनहार सों । जरइ बिरह की झार ॥
ना वह मरइ न जरि बुझइ । ऐसे संगि दयाल ॥ ६ ॥
जो मुझे होते लाख सिर । लाखहुँ देती बारि ॥
वह मुझे दीया एक सिर । सोई सउँपइ नारि ॥ १० ॥
सखी जरि कोइला भई । मूये मरे की लार ॥
जउँ वह जरती राम सों । साचे सँग भरतार ॥ ११ ॥

मुये मरे सो हेतु का। जीव कि जानइ नाहिँ॥
हेतु हरी सोँ कीजिये। अंतरजामी माहिँ॥ १२॥
सूरा चढि संग्राम को। पीछे पग क्योँ देइ॥
साहिब लाज नेँ भागना। धिग जीवन है तेइ॥ १३॥
सेवक सूरा राम का। सोइ कहइगा राम॥
दादु सुरा सनमुख रहइ। नहिँ कायर का काम॥ १४॥
कायर काम न आवई। यह सूरोँ का खेत॥
तन मन सउँपउ राम को। दादू सीस समेत॥ १५॥
जब लग लालच जीव का। निरभय हुआ न जाइ॥
काया माया मन तजइ। चौडे रहइ बजाइ॥ १६॥
चौडे मेँ आनंद है। नावँ धरा रनजीत॥
साहिब अपना करि लिया। अंतरगति की प्रीत॥ १७॥
जो तुझे काम करीम सोँ। चौहट चाढि कर नाँच॥
झूठा है सो जायगा। निहचय रहेगा साँच॥ १८॥
राम कहइगा एक को। जीवत मिरतक होइ॥
दादू ढूँढे पाइये। कोटि मधहिँ सब कोइ॥ १९॥
सूरा पूरा संतजन। साइँ को सेवइ॥
दादू साहिब कारनहिँ। सिर अपना देवइ॥ २०॥
सूरा जूझहिँ खेत मेँ। साइँ सनमुख आइ॥
सूरे को साइँ मिलइ। दादू काल न खाइ॥ २१॥
मरिबे ऊपर एक पग। करता करइ सो होइ॥
दादू साहिब कारनहिँ। ताला बेली मोइ॥ २२॥
दादू अंग न खीँचिये। कहि समुझावहुँ तोहि॥
मोहिँ भरोसा राम का। बाँका बार न होहि॥ २३॥
बहुत गया थोडा रहा। अब जिव सोच निवार॥
दादू मरना मांन ले। साहिब के दरबार॥ २४॥

जीवहि का संसा पड़ा । को का को तारहिँ ॥
दादू सोई सूरवाँ । जो आप उबारहिँ ॥ २५ ॥
जो निकसहिँ संसार तेँ । साईं की दिसि धाइ ॥
जो कबहूँ दादू फिरइ । पीछे मारा जाइ ॥ २६ ॥
पीछे हेला जिन करहि । आगे हेला आव ॥
आगे एक अनूप है । नहिँ पीछे का भाव ॥ २७ ॥
पीछे को पग ना धरहिँ । आगे को पग देहिँ ॥
दादू यह मत सूर का । अगम ठौर को लेहिँ ॥ २८ ॥
आगे चल पीछे फिरहिँ । ताको मुँह नहिँ दीठ ॥
दादू देखइ दोउ दल । भागे दे कर पीठ ॥ २९ ॥
दादू मरना मानि कर । रहइ नहीँ लव लाइ ॥
कायर भागइ जीव ले । अउरु न छोडे जाइ ॥ ३० ॥
सूरा होइ सुमेरु लँघइ । सब गुन बंधा छूटइ ॥
दादू निरभय होइ रहइ । कायर तिरिन न टूटइ ॥ ३१ ॥
सरपा सर काला कुँजर । जोधा मारग माहिँ ॥
कोटि मेँ कोई एस हैं । मरन असंसय जाहिँ ॥ ३२ ॥
जब जागे तब मारिये । बैरी जिव के साल ॥
मनसा डाइन काम मरइ । क्रोध महाबलि काल ॥ ३३ ॥
पाँच चोर चीतवत रहें । मया मोह बिष झार ॥
चेतहु पहरहि आपनो । कर गहि खडग सँभार ॥ ३४ ॥
काया कबुज कमान करि । सार सबद करि तीर ॥
दादू यह सर साधि कर । मारइ मोटे मीर ॥ ३५ ॥
काया कठिन कमान है । खइँचइ बिरला कोइ ॥
मारइ पाँचहु मीरगा । दादू सूरा सोइ ॥ ३६ ॥
जो हरि को पकडइ इन ऊपर । काम कटक दल जाहिँ कहाँ ॥
लालच लोभ क्रोध कित भागहिँ । प्रगट रहें हरि जहाँ तहाँ ॥ ३७ ॥

साहिब को सिजदा किया। सिर को धरा उतार॥
यों दादू जीवत मरहिँ। हिरिस हवा को मारि॥ ३८॥
तन मन काम करीम के। आवहिँ तो नीका॥
जिसका तिसको सउँपिये। सोच का जी का॥ ३९॥
जो सिर सउँपा राम को। सो सिर भया सुनाथ॥
दादू दे ऊरिन भया। जिसका तिसके हाथ॥ ४०॥
जिसका है तिस को चढ़इ। दादू ऊरिन होइ॥
पहिले देवइ सो भला। पीछे तो सब कोइ॥ ४१॥
साइँ तेरे नावँ पर। सिर जिव करुँ कुरबान॥
तन मन तुम पर वारनउँ। दादू पिंड परान॥ ४२॥
अपने साईँ कारनहुँ। का का नहिँ कीजइ॥
दादू सब आरंभ तजि। अपना सिर दीजइ॥ ४३॥
सिर के सादइ लीजिये। साहिब जी का नावँ॥
खेलइ सीस उतारि कर। दादू मैं बलि जावँ॥ ४४॥
खेलइ सीस उतारि कर। अधर एक सों आइ॥
दादू पावइ प्रेमरस। सुख में रहइ समाइ॥ ४५॥
मरनहिँ तें तूँ ना डरइ। सब जग मरता जाइ॥
मिलि कर मरना राम सों। कलि अजरामर होइ॥ ४६॥
मरने तें तूँ ना डरइ। मरना अंत निदान॥
रे मन मरना सिरजा। कहि ले केवल प्रान॥ ४७॥
मरने तें तूँ ना डरइ। मिरतु पहुँची है आइ॥
रे मन मेरा राम कहि। बेगि बार ना जाइ॥ ४८॥
मरने तें तूँ ना डरइ। मरना आज व काल॥
मरना मरना का करइ। बेगि राम संभाल॥ ४९॥
दादू मरनां खूब है। निपट बुरा ब्यभिचार॥
दादू पति को छाँडि कर। आन भजइ भरतार॥ ५०॥

दादू तन तेँ डेराहिँ कहँ । बिनसि जाइ परिवार ॥
कायर वहाँ न छूटहीँ । रे मन हो हुसियार ॥ ५१ ॥
दादू मरना खूब है । मरि माहैँ मिलि जाइ ॥
साहिब का सँग छाड़ि कर । कौन सहइ दुख आइ ॥ ५२ ॥
माहैँ मन सोँ जूझ करि । ऐसा सूरा बीर ॥
इंद्री अरिदल मानि सब । योँ कलि हुआ कबीर ॥ ५३ ॥
साईँ कारन सीस देइ । तन मन सकल सरीर ॥
दादू प्रानी पंच देइ । योँ हरि मिला कबीर ॥ ५४ ॥
सबइ कसौटी सिर सहइ । सेवक साईँ काज ॥
दादू जीवन क्योँ तजइ । भागे हरि के लाज ॥ ५५ ॥
साईँ कारन सब तजइ । जिनका ऐसा भाव ॥
दादू राम न छाड़िये । भावइ तन मन जाव ॥ ५६ ॥
दादू सेवक सो भला । सेवइ तन मन लाइ ॥
दादू साहिब छाडि कर । काहू संग न जाइ ॥ ५७ ॥
पतिब्रता पति पीय को । सेवइ दिन अरु रात ॥
दादू पति को छाडि कर । काहू संग न जात ॥ ५८ ॥
मरिहहु एक जो बार । अमर जीव के मारिये ॥
तउ तरिये संसार । आतम कारज सारिये ॥ ५९ ॥
जो तूँ प्यासा प्रेम का । जीवन का का आस ॥
सिर कइ साटइ पाइये । भरि भरि पीवइ दास ॥ ६० ॥
मन मनसा जीते नहीँ । पंच न जीते प्रान ॥
दादू रिपु जीते नहीँ । कह हम सूर सुजान ॥ ६१ ॥
मन मनसा मारइ नहीँ । काया मारन जाहिँ ॥
दादू बाबी मारिये । सरप मरइ क्योँ माहिँ ॥ ६२ ॥
दादू पाखर पहिरि कर । सब से जूझन जाइ ॥
अंग उघारइ सूरवाँ । चोट मुँहहिँ मुँह खाइ ॥ ६३ ॥

जब जूझइ तब जानिये। काछि खडे का होइ ॥
चोट मुँहहिं मुँह खाइगा। दादू सूरा सोइ ॥ ६४ ॥
सूरा तन सहजहिं सदा। साच सेल हथियार ॥
साहिब के बल जूझता। केते किये सुमार ॥ ६५ ॥
जब लग जिय लागइ नहीं। प्रेम प्रीति के सेल ॥
तब लग पिय क्योँ पाइये। बाजीगर का खेल ॥ ६६ ॥
जो तूँ प्यासा प्रेम का। किसको मैं तैं जीव ॥
सिर के साटे लीजिये। ते तुझ प्यारा पीव ॥ ६७ ॥
महजोधा मोटा बली। सदा हमारा मीर ॥
सब जग रूसा का करइ। जहाँ तहाँ रनधीर ॥ ६८ ॥
रहते रहते रामजन। तिन्ह भी माडा जूझ ॥
साँचा मुह मोडइ नहीं। अर्थ इताही बूझ ॥ ६९ ॥
दादू काँधे सब लगइ। निरबाहइगा और ॥
आसन अपने ले चला। दादू निहचल ठौर ॥ ७० ॥
का बल कहा पतंग का। जरत न लागइ बार ॥
बल तो हरि बलवंत का। जीवहिं जेहि आधार ॥ ७१ ॥
राखनहारा राम है। सिर ऊपर मेरे ॥
दादू केते पचि गये। बैरी बहुतेरे ॥ ७२ ॥
बाल तुम्हारा बापजी। गिनत न राना राव ॥
मीर मलिक परधान पति। तुम्ह बिन सब ही बाव ॥ ७३ ॥
दादू राखा राम पर। अपना आप सबाह ॥
दूजा कोइ देखइ नहीं। जानइ तउ निरबाह ॥ ७४ ॥
तुझ बिन मेरे कोइ नहीं। हमको राखनहार ॥
जो तूँ राखइ साइँयाँ। कोई न सकइ मार ॥ ७५ ॥
सब जग छोडइ हाथ तें। तुम्ह जिन छाडहु राम ॥
कारज नहिं कुछ जगत सों। तुम्ह ही सेतीं काम ॥ ७६ ॥

जा तैं जीवहु तहुँ डरा । जो जिव मेरा होइ ॥
जिन्ह यह जिव उपराजता । सार करइगा सोइ ॥ ७७ ॥
जिन्हको साईं उपधरा । तिन्ह बाँका नहिं कोइ ॥
सब जग रूसा का करइ । राखनहारा सोइ ॥ ७८ ॥
साचा साहिब सीर पर । ता लागइ ना बाव ॥
चरन कमल छाया रहइ । कीया बहुत पसाव ॥ ७९ ॥
जो तूँ राखइ साइयाँ । मारि सकइ नहिं कोइ ॥
बार न बंका करि सकइ । जो जग बैरी होइ ॥ ८० ॥
राखनहारा राखई । तिस को कौन मारइ ॥
उस को कौन डुबावई । जिस को साईं तारइ ॥ ८१ ॥
कह दादू वे कबहुँ न हारइ । जो जन साईं को संभारइ ॥८२॥
निरभय बैठा राम जपि । कबहुँ काल ना खाइ ॥
जब दादू कुंजर चढइ । तब सूना झखि जाइ ॥ ८३ ॥
कायर कूकुर कोटि मिलि । भूँकइ अरु भागइ ॥
दादू गरगा गुरुमुखी । हस्ती ना लागइ ॥ ८४ ॥

इति सूरातन को अंग संपूर्णम् ॥ २४ ॥

———:o:———

अथ काल को अंग ।

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
काल न सूझइ कंध पर । मन चितवइ बहु आस ॥
दादू जिव जानइ नहीं । कठिन काल की पास ॥ २ ॥
काल हमारे कंध चढ़ि । सदा बजावइ तूर ॥
कालहरन करतापुरुष । क्यों न सँभारइ सूर ॥ ३ ॥
जहवाँ दादू पग धरइ । तहाँ काल का फंध ॥
सिर ऊपर साधे खड़ा । अजहुँ न चेतइ अंध ॥ ४ ॥
कालगरासन का कहिय । कालरहित कह सोइ ॥
कालरहित सुमिरन सदा । बिना गरासन होइ ॥ ५ ॥
दादू मरिये राम बिन । जीवइ राम सँभाल ॥
अम्रित पीवइ आतमा । साधो बाचहिं काल ॥ ६ ॥
यह घट काचा जल भरा । बिनसत नाहीं बार ॥
यह घट फूटा जल गया । समुझत नहीं गवाँर ॥ ७ ॥
फूटी काया गागरी । नव ठाहर कानी ॥
तामें दादू क्यों रहइ । जीव सरीखा पानी ॥ ८ ॥
बाव भरी इस खाल का । झूठा गरब गुमान ॥
दादू बिनसइ देखता । तिसका का अभिमान ॥ ९ ॥
हम तो मूये माहिं हैं । जीवन केर भरम्म ॥
झूठे का का गारिबा । पाया मैं न मरम्म ॥ १० ॥
यह बन हरिय देखि कर । फूले फिरहिं गवाँर ॥
दादू यह मन मिरगा । काल अहेरी रार ॥ ११ ॥

सब ही दीखइ काल मुख । आपइ गहि कर दीन्ह ॥
बिनसइ घट आकार का । दादू जो कुछ कीन्ह ॥ १२ ॥
काल कीट तन काठ का । जुरा जनम को खाइ ॥
दादू दिन दिन जीव की । आयु घटतही जाइ ॥ १३ ॥
काल गरासइ जीव को । पल पल साँसइ साँस ॥
पल पल माहिँ दिन घड़ी । दादू लखइ न तास ॥ १४ ॥
परग पलक की सुधि नहीँ । साँस सबद का होइ ॥
कर मुख माहेँ डालता । दादू लखइ न कोइ ॥ १५ ॥
दादू काया कारुई । देखत ही चलि जाइ ॥
जब लग साँस सरीर मेँ । रामनाम लव लाइ ॥ १६ ॥
दादू काया कारुई । मोहिँ भरोसा नाहिँ ॥
आसन कुंजर छत्रसिर । बिनसि जाहिँ छिन माहिँ ॥ १७ ॥
दादू काया कारुई । परत न लागइ बार ॥
बोलनहारा महल मेँ । सो भी चालनहार ॥ १८ ॥
दादू काया कारुई । कभी चलइ ना संग ॥
कोटि बरस का जीवना । तउ होवइगा भंग ॥ १६ ॥
कहता सुनता देखता । लेता देता प्रान ॥
दादू सो कतहूँ गया । माटी धरी मसान ॥ २० ॥
सिंगीनाद न बाजहीँ । कित गये सो जोगी ॥
दादू रहते मढी मेँ । करते रस भोगी ॥ २१ ॥
दादू जियरा जाइगा । यह तन माटी होइ ॥
उपजा सो बिनसाइगा । अमर नहीँकाल कोइ ॥ २२ ॥
दादू देही देखता । सब किस ही की जाइ ॥
जब लग साँस सरीर मेँ । गोविँद के गुन गाइ ॥ २३ ॥
दादू देही पाहुनी । हंस बटाऊ माहिँ ॥
का जानहुँ कब चलइगा । मोहिँ भरोसा नाहिँ ॥ २४ ॥

दादू सब कोउ पाहुना । दिवस चारि संसार ॥
औसर औसर सब चले । हम भी येही बिचार ॥ २५ ॥
सब कोइ बैठे पंथ सिर । रहे बटाऊ होइ ॥
जो आये सो जाहिंगे । इस मारग सब कोइ ॥ २६ ॥
बेगि बटाऊ पंथ सिर । अब बिलंब न कीजइ ॥
दादू बइठा का करइ । राम जप लीजइ ॥ २७ ॥
संझा चलइ उतावला । पंथी बनखँड माहिँ ॥
बरिया नाहीँ ढील की । दादू बेगि घर जाहिँ ॥ २८ ॥
दादू करह पलान करि । को चेतन चढ़ि जाइ ॥
मिलि साहिब दिन देखता । साँझ पड़इ जिनि आइ ॥ २९ ॥
पंथ दुहेला दूर घर । संग न साथी कोइ ॥
उस मारग हम जाहिंगे । दादू क्यों सुख सोइ ॥ ३० ॥
लाँघन के रज्जू घना । कापर चहूँ दीन ॥
आला पाँखी पंथ मेँ । बीहंदा आहीन ॥ ३१ ॥
हसता रोता पाहुना । काहू छाड़ि नहिँ जाइ ॥
काल खड़ा सिर ऊपराहिँ । आवनहारा आइ ॥ ३२ ॥
बाली बैरी काल है । सो जीव न जानहिँ ॥
सब जग सूता नीँद भरि । इस तान तेँ बाखहिँ ॥ ३३ ॥
दादू करनी काल की । सब जग परलय होइ ॥
राम बिमुख सब मरि गये । चेत न देखइ कोइ ॥ ३४ ॥
साहिब को सुमिरहिँ नहीँ । बहुत उठावहिँ भार ॥
दादू करनी काल की । सब परलय संसार ॥ ३५ ॥
सूता काल जगाइ कर । सब पइसइ मुख माहिँ ॥
दादू अचरज देखिया । कोई चेतइ नाहिँ ॥ ३६ ॥
जीव बेसाहहिँ काल को । करि करि कोटि उपाय ॥
साहिब को समुझइ नहीँ । योँ परलय होइ जाय ॥ ३७ ॥

दादू कारन काल के । सकल सँवारइ आप ॥
मीच बिसाहहिँ मरन को । दादू सोक सँताप ॥ ३८ ॥
दादू अम्रित छाडि कर । बिषहिँ हलाहल खाहिँ ॥
जीव बेसाहइ काल को । मूरख मरि मरि जाहिँ ॥ ३९ ॥
निरमल नावँ बिसारि कर । दादू जीव जँजाल ॥
नहीँ तहाँ तेँ करि लिया । मनसा माहैँ काल ॥ ४० ॥
सब जग छेली काल कसाई । खडग लिये कँठ काटइ ॥
पाँच तत्त की पाँच पाँखरी । खंड खंड करि बाँटइ ॥ ४१ ॥
सब जग सूता नीँद भरि । जागइ नाहीँ कोइ ॥
आगे पीछे देखिये । परतछ परलय होइ ॥ ४२ ॥
काल झार मेँ जग जरइ । भाग न निकसइ कोइ ॥
दादू सरनहुँ साच के । अभय अमर पद होइ ॥ ४३ ॥
ये सज्जन दुरजन भये । अंत काल की बार ॥
दादू इन्ह मेँ कोइ नहीँ । बिपत बटावनहार ॥ ४४ ॥
संगी साजन आपने । साथी सिरजनहार ॥
दादू दूजा कोइ नहीँ । येहि कलि येहि संसार ॥ ४५ ॥
एक दिन बीते चलि गये । वे दिन आये धाइ ॥
रामनाम बिन जीव को । काल गरासइ जाइ ॥ ४६ ॥
जो उपजा सो बिनसिहहिँ । जो दीखइ सो जाइ ॥
दादू निरगुन नाम जप । निहचल चित्त लगाइ ॥ ४७ ॥
जो उपजा सो बिनसिहहिँ । कोई थिर न रहाहिँ ॥
दादू बारी आपनी । जो दीखहिँ सो जाहिँ ॥ ४८ ॥
सब जग मरि मरि जात है । अमर उपावनहार ॥
रहता रमता राम है । बहता सब संसार ॥ ४९ ॥
दादू कोई थिर नहीँ । यह सब आवइ जाइ ॥
अमर पुरुष आपइ रहइ । कोइ साधू लव लाइ ॥ ५० ॥

यह जग जाता देखि कर। दादू करी पुकार ॥
घडी मुहूरत चालता। राखइ सिरजनहार ॥ ५१ ॥
बिष सुख माहैं खेलता। काल पहूँचा आइ ॥
उपजइ बिनसइ देखता। यह जग यों ही जाइ ॥ ५२ ॥
रामनाम बिन जीव जो। केते मुये अकाल ॥
मीँच बिना जो मरत हैं। ता तें दादू साल ॥ ५३ ॥
सरप सिंह हस्ती घना। राकस भूत परेत ॥
तिस बन में दादू पडा। चेतइ नहीं अचेत ॥ ५४ ॥
पूत पिता तें बीछुडा। भूल पडा किस ठोर ॥
मरइ नहीं उर फारि कर। दादू बडा कठोर ॥ ५५ ॥
जो दिन जाइ सो बहुरि न आवइ। आयु घटइ तन छीजइ ॥
अंत काल दिन आइ गया अब। दादू ढील न कीजइ ॥ ५६ ॥
दादू औसर चलि गया। बेरिया गई बिहाइ ॥
कर छिटके कहँ पाइये। जनम अमोलिक जाइ ॥ ५७ ॥
दादू गाफिल होइ रहा। बहिरा हुआ गवाँर ॥
सो दिन चेत न आवई। सोवइ पावँ पसार ॥ ५८ ॥
काल हमारा कर गहइ। दिन दिन खींचत जाइ ॥
तबहूँ जिव जागइ नहीं। सोवत गई बिहाइ ॥ ५९ ॥
सूता आवइ सूता जाइ। सूता खेलइ सूता खाइ ॥
सूता लेवइ सूता देवइ। दादू सूता सूता जाइ ॥ ६० ॥
दादू देखत ही भया। स्याम बरन तें सेत ॥
तन मन जोबन सब गया। अबहुँ न हरि सों हेत ॥ ६१ ॥
झूठे के घर देखि कर। झूठे पूछहिं जाइ ॥
झूठे झूठा बोलते। रहे मसानहुँ आइ ॥ ॥ ६२ ॥
प्रान पयानाँ करि गया। माटी धरी मसान ॥
जारनहारे देखि कर। चेतइ नहीं अजान ॥ ६३ ॥

कोई जारइ कोइ जरावइ। कोई जारन जाहिँ ॥
कोई जारन को करहिँ। दादू जीवन नाहिँ ॥ ६४ ॥
कोई गाडइ कोइ गडावइ। कोई गाडन जाहिँ ॥
कोई गाडन को करइ। दादू जीवन नाहिँ ॥ ६५ ॥
उठि रे प्रानी जाग जिव। अपना सजन सँभाल ॥
गाफिल नीँद न कीजिये। आय पहूँचा काल ॥ ६६ ॥
समरथ का सरना तजइ। गहइ आन की ओट ॥
दादू बलवँत काल की। क्योँ कर बाँचइ चोट ॥ ६७ ॥
अबिनासी के आसरे। अजरामर की ओट ॥
दादू सरनहिँ साच के। कधी न लागइ चोट ॥ ६८ ॥
मूसा भागा मरन तेँ। जहाँ जाय तहँ गोर ॥
दादू सरग पताल मेँ। कठिन काल का सोर ॥ ६९ ॥
सब मुख माहैँ काल के। मढ है मायाजाल ॥
दादू गोर मसान मेँ। झंखइ सरग पताल ॥ ७० ॥
दादू मढा मसान का। केता करहिँ डँकान ॥
मिरतक मुरदा गोर का। बहुत करहिँ अभिमान ॥ ७१ ॥
राजा रानी राव मेँ। मैखानहुँ स्त्री खान ॥
माया मोह पसारई। सब धरती असमान ॥ ७२ ॥
पाँच तत्त का पूतरा। यह पिंड सवाँरा ॥
मंदिर माटी माँस की। बिनसत नहीँ बारा ॥ ७३ ॥
हाड चाम का पीँजरा। बिच बोलनहारा ॥
दाद ता मेँ पैठि कर। बहु किया पसारा ॥ ७४ ॥
बहुत पसारा करि गया। कुछ हाथ न आया ॥
दादू हरि की भगति बिन। प्रानी पछताया ॥ ७५ ॥
मानसजल का बुदबुदा। पानी का पोटा ॥
दादू काया कोट मेँ। मेवा सोँ मोटा ॥ ७६ ॥

बाहर गढ निरभय करइ। जीव के ताहीं॥
दादू माहिं काल है। सो जानइ नाहीं॥ ७७॥
साच मते साहिब मिलइ। कपट मिलइगा काल॥
साच परमपद पाइये। कपट कया में साल॥ ७८॥
मनहीं माहिं मींच है। सारहुं के सिर साल॥
जो कुछ ब्यापइ राम बिन। दादू सोई काल॥ ७९॥
जेती लहर बिकार की। काल कमल में सोइ॥
प्रेमलहर सो पीय की। भिन्न भिन्न यों होइ॥ ८०॥
काल रूप माहिं बसइ। कोइ न जानइ ताइ॥
खूनी करनी काल है। सब काहू को खाइ॥ ८१॥
बिखु अम्रित घट में बसइ। दूनहुं एकइ ठावें॥
माया बिषय बिकार सब। अम्रित बस हरि नावें॥ ८२॥
कहँ सो महम्मद मीर था। सब नबियहुं सिरताज॥
सो भि मीर माटी हुये। अमर अलह का राज॥ ८३॥
केते मरि माटी भये। बहुत बडे बलवंत॥
दादू केते होइ गये। दानो देव अनंत॥ ८४॥
धरती करते एक डग। दरिया करते फाल॥
डाकू परबत कादते। सो भी खाये काल॥ ८५॥
सब जग काँपइ काल तें। ब्रह्मा बिस्नु महेस॥
सुर नर मुनिजन लोक सब। सरग रसातल सेस॥ ८६॥
चाँद सुरुज अरु पवन जल। ब्रह्मांड खंड प्रबेस॥
काल डरइ करतार तें। जय जय तुम्ह आदेस॥ ८७॥
पवना पानी धरती अंबर। बिनसइ रबि ससि तारा॥
पाँच तत्त सब माया बिनसइ। मानिक कहाँ बिचारा॥ ८८॥
दादू बिनसहिं तेज के। माटी के किस माहिं॥
अमर उपजवनहार है। दूजा कोई नाहिं॥ ८९॥

प्रान पवन ज्यों पातरा। काया करइ कमाइ ॥
दादू सब संसार में। क्यों ही गह्या न जाइ ॥ ९० ॥
नूर तेज ज्यों जोति है। प्रान पिंड यों होइ ॥
दृष्टि मुष्टि आवइ नहीं। साहिब के बस सोइ ॥ ९१ ॥
मनहीं माहें होइ मरइ। जीवइ मनहीं माहिं ॥
साहिब साखीभूत है। दादू दूषन नाहिं ॥ ९२ ॥
आपइ मारइ आप को। आप आप को खाइ ॥
आपइ अपना काल है। दादू कह समुझाइ ॥ ९३ ॥
आपइ मारइ आप को। यह जीव बेचारा ॥
साहिब राखनहार है। सो हितू हमारा ॥ ९४ ॥

इति काल को अंग संपूर्णम् ॥२५॥

—*—

अथ सजीवन को अंग।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
जो तूँ जोगी गुरुमुखी । लेना तत्त बिचार ॥
गहि आवध गुरुज्ञान का । कालपुरुष को मार ॥ २ ॥
नाद बिंदु सों घट भरइ । जोगी जीवइ ॥
दादू काहे को मरइ । रामरस पीवइ ॥ ३ ॥
साधू जन की बासना । सबद रहइ संसार ॥
दादू आतम ले मिलइ । अमर उपजवनहार ॥ ४ ॥
राम सरीखे होइ रहइ । यह नाहीं होनहार ॥
दादू साधू अमर है । बिनसइ सब संसार ॥ ५ ॥
जो कोइ सेवइ राम को । राम सरीखा होइ ॥
दादू नाम कबीर ज्यों । साखी बोलइ सोइ ॥ ६ ॥
अरथ न आया सो गया । आया सो क्यों जाइ ॥
दादू तन मन जीवता । आपा ठौर लगाइ ॥ ७ ॥
पहिले था सो अब भया । अब सो आगे होइ ॥
दादू तीनों ठौर की । बिरला बूझइ कोइ ॥ ८ ॥
जे जन बेधे प्रीति सों । ते जन सदा सजीव ॥
उलटि समाना आप में । अँतर नाहीं पीव ॥ ९ ॥
सब रँग तेरे तें रँगे । तूँ हि सब रँग माहिँ ॥
सब रँग तेरे तें किये । दूजा कोई नाहिं ॥ १० ॥
छूटइ दंद तो लागइ बंद । लागइ बंद तो अमरा कंद ॥
अमरकंद दादू आनंद । आनँद तें मिल परमानंद ॥ ११ ॥

जमचौरासी भाजिये। कहाँ काल को डंड ॥
कहाँ मींच को मारिये। कहँ जोडा सत,खंड ॥ १२ ॥
अमरठौर अबिनासी आसन। तहाँ निरंजन लागि रहे ॥
दादू जोगी जुग जुग जीवइ। काल ब्याल सब सहज गहे ॥१३॥
रोम रोम लेइ लाइ धुनि। अइसहि सदा अखंड ॥
दादू अबिनासी मिलइ। जम को दीजइ दंड ॥ १४ ॥
जोडा काल जनम मरन। जहाँ जहाँ जिव जाइ ॥
भगतपरायन लीन मन। ता को काल न खाइ ॥ १५ ॥
मरना भागा मरन तें। दुःखहि भागा दुक्ख ॥
दादू भय सों भय गया। सुखहिँ छूटा सुक्ख ॥ १६ ॥
जीवत मिलइ सो जीवता। मुये मिलइ मरि जाइ ॥
दादू दोनों देखि कर। जहँ जानइ तहँ लाइ ॥ १७ ॥
दादू साधन सब किया। उनमें लागा मन्न ॥
दादू अस्थिर आतमा। जुग जुग जीवइ जन्न ॥ १८ ॥
रहते सेतीं लागि रह। तो अजरामर होइ ॥
दादू देख बिचार कर। जुदा न जीवइ कोइ ॥ १६ ॥
जेती करनी काल की। तेती परहरि प्रान ॥
दादू आतमराम सों। जो तूँ खरा सुजान ॥ २० ॥
बिष अम्रित घट में बसइ। बिरला जानइ कोइ ॥
जिन्ह बिष खाये ते मुये। अमर अमी सों होइ ॥ २१ ॥
दादू सबही मरि गये। जीवइ नाहीं कोइ ॥
सोई कहिये जीवता। कलि अजरामर होइ ॥ २२ ॥
देह रहइ संसार में। जीव राम के पास ॥
दादू कुछ ब्यापइ नहीं। काल झार दुख त्रास ॥ २३ ॥
काया की संगत तजइ। बइठा हरिपद माहिँ ॥
दादू निरभय होइ रहइ। कोइ गुन ब्यापइ नाहिँ ॥ २४ ॥

दादू तजि संसा सबहि । रहइ निराला होइ ॥
अबिनासी के आसरे । काल न लागइ कोइ ॥ २५ ॥
जागउ लागउ राम सों । रैन बिहाई जाइ ॥
सुमिर सनेही आपना । दादू काल न खाइ ॥ २६ ॥
जागउ लागउ राम सों । छाडहु बिषय बिकार ॥
पीवहु जीवहु रामरस । आतमसाधन सार ॥ २७ ॥
मरइ तपावइ पीय को । जीवत बाचइ काल ॥
दादू निरभय नावँ ले । दोनों हाथ दयाल ॥ २८ ॥
दादू मरने को चला । सब जीवन के साथ ॥
दादू लाहा मूल सों । दोनों आये हाथ ॥ २९ ॥
दादू जाते देखिये । लाहा मूल गवाँइ ॥
साहिब की गति अगम है । सो कुछ लखी न जाइ ॥ ३० ॥
साहिब मिलइ तो जीवई । नहिं तो जीवइ नाहिं ॥
भावइ अनत उपाय करि । दादू दूहूँ माहिं ॥ ३१ ॥
सब जीवन साधइ नहीं । ता तें मरि मरि जाइ ॥
दादू पीवहिं रामरस । सुख में रहे समाइ ॥ ३२ ॥
दिन दिन लहुरे होहिं सब । मोटा होता जाइ ॥
दादू दिन दिन ते बडे । रहे राम लव लाइ ॥ ३३ ॥
जानहु हाजी चुप गही । मेटि अगिन की झाल ॥
सदा सजीवन सुमिरिये । दादू बाचइ काल ॥ ३४ ॥
जीवत छूटइ देहगुन । जीवत मुकुता होइ ॥
जीवत काटइ करम सब । मुकुत कहावइ सोइ ॥ ३५ ॥
जीवत ही पुतरा तरे । जीवत लाँघे पार ॥
जीवत पाया जगतगुरु । दादू ज्ञान बिचार ॥ ३६ ॥
जीवत जगपति को मिले । जीवत आतमराम ॥
जीवत दरसन देखिये । दादू मन बिस्राम ॥ ३७ ॥

जीवत् पाया प्रेमरस । जीवत पिया अघाइ ॥
जीवत पाया स्वादसुख । दादू रहे समाइ ॥ ३८ ॥
जीवत भागे भरम सब । छूटे करम अनेक ॥
जीवत मुकुती सद्गती । दादू दरसन एक ॥ ३६ ॥
जीवत मेला ना भया । जीवत परसन होइ ॥
जीवत जगपति ना मिलइ । दादू बूडे सोइ ॥ ४० ॥
जीवत पुतरा ना तरइ । जीवत लँघइ न पार ॥
जीवत निरभय ना भये । दादू ते संसार ॥ ४१ ॥
जीवत परगट ना भया । जीवत परचा नाहिँ ॥
जिवत न पाया पीव को । बूडे भवजल माहिँ ॥ ४२ ॥
जीवत पद पाया नहीँ । जीवत मिले न जाइ ॥
जीवत जो छूटे नहीँ । दादू गये बिलाइ ॥ ४३ ॥
दादू छूटइ जीवता । मूवा छूटइ नाहिँ ॥
मूये पीछे छूटिये । सब आये उस माहिँ ॥ ४४ ॥
मूये पीछे मुकुति बतावहिँ । मूये पीछे मेला ॥
मूये पीछे अमर भये पद । दादू भूल गहेला ॥ ४५ ॥
मूये पीछे बैकुंठबास । मूये सरग पठावहिँ ॥
मूये पीछे मुकुति बतावहिँ । दादू जग बौरावहिँ ॥ ४६ ॥
मूये पीछे पद पहुँचावहिँ । मूये पीछे तारहिँ ॥
मूये पीछे सतगत होवहिँ । दादू जीवत मारहिँ ॥ ४७ ॥
मूये पीछे भगति बतावहिँ । मूये पीछे सेवा ॥
मूये पीछे संजम राखइ । दादू दोजग देवा ॥ ४८ ॥
धरती का साधन किया । अंबर कौन सध्यास ॥
रवि ससि किस आरंभ तेँ । अमर भये निज दास ॥ ४६ ॥
साहिब मारे तेँ मुये । कोई जीवइ नाहिँ ॥
साहिब राखे तेँ रहे । दादू निजघर माहिँ ॥ ५० ॥

जो जन राखे रामजी। अपने अंग लगाइ॥
दादू कुछ व्यापइ नाहिं। कोटि काल झख जाइ॥ ५६॥

इति सजीवन को अंग संपूर्णम्॥ २६॥

——:o:——

अथ पारिख को अंग।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः॥
बंदनं सर्व साधवा। परनामं पारंगतः॥ १॥
मन चित आतम देखिये। लागा है किस ठौर॥
जहँ लागा तस जानिये। देखइ दादू और॥ २॥
दादू साधू परखिये। अंतर आतम देख॥
मन माहिँ माया रहइ। आपइ आप अलेख॥ ३॥
दादू मन की देखि कर। पीछे धरिये नावँ॥
अंतरगति की जो लखहिँ। तिनकी मैँ बलि जावँ॥ ४॥
बाहर का सब देखिये। भीतर लखा न जाइ॥
बाहर दिखला लोग का। भीतर राम दिखाइ॥ ५॥
यह पारिख है ऊपरी। भीतर की यह नाहिँ॥
अंतर की जानइ नहीँ। ता तेँ धोखा खाहिँ॥ ६॥
जो नाहीँ सो सब कहहिँ। हैँ सो कहइ न कोइ॥
खोटा खरा परखिये। ज्योँ था त्योँही होइ॥ ७॥
दहदिस फिरइ सो मन्न है। आवइ जाइ पवन्न॥
राखनहारा प्रान है। देखनहारा ब्रह्म॥ ८॥
घट की भाँति अनीति सब। मन की मेटि उपाध॥
दादू परिहर पंच की। राम कहहिँ ते साध॥ ९॥
अरथ आया तब जानिये। जब अनरथ छूटइ॥
दादू भार भरम्म का। गिर चौडहिँ फूटइ॥ १०॥
दूजा कहिबे को रहा। अंतर डारा धोइ॥
ऊपर कीये सब कहहिँ। मोहिँ न देखइ कोइ॥ ११॥

मेरे माहैं जिव रहइ। तइसी आवइ बास ॥
मुख बोलइ तब जानिये। अंतर का परकास ॥ १२ ॥
दादू ऊपर देखि कर। सब को राखइ नावँ ॥
अंतरगत की जो लखइ। तिन की मैं बलि जावँ ॥ १३ ॥
तन मन आतम एक है। दूजा सब होनहार ॥
दादु मूल पाया नहीं। दुबिधा भरम बिकार ॥ १४ ॥
काया के सब गुन बँधे। चौरासी लख जीव ॥
दादू सेवक सो नहीं। जो रँग राते पीव ॥ १५ ॥
काया के बस जीव है। होइ गये अनँत अपार ॥
दादू काया बस करइ। नीरंजन निरकार ॥ १६ ॥
पूरन ब्रह्म बिचारिये। सकल आतमा एक ॥
काया के गुन देखिये। नाना बरन अनेक ॥ १७ ॥
बुद्धि बिबेक बिचार बिन। मानुष पसू समान ॥
समुझाये समुझइ नहीं। दादू परम अज्ञान ॥ १८ ॥
सब जिव प्रानी भूत हैं। साधु मिलहिं तब देव ॥
ब्रह्म मिलहि तब ब्रह्म है। दादू अलख अभेव ॥ १९ ॥
दादू बाँधा जीव है। छूटा ब्रह्म समान ॥
दादू दोनों देखिये। दूजा नाहीं आन ॥ २० ॥
करमहि के बस जीव है। करमरहित सो ब्रह्म ॥
जहँ आतम परमातमा। दादू भाग भरम्म ॥ २१ ॥
काचा उछरइ उफडइ। काया हाँडी माहिं ॥
दादू पाका मिलि रहहिं। जीव ब्रह्म होइ नाहिं ॥ २२ ॥
बाँधे सुरवा बायें बाजइ। इहवाँ सो धर लीजइ ॥
रामसनेही साधू हाथे। बेग मोहिं कलि दीजइ ॥ २३ ॥
प्रान जौहरी पारखी। मन खोटा ले आवइ ॥
खोटा मन के माथे मारइ। दादू धूर उडावइ ॥ २४ ॥

स्रवना है पर नैना नाहीं । ता तें खोटा खाहिं ॥
ज्ञान बिचार न ऊपजइ । साच झूठ समझाहिं ॥ २५ ॥
दादू साचा लीजिये । झूठा दीजइ डार ॥
साचा सनमुख राखिये । झूठा नेह निवार ॥ २६ ॥
साचे को साचा कहइ । झूठे को झूठा ॥
दादू दुबिधा कोइ नहीं । ज्यों था त्यों दीठा ॥ २७ ॥
हीरे को कंकड़ कहइ । मूरख लोग अजान ॥
दादू हीरा हाथ ले । परखइ साधु सुजान ॥ २८ ॥
हीरा कौड़ी ना लहइ । मूरख हाथ गवाँर ॥
पाया पारिख जौहरी । दादू मोल अपार ॥ २९ ॥
अंधे हीरा परखिया । कीया कौडी मोल ॥
दादू साधू जौहरी । हीरा मोल न तोल ॥
सरगुन निरगुन परखिये । साधु कहइ सब कोइ ॥
सरगुन निरगुन झूठ सब । साहिब के दर होइ ॥ ३० ॥
सरगुन सत संजम रहइ । सनमुख सिरजनहार ॥
निरगुन लोभी लालची । भूजइ बिषय बिकार ॥ ३१ ॥
खोटा खरा परेखिये । दादू कस कर लेइ ॥
साचा है सो राखिये । झूठा रहइ न देइ ॥ ३२ ॥
खोटा खरा कर देयइ पारिख । कैसेही बन आवइ ॥
खरे खोटे का न्याव निवारइ । साहिब के मन भावइ ॥ ३३ ॥
जिन्ह जो कहा तिन्ह त्यों माना । ज्ञान बिचार न कीन्हा ॥
खोटा खरा जिय पारिख न जानहिं । झूठ साच करि लीन्हा ॥ ३४ ॥
जो निधि कहीं न पाइये । सो निधि घर घर माहि ॥
दादू महँगे मोल बिन । कोई न लेवइ ताहि ॥ ३५ ॥
खरी कसौटी कीजिये । बानी बँधती जाइ ॥
दादू साचा परखिये । महँगे मोल बिकाइ ॥ ३६ ॥

राम कसइ सेवक खरा। कधी न मोड़इ अंग॥
दादू जब लग राम है। तब लग सेवक संग॥३७॥
कबहुँ न बिगरइ सो भला। साधू दृढ मत होइ॥
दादू हीरा एक रस। बाँधी गठरी सोइ॥ ३८॥
दादू कम कर खोजिये। बहु ता तें परमान॥
खोटा गाँठि न बाँधिये। साहिब के दीवान॥ ३९॥
खरी कसौटी पीय की। बिरला पहुँचनहार॥
जो पहुँचे ते ऊबरे। ताहि किये ततसार॥ ४०॥
साइ कसइ सेवक खरा। सेवक को सुख होइ॥
साहिब करइ सो सब भला। बुरा न कहिये कोइ॥ ४१॥

इति पारिख को अंग संपूर्णम् ॥२७॥

——:o:——

अथ उपज को अंग ।

———:o:——

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
माया का गुन बल करइ । आपा उपजइ आइ ॥
राजस तामस सातकी । मन चंचल होइ जाइ ॥ २ ॥
आपा नाहीं बल मिटइ । त्रिबिध तिमिर नहिं होइ ॥
दादू यह गुन ब्रह्म का । सुन्न समाना सोइ ॥ ३ ॥
अनभय उपजी गुन भया । गुन हीं पर ले जाय ॥
गुन हीं सों गहि बाँधिया । छूटइ कौन उपाय ॥ ४ ॥
दोनों पछ उपजइ परइ । निरपछ अनभय सार ॥
एक राम दूजा नहीं । दादू लेहु बिचार ॥ ५ ॥
काया बाउर गुनमयी । मन मुख उपजइ ज्ञान ॥
चौरासी लख जीव को । इस माया का ध्यान ॥ ६ ॥
आतमबोध बाँझ का बेटा । गुरुमुख उपजे आइ ॥
दादू पंगुल पंच बिन । जहाँ राम तहँ जाइ ॥ ७ ॥
आतम माहैं ऊपजइ । दादू पंगुल ज्ञान ॥
क्रित्रिम जाइ उलंघि कर । जहाँ निरंजन थान ॥ ८ ॥
आतमउपज अकास का । सुन धरती की बाट ॥
दादू मारग गैब का । कोई लखइ न घाट ॥ ९ ॥
आतमबोधी अनभया । साधू निरपछ होइ ॥
दादू दाता राम सों । रस पीवइगा सोइ ॥ १० ॥
प्रेमभगति जब ऊपजइ । निहचल सहज समाध ॥
दादू पीवइ रामरस । सतगुरु के परसाद ॥ ११ ॥

प्रेमभगति जब ऊपजइ। पंगुल ज्ञान बिचार ॥
दादू हरिरस पाइये। छूटहिं सकल बिकार ॥ १२ ॥
भगति निरंजन राम की। अबिचल अबिनासी ॥
सदा सजीवन आतमा। सहजहिं परकासी ॥ १३ ॥
संझा बिजयी आतमा। उपजा आनँदभाव ॥
सहज सील संतोष सत। प्रेममगन मन राव ॥ १४ ॥
मानुष जब उड चालते। कहते मारग माहिं ॥
दादू पहुँचे पंथ चल। कहहिं सो मारग नाहिं ॥ १५ ॥
पहिले हम सब कुछ किया। भरम करम संसार ॥
दादू अनभय ऊपजी। रहते सिरजनहार ॥ १६ ॥
पारब्रह्म कह प्रान सों। प्रान कहा घट सोइ ॥
दादू घट सब सों कहा। बिष अम्रित गुन दोइ ॥ १७ ॥
मालिक कह अरवाह सों। अरवह कह औजूद ॥
औजूद आलम सों कहा। हुकुम खबर मौजूद ॥ १८ ॥
दादू जैसा ब्रह्म है। अनभय उपजी होइ ॥
जैसा है तैसा कहइ। दादू बिरला कोइ ॥ १६

इति उपज को अंग संपूर्णम्॥२८॥

——:o:——

अथ दया निरबलता को अंग ॥

——:o:——

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवत: ॥
बंदनं सर्व साधवा । परंनामं पारंगत: ॥ १ ॥
आपा मेटइ हरि भजइ । तन मन तजइ बिकार ॥
निरबैरी सब जीव सों । दादू यह मतसार ॥ २ ॥
निरबैरी निज आतमा । साधन का मतसार ॥
दादू दूजा राम बिन । बैरी मंझ बिकार ॥ ३ ॥
निरबैरी सब जीव सों । संत जन सोई ॥
दादू एकइ आतमा । बैरी नाहिं कोई ॥ ४ ॥
सब देखा मैं सोधि कर । दूजा नाहीं आन ॥
सब घट एकइ आतमा । का हिंदू मुसलमान ॥ ५ ॥
दोनों भाई हाथ पग । दोनों भाई कान ॥
दोनों भाई नैन हैं । हिंदू मुसलमान ॥ ६ ॥
दादू को दूजा नहीं । एकइ आतमराम ॥
सतगुरु सिर पर साधु सब । प्रेमभगति बिस्राम ॥ ७ ॥
दादू संसा आरसी । देखत दूजा होइ ॥
भरम गया दुबिधा मिटी । दूजा नाहीं कोइ ॥ ८ ॥
किन्ह सों बैरी होइ रहा । दूजा कोई नाहिं ॥
जिन्ह के अँग तें ऊपजइ । सोई है सब माहिं ॥ ९ ॥
सब घट एकइ आतमा । जानहिं सो नीका ॥
आपा पर में चीन्हि ले । दरसन है पी का ॥ १० ॥
काहे को दुख दीजिये । घट घट आतमराम ॥
दादू सब संतोखिये । यह साधू का काम ॥ ११ ॥

एकइ अल्ला राम है। समरथ साईं सोइ॥
मैदे के पकवान सब। खाना होइ सो होइ॥ १२॥

काहे को दुख दीजिये। साईं है सब माहिं॥
दादू एकइ आतमा। दूजा कोई नाहिं॥ १३॥

साहिबजी का आतमा। दीजइ सुख संतोष॥
दादू दूजा कोइ नहीं। चौदह तीनहुँ लोक॥ १४॥

दादू एकइ आतमा। साहिब है सब माहिं॥
साहिब के नाते मिलइ। भेख पंथ के नाहिं॥ १५॥

प्रान पिछानहिं आप को। आतम सब भाई॥
सिरजनहारा सब का। ता सों लव लाई॥ १६॥

आतमराम बिचार करि। घट घट देवदयाल॥
दादू सब संतोखिये। सब जीवहु प्रतिपाल॥ १७॥

पूरन ब्रह्म बिचारिये। दुतिय भाव करि दूर॥
सब घट साहिब देखिये। राम रहा भरपूर॥ १८॥

दादू मंदिर काँच का। मरकट सों नहिं जाइ॥
दादू एक अनेक होइ। आप आप को खाइ॥ १९॥

आतमभाई जीव सब। एक पेट परिवार॥
दादू मूल बिचारिये। दूजा कौन गवाँर॥ २०॥

तन मन आतम एक है। दूजा सब होनहार॥
दादू मूल पाया नहीं। दुविधा भरम बिकार॥ २१॥

काया के बस जीव सब। होइ गये अनँत अपार॥
दादू काया बस करइ। नीरंजन निरकार॥ २२॥

घट घट के होनहार सब। प्रान परस होइ जाय॥
दादू एक अनेक होइ। बरनहु नाना भाइ॥ २३॥

आये एकइ कारु सब। साईं दिये पठाइ॥
दादू न्यारा नाँवँ धरि। भिन्न भिन्न होइ जाइ॥ २४॥

आपै एकइ कार सब। साई दिये पठाइ ॥
आदि अंत सब एक है। दादू सहज समाइ ॥ २५ ॥
सूधा सहजहिं कीजिये। नीला भानइ नाहिं ॥
काहे को दुख दीजिये। साहिब मानइ नाहिं ॥ २६ ॥
आतमदेव अराधिये। बिरोधिये नहिं कोइ ॥
आराधे सुख पाइये। बीरोधे दुख होइ ॥ २७ ॥
आपइ देखइ आप को। जो दूसर नहिं होइ ॥
दादू दूसर जो नहीं। दुक्ख न पावइ कोइ २८ ॥
दादू सम करि देखिये। कुंजर कीट समान ॥
दादू दुबिधा दूर करि। तज आपा अभिमान ॥ २९ ॥
पूरन ब्रह्म बिचारिये। सकल आतमा एक ॥
काया के गुन देखिये। नाना बरन अनेक ॥ ३० ॥
दादू आरस खुदा का। अजरामर का थान ॥
दादू सो क्यों ढाहिये। साहिब का नीसान ॥ ३१ ॥
आप चिन्हावइ देहरा। तिसका करहिं जतन ॥
परतक परमेस्वर किया। मानहिं जीव रतन ॥ ३२ ॥
मासिति सवारी मानसा। तिस को करहिं सलाम ॥
ऐन आप पैदा किया। सो ढाहइ मुस्लमान ॥ ३३ ॥
जंगल माहैं जीव जो। जग तें रहइ उदास ॥
भीत भयानक रात दिन। निहचल नाहीं बास ॥ ३४ ॥
बाचाबंधी जीव सब। भोजन पानी घास ॥
आतमज्ञान न ऊपजइ। दादू करहिं बिनास ॥ ३५ ॥
काला मुँह करि करद का। दिल तें दूर निवार ॥
सब सूरति सुबिहान की। मुल्ला मुग्ध न मार ॥ ३६ ॥
गला गुसे का काटिये। मियाँ मनी को मार ॥
पाँचो सुमिरन कीजिये। येही सबहि बकार ॥ ३७ ॥

बैर बिरोधइ आतमा। दया नहीं दिल माहिं॥
दादू सूरति राम की। ता को मारन जाहिं॥ ३८॥
कुल आलम इके दीदम। अरवाहे इखलास॥
बद अमल बदकार तुई। पाक यारा पास॥ ३९॥
भावहीन जो पिरथिवी। दया बिहीना देस॥
भगति नहीं भगवंत की। तहँ कइसा परबेस॥ ४०॥
कालजाल तें काढ़ि कर। आतम अंग लगाइ॥
जीव दया यह पालिये। दादू अम्रित खाइ॥ ४१॥
बुरा न चाहइ जीव का। सदा सजीवन सोइ॥
परलय बिषय बिकार सब। भाव भगति रत होइ॥ ४२॥
न कोई बैरी न कोई मीत। दादू राम मिलन की चीत॥ ४३॥

इति दयानिरबलता को अंग संपूर्णम्॥२९॥

——:o:——

अथ सुंदरी को अंग ।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
आरतवंती सुंदरी । पल पल चाहइ पीव ॥
दादू कारन कंत के । ताला बेली जीव ॥ २ ॥
रतिवंती आरती करइ । रामसनेही आव ॥
दादू अवसर अब मिलइ । यह बिरहिन का भाव ॥ ३ ॥
काहे न आओ कंत घर । क्यों तुम्ह रहे रिसाइ ॥
दादू सुंदर सेज पर । जनम अमोलिक जाइ ॥ ४ ॥
आतम अंतर आव तूँ । याही तेरी ठौर ॥
दादू सुंदर पीय तूँ । दूजा नाहीं और ॥ ५ ॥
पीय न देखा नैन भरि । कंठ न लागी धाइ ॥
सूती नाहिं गल बाँह दे । बिच हीं गई बिलाइ ॥ ६ ॥
सुरति पुकारइ सुंदरी । अगम अगोचर जाइ ॥
दादू बिरही आतमा । उठि उठि आतुर धाइ ॥ ७ ॥
साईं कारन सेज सँवारी । सब तें सुंदर ठौर ॥
दादू नारी ताहि बिन । आनि बैठाये और ॥ ८ ॥
कोई औगुन मन बसा । चित तें धरा उतार ॥
दादू पति बिन सुंदरी । राँढइ घर घर बार ॥ ९ ॥
प्रेमलहर की पालकी । आतम बैठइ आइ ॥
दादू खेलइ पीय सों । यह सुख कहा न जाइ ॥ १० ॥
सुख तें सूती नींद भर । जागइ मेरा पीव ॥
क्यों कर मेला होइगा । जागइ नाहीं जीव ॥ ११ ॥

सखी न खेलइ सुंदरी । अपने पिय सों आग ॥
स्वाद न पाया प्रेम का । रही नहीं उर लाग ॥ ११ ॥
पंच दिढावइ पीय सों । मिलि काहे न खेलइ ॥
दादू गहिरी सुंदरी । क्यों रहइ अकेलइ ॥ १२ ॥
सखी सोहागिन सब कहहिं । और दुरागम आइ ॥
पिय का महल न पाइये । कहाँ पुकारहु जाइ ॥ १३ ॥
सखी सोहागिन सब कहहिं । कंत न बूझइ बात ॥
मनसा बाचा करमना । मुरुछ मुरुछ जिय जात ॥ १४ ॥
सखी सोहागिनि सब कहहिं । पिय सों परस न होइ ॥
निस बासर दुख पाइये । व्यथा न जानइ कोइ ॥ १५ ॥
सखी सोहागिन सब कहहिं । प्रगट न खेलइ पीव ॥
सेज सोहागिन पाइये । दुखिया मेरा जीव ॥ १६ ॥
पर पुरुषा सब परम हैं । सुंदरि देखइ आग ॥
अपना पीयें पिछान करि । दादू रहिये लाग ॥ १७ ॥
पुरुष पुरातन छाडि कर । चली आन के साथ ॥
लोभी सँग तें बीछुडी । खडी मरोरइ हाथ ॥ १८ ॥
सुंदरि कबहुँ कंत का । मुख सों नावँ न लेइ ॥
अपने पिय के कारनहुँ । दादू तन मन देइ ॥ १९ ॥
नयन बयन करि बारनहुँ । तन मन पिंड परान ॥
दादू सुंदरि बरि गई । तुम्ह पर कंत सुजान ॥ २० ॥
तन भी तेरा मन भी तेरा । तेरा पिंड परान ॥
सब कुछ तेरा तूँ है मेरा । यह दादू का ज्ञान ॥ २१ ॥
पँच अभूषन पीय कर । सोलह सब ही ठावँ ॥
सुंदरि यह सिंगार करि । लइ लेइ पिय का नावँ ॥ २२ ॥
यह ब्रत सुंदरि ले रहइ । सदा सोहागिन होइ ॥
दादू भावइ पीय को । ता सम और न कोइ ॥ २३ ॥

सुंदरि मोहइ पीय को । बहुत भाँति भरतार ॥
रिझवइ दादू राम को । अनँत कला करतार ॥ २४ ॥
नीचँ ऊँच कुलसुंदरी । सेवा सारी होइ ॥
सोइ सोहागिन कीजिये । रूप न पीवइ धोइ ॥ २५ ॥
नदी नीर उलंघि कर । दरिया पइरी पार ॥
दादू सुंदरि सो भली । जाइ मिलइ भरतार ॥ २६ ॥
प्रेमलहर गहि ले गई । अपने प्रीतम पास ॥
आतम सुंदरि पीय को । बिलसइ दादू दास ॥ २७ ॥
सुंदरि को साईं मिला । पाया सेज सोहाग ॥
पीय सौ खेलइ प्रेमरस । दादू मोटे भाग ॥ २८ ॥
दादू सुंदरि देहमें । साईं को सेवइ ॥
राती अपने पीय सो । प्रेमरस लेवइ ॥ २९ ॥
दादू निरमल सुंदरी । निरमल मेरा नाह ॥
दोनों निरमल मिलि रहे । निरमल प्रेमप्रवाह ॥ ३० ॥
तेज पुंज की सुंदरी । तेज पुंज का कंत ॥
तेज पुंज की सेज पड़ि । दादू बना बसंत ॥ ३१ ॥
साईं सुंदरि सेज पर । सदा एक रस होइ ॥
दादू खेलइ पीव सों । ता सम और न कोइ ॥ ३२ ॥

इति सुंदरी को अंग संपूर्णम् ॥ ३० ॥

———:o:———

अथ कस्तूरिया मृग को अंग ॥

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
घट कस्तूरी मिरिग के । भरमत फिरइ उदास ॥
अंतरगति जानइ नहीं । ता तें सूँघइ घास ॥ २ ॥
सब घट में गोविंद है । संग रहहिं हरि पास ॥
कस्तूरी मृग में बसइ । सूँघत डोलइ घास ॥ ३ ॥
जीव न जानइ राम को । राम जीव के पास ॥
गुरु के सबद तें बाहिरा । ता तें फिरइ उदास ॥ ४ ॥
जा कारन जग ढूँढिया । सो है घट ही माहिं ॥
मैं तैं परदा भरम का । ता तें जानत नाहिं ॥ ५ ॥
दूर कहहिं ते दूर हैं । राम रहा भरपूर ॥
नैनहुँ बिन सूझइ नहीं । ता तें रविकर दूर ॥ ६ ॥
ढोढो हूवा प्रान से । अउ बलदाऊ मंझ ॥
नहिं जाताऊँ प्रान में । साँई का उपधंध ॥ ७ ॥
कोई दौड़े द्वारिका । कोई कासी जाहिं ॥
कोई मथुरा को चले । साहिब घट ही माहिं ॥ ८ ॥
मंझे चेला मंझ गुरु । मंझे ही उपदेस ॥
बाहर ढूँढहि बावरे । जटा बँधाये केस ॥ ९ ॥
सब घट माहैं रमि रहा । बिरला बूझइ कोइ ॥
सोई बूझइ राम को । रामसनेही होइ ॥ १० ॥
सदा रहइ सँग सनमुखे । दादू लखइ न गूझ ॥
सपने ही समुझइ नहीं । क्यों करि लहइ अबूझ ॥ ११ ॥

अडमत जिव जानइ नहीं। परम स्वाद सुख जाइ॥
चेतन समुझइ स्वाद सुख। पीवइ प्रेम अघाइ॥ १२॥
जागत जो आनँद करइ। सो पावइ सुखस्वाद॥
सूते सुक्ख न पाइये। प्रेम गवाँया बाद॥ १३॥
जिन्ह का साहिब जागता। सेवक सदा सचेत॥
सावधान सनमुख रहइ। गिर गिर पडइ अचेत॥ १४॥
दादू साईं चेत है। हम ही भये अचेत॥
प्रानी राख न जानहीं। ता तैं निरफल खेत॥ १५॥
गोविंद के गुन बहुत हैं। कोई न जानइ जीव॥
अपनी बूझइ आप गति। जो कुछ कीया पीव॥ १६॥

इति कस्तूरीया मृग को अंग संपूर्णम् ॥२१॥

अथ निंदा को अंग।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः॥
बंदनं सर्व साधवा। परनामं पारंगतः॥ १॥

साधू निर्मल मन नहीं। राम रमहिं सम भाइ॥
दादू अवगुन काढि कर। जीव रसातल जाइ॥ २॥

जब ही साधु सताइये। तब ही उरुध पलक्क॥
आस धसइ धरनी खसइ। तीनों लोक गरक्क॥ ३॥

जेहि घर निंदा साधु की। सो घर गये समूल॥
तिन्ह की नीवँ न पाइये। नावँ ठावँ नाहिं धूल॥ ४॥

निंदा नावँ न लीजिये। सपनेहू जिन होइ॥
ना हम कहहिं न तुम्ह सुनइ। हम जिन भाषइ कोइ॥ ५॥

निंदा कीये नरक है। कीट पडइ मुख माहिं॥
राम बिमुख जामइ मरइ। भगमुख आवहिं जाहिं॥ ६॥

निंदक बपुरा जिन मरइ। परउपकारी सोइ॥
हम को करता ऊजरा। आपइ मइला होइ॥ ७॥

जेहि बिधि आतम ऊधरइ। परसइ प्रीतम प्रान॥
साधु सबइ को निंदना। समझइ चतुर सुजान॥ ८॥

अनदेखा अनरथ कहइ। कलि पृथिवी का पाप॥
धरती अंबर जब लगा। तब लग करहिं कलाप॥ ९॥

अनदेखा अनरथ कहइ। अपराधी संसार॥
जब लेखा तब लेइगा। समरथ सिरजनहार॥ १०॥

दादू डरिये लोक तें। कइसी धरहिं उठाइ॥

अनदेखी अजगैब की । कहसी कहहिं बनाइ ॥ ११ ॥
अम्रित बिष बिष को अम्रित । फेरि धरहिं सब नावँ ॥
निरमल मल मैला बिमल । आहिं मैं सो किस ठावँ ॥ १२ ॥
साचे को झूठा कहहिं । झूठे को साचा ॥
राम दोहाई काढ़िये । कंठ तें बाचा ॥ १३ ॥
झूठ न कहिये साच को । साच न कहिये झूठ ॥
साहिब तो मानइ नहीं । लागइ पाप अखूठ ॥ १४ ॥
झूठ दिखावहिं साच को । भायानक भयभीत ॥
साचा राता साच सों । झूठ न आनहिं चीत ॥ १५ ॥
साचे को झूठा कहहिं । झूठा साच समान ॥
दादू अचरज देखिया । यह लोगों का ज्ञान ॥ १६ ॥
ज्यों ज्यों निंदहिं लोग बिचारा ।
त्यों त्यों छीजइ रोग हमारा ॥ १७ ॥

इति निंदा को अंग संपूर्णम् ॥ ३२ ॥

———:o:———

अथ निरगुन को अंग।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः॥
बंदन सर्व साधवा। परनामं पारंगतः॥ १॥
दादू चंदन बावना। बसे बनहिं महँ आइ॥
सुखदाई सीतल किये। तीनों ताप नसाइ॥ २॥
काल कुलहाडा हाथ ले। काटन लागा धाइ॥
अइसा यह संसार है। डार मूल ले जाइ॥ ३॥
सतगुरु चंदन बावना। लागा रहइ भुअंग॥
दादू बिष छाडइ नहीं। कहा करइ सतसंग॥ ४॥
दादू कीडा नरक का। राखा चंदन माहिं॥
उलटि सो कूदा नरक मे। चंदन भावइ नाहिं॥ ५॥
सतगुरु साधु सुजान है। सिष का गुन नहिं जाइ॥
दादू अम्रित छाडि कर। बिषइ हलाहल खाइ॥ ६॥
कोटि बरस लों राखिये। बासा चंदन पास॥
दादू गुन लीये रहइ। कधी न लागइ बास॥ ७॥
कोटि बरस लों राखिये। पत्थर पानी माहिं॥
दादू आडा अंग है। भीतर भेदइ नाहिं॥ ८॥
कोटि बरस लों राखिये। लोहा पारस संग॥
दादू रोम का आँतरा। पलटइ नाहीं अंग॥ ९॥
कोटि बरस लों राखिये। जीव ब्रह्म सँग दोइ॥
दादू माहैं बासना। कधी न मेला होइ॥ १०॥
मूसा अरैता देखि कर। दादू हंस दयाल॥
मानसरोवर कै चला। पंखहु काटइ काल॥ ११॥

देखइ मानुस परतछ काल।
ज्यों करि त्यों करि दादू हाल ॥१२॥
जीव भुअंगम कूप में। साधू काढइ आइ॥
दादू बिषहर बिष भरे। फिर ताही को खाइ॥ १३॥
दादू दूध पिआइये। बिषहर बिष कर लेइ॥
गुन का औगुन कर लिया। ताही को दुख देइ॥ १४॥
बिनहीं पावक जर मुआ। जावासा जल माहिं॥
दादू सूखा सींचता। जल को दूषन नाहिं॥ १५॥
सुफल बिरिछ परमारथी। सुख देवइ फल फूल॥
दादू ऊपर बैठि कर। निरगुन काटइ मूल॥ १६॥
दादू सरगुन गुन करइ। निरगुन मानइ नाहिं॥
निरगुन मरि निरफल गया। सरगुन साहिब माहिं॥ १७॥
निरगुन गुन मानइ नहीं। कोटि करइ जो कोइ॥
दादू सब कुछ सउँपिये। सो फिर बैरी होइ॥ १८॥
दादू सरगुन लीजिये। निरगुन दीजइ डार॥
सरगुन सनमुख राखिये। निरगुन नेह निवार॥ १९॥
सरगुन गुन केते करहिं। निरगुन मान न एक॥
दादू साधू सब कहहिं। निरगुन नरक अनेक॥ २०॥
सरगुन गुन केते करहिं। निरगुन नासइ ढाहि॥
दादू साधू सब कहहिं। निरगुन निरफल जाहि॥ २१॥
सरगुन गुन केते करहिं। निरगुन मान न कोइ॥
दादू साधू सब कहहि। भला कहाँ तें होइ॥ २२॥
सरगुन गुन केते करहिं। निरगुन मान न नीच॥
दादू साधू सब कहहिं। निरगुन के सिर मींच॥ २३॥
साहिबजी सब गुन करहिं। सतगुरु के घट होइ॥
दादू काढइ कालमुख। निरगुन मान न कोइ॥ २४॥

साहिबजी सब गुन करहिँ। सतगुरु माहैँ आइ॥
दादू राखा जीव दे। निरगुन मेटा जाइ॥ २५॥
साहिबजी सब गुन करहिँ। सतगुरु का दे संग॥
दादू परलय राखि ले। निरगुन पलटइ अंग॥ २६॥
साहिबजी सब गुन करहिँ। सतगुरु आडा देइ॥
दादू तारइ देखता। निरगुन गुन नहिँ लेइ॥ २७॥
सतगुरु दीया राम धन। रहइ सो बुद्धि बताइ॥
मनसा बाचा करमना। बिलस बिखंडइ खाइ॥ २८॥
कीया किन मेटइ नहीँ। गुन हीँ माहिँ समाइ॥
दादू बढइ अनंत धन। कबहूँ कमी न जाइ॥ २९॥

इति निरगुन को अंग संपूर्णम् ॥३३॥

——:o:——

अथ बिनती को अंग।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा। परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
दादू बहुत बुरा किया। तुम्हैं न करना रोस ॥
साहिब सबही का धनी। बंदे का सब दोस ॥ २ ॥
दादू बहुत बुरा किया। मुख सों कहा न जाइ ॥
निरमल मेरा साइँयाँ। ता को दोस न लाइ ॥ ३ ॥
साईं सेवा चोर मैं। अपराधी बंदा ॥
दादू दूजा कोइ नहीं। मुझ सरीखा गंदा ॥ ४ ॥
तिल तिल का अपराधी तेरा। रती रती का चोर ॥
पल पल का अवगुनहीं तेरा। बकसहु अवगुन मोर ॥ ५ ॥
महापराधी एक मैं। सारे येहि संसार ॥
औगुन मेरे अति घने अंत न आवइ पार ॥ ६ ॥
मरजादा का मित नहीं। ऐसे किये अपार ॥
मैं अपराधी बापजी। तुम्ह हीं एक अधार ॥ ७ ॥
दोष अनेक कलंक सब। बहुत बुरा मुझ माहिं ॥
मैं कीये अपराध सब। तुम्ह तें छाना नाहिं ॥
गुनहगार अपराधी तेरा। भाग कहाँ हम जाहिं ॥
दादू देखा सोधि सब। तुम्ह बिन कहिं न समाहिं ॥ ८ ॥
आदि अंत लों आइ करि। सुकित कछू नहिं कीन्ह ॥
मया मोह मद मंछरा। स्वाद सबइ चित दीन्ह ॥ ९ ॥
काम क्रोध संसय सदा। कबहुँ नावँ नहि लीन ॥
पखँड प्रपंचा पापमय। दादू अइसहि कीन ॥ १० ॥

बहु बंधन सों बाँधिया । एक बेचारा जीव ॥
अपने बल छूटइ नहीं । छोडनहारा पीव ॥ ११ ॥
दादू बंदीवान है । बंदीछोड दिवान ॥
अब जिन राखहु बंदि में । मीरा मेहरबान ॥ १२ ॥
दादू अंतर कालिमा । हिरदय बहुत बिकार ॥
परगट पूरा दूर करि । दादू करइ पुकार ॥ १३ ॥
सब कुछ ब्यापइ रामजी । कुछ छूटा नाहिं ॥
तुम्ह तें कहाँ छिपाइये । सब देखहु माहिं ॥ १४ ॥
सबल सार मन में रहइ । राम बिसरि क्यों जाय ॥
यह दुख दादू क्यों सहइ । साईं करहु सहाय ॥ १५ ॥
राखनहारा राख तूँ । यह मन मेरा राखि ॥
तुम्ह बिन दूजा कोइ नहीं । साधू बोलहिं साखि ॥१६ ॥
माया बिषय बिकार तें । मेरा मन भागइ ॥
सोइ कीजइ साँइयाँ । तूँ मीठा लागइ ॥ १७ ॥
साईं दीजइ सुरती । तो मीठा लागइ ॥
दूजा खारा होइ सब । सूता जिव जागइ ॥ १८ ॥
साहिब को भावइ नहीं । सो हम तें जिन होइ ॥
सतगुरु लीजइ आपना । साधु न मानइ कोइ ॥ १९ ॥
आपइ देखइ आप को । सो नैना दे मुज्झ ॥
मीरा मेरा मेहर कर । दादू देखइ तुज्झ ॥ २० ॥
दादू पछतावा रहा । सकै न ठाहर लाइ ॥
अरथ न आया राम के । यह तन योंहीं जाइ ॥ २१ ॥
कहते सुनते दिन गये । होइ कछू न आवा ॥
दादू हरि की भगति बिन । प्रानी पछतावा ॥ २२ ॥
वह कुछ हम तें ना भया । जा पर रीझइ राम ॥
दादू इस संसार में । हम आये बेकाम ॥ २३ ॥

दिन दिन नवतम भगति दे। दिन दिन नवतम नावँ ॥
दिन दिन नवतम नेह दे। मैं बलिहारी जावँ ॥ २४ ॥
साईं सत संतोष दे। भाव भगति बिस्वास ॥
सिदक सबूरी साच दे। माँगइ दादूदास ॥ २५ ॥
साईं संसय दूर करि। करि संका का नास ॥
मानि भरम दुखदारुना। समता सहज प्रकास ॥ २६ ॥
नाहीं परगट होइ रहा। है सो रहा लुकाइ ॥
सइँयाँ परदा दूर करि। तूँ होइ परगट आइ ॥ २७ ॥
माया परगट होइ रही। जो नहिं होता राम ॥
अरस परस मिलि खेलते। सब जिव सब ही ठाम ॥ २८ ॥
दया करइ तब अंग लगावइ। भगति अखंडित देवइ ॥
दादू दरसन आप अकेला। दूजा हरि सब लेवइ ॥ २९ ॥
साधु सिखावइ आतमा। सेवा दृढ करि लेहु ॥
पारब्रह्म सों बीनती। दय करि दरसन देहु ॥ ३० ॥
साहिब साधु दयाल है। हम ही अपराधी ॥
दादू जीव अभागिया। अविद्यासाधी ॥ ३१ ॥
सब जिव तोरहिं राम सों। पै राम न तोरइ ॥
दादू काँचे ताग ज्यों। तोरइ त्यों जोरइ ॥ ३२ ॥
फूटा फेर सँवार करि। ले पहुँचावइ ओर ॥
अइसा कोई ना मिला। दादू गया बहोर ॥ ३३ ॥
ऐसा कोई ना मिला। तन फेर सँवारइ ॥
बूढे तें बाला किया। छय काल निवारइ ॥ ३४ ॥
गलइ बिलइ कर बीनती। एकमेक अरदास ॥
अरस परस करुना करहिं। दरवहिं दादू दास ॥ ३५ ॥
साईं तेरे डर डरउँ। सदा रहउँ भयभीत ॥
अजा सिंह ज्यों भय घना। दादू लीया जीत ॥ ३६ ॥

पलक माहिँ प्रगटइ सही । जो जन कराहि पुकार ॥
दीन दुखी को देखि कर । अति आतुर तेहि बार ॥
आगे पीछे सँग रहइ । आप उठाये भार ॥
साधु दुखी तब हरि दुखी । अइसा सिरजनहार ॥ ३५ ॥
सेवक की रच्छा करइ । सेवक का प्रतिपाल ॥
सेवक के बाहर चढइ । दादू दीनदयाल ॥ ३६ ॥
काया नाव समुद्र मेँ । अवघट बूडइ आय ॥
येहि अवसर एक साधु बिन । दादू कौन सहाय ॥ ३७ ॥
यह तन मेरा भवजला । क्योँ कर लाँघइ तीर ॥
केवट बिन कइसे तरइ । दादू गहिर गँभीर ॥ ३८ ॥
पिंड परोहन सिंधुजल । भवसागर संसार ॥
राम बिना सूझइ नहीँ । दादू खेवनहार ॥ ३९ ॥
यह घट बोहित धार मेँ । दरिया वार न पार ॥
भीत भयानक देखि कर । दादू करी पुकार ॥ ४० ॥
कलिजुग घोर अँधार है । तिसका वार न पार ॥
दादू तुम्ह बिन क्योँ तरइ । समरथ सिरजनहार ॥ ४१ ॥
काया के बस जीव है । कस कस बाँधा माहिँ ॥
दादू आतमराम बिन । क्योँ ही छूटइ नाहिँ ॥ ४२ ॥
प्रानी बंधा पंच सोँ । क्योँ ही छूटइ नाहिँ ॥
निरञ्जन आपा मारिये । यह जिव काया माहिँ ॥ ४३ ॥
तुम्ह बिन धनी जो जीव का । योँ ही आवइ जाइ ॥
जो तूं साईँ सत्त है । बेगहिँ प्रगटहि आइ ॥ ४४ ॥
निरञ्जन आपा मारिये । धनी न धोरी कोइ ॥
दादू सो क्योँ मारिये । साहिब सिर पर होइ ॥ ४५ ॥
राम बिमुखं जुग जुग दुखी । लख चौरासी जीव ॥
जामै मरइ जग आवटइ । राखनहारा पीव ॥ ४६ ॥

समरथ सिरजनहार है । जो कुछ करइ सो होइ ॥
दादू सेवक राखि ले । काल न लागइ कोइ ॥ ४७ ॥
साईं साचा नावँ दे । जाल झार मिटि जाइ ॥
दादू निरभय होइ रहइ । कबहूँ काल न खाइ ॥ ४८ ॥
कोइ नहीं करतार बिन । प्रान उधारनहार ॥
जियरा दुखिया राम बिन । दादू येहि संसार ॥ ४९ ॥
जिन्ह की रच्छा तूँ करइ । ते उबरे करतार ॥
जे तुझ छाडे हाथ तें । ते डूबे संसार ॥ ५० ॥
राखनहारा एक तूँ । मारनहार अनेक ॥
दादू को दूजा नहीं । तूँही आपहि देख ॥ ५१ ॥
जुग ज्वाला जमरूप है । साहिब राखनहार ॥
तुम्ह बीच अंतर जिन पड़इ । ता तें करउँ पुकार ॥ ५२ ॥
जहँ तहँ बिषय बिकार तें । तुम्ह ही राखनहार ॥
तन मन तुम्ह को सौंपिया । साचा सिरजनहार ॥ ५३ ॥
नरक रसातल जात हैं । तुम्ह बिन सब संसार ॥
कर गहि करता काढि ले । दे अवलंब अधार ॥ ५४ ॥
दैव लागि जग परजरइ । घटि घटि सब संसार ॥
हम तें कछू न होत है । तूँहि बुझावनहार ॥ ५५ ॥
आतम जीव अनाथ सब । करतार उबारइ ॥
राम निहोरा कीजिये । जिन काहू मारइ ॥ ५६ ॥
अरस जिमी अवजूद में । तहाँ तपइ अफताब ॥
सब जग जरता देखि कर । दादु पुकारे साब ॥ ५७ ॥
सकल भुअन सब आतमा । निरबिष करि हरि लेइ ॥
परदा है सो दूर करि । कुसम लहर नहिं देइ ॥ ५८ ॥
तन मन निरमल आतमा । सब काहू की होइ ॥
दादू बिषय बिकार की । बात न बूझइ कोइ ॥ ५९ ॥

समरथ धोरी कंध धरि। रथ ले और निबाहिँ॥
मारग माहिँ न मेलिये। पीछहिँ बिरद लजाहिँ॥ ६० ॥
गगन गिरइ तब को धरइ। धरती धर छाडइ॥
जो तुम्ह छाडहु राम रथ। कंधा को मांडइ॥ ६१ ॥
ज्योँ वे बरत गगन तेँ टूटइ। कहाँ धरनि कहाँ ठाम॥
लागी सुरति अंग तेँ छूटइ। सो कित जीवइ राम॥ ६२ ॥
अंतरजामी एक तूँ। आतम के आधार॥
जो तुम्ह छाडहु हाथ तें। कौन सँवारनहार॥ ६३ ॥
तेरा सेवक तुम्ह लगे। तुम्हही माथे भार॥
दादू बूडत राम जी। बेग उतारहु पार॥ ६४ ॥
सत छूटा सुरतन गया। पउरुख भागा जाइ॥
कोई धीरज ना धरइ। काल पहूँचा आइ॥ ६५ ॥
संगी थाके संग के। मेरा कुछ न बसाइ॥
भाव भगति धन लूटिये। दादू दुखी खुदाइ॥ ६६ ॥
दादू जियरा जक नहीँ। बिसराम न पावइ॥
आतम पानी नून ज्योँ। अस होइ न आवइ॥ ६७ ॥
तेरी खूबी खूब है। सब नीका लागइ॥
सुंदर सोभा काढि ले। सब कोई भागइ॥ ६८ ॥
तुम्ह हहु तइसी कीजहु। तो छूटहिँगे जीव॥
हम हैँ अइसी जिन करहु। मैँ सदके जिव पीव॥ ६९ ॥
अननाथहुँ का आसरा। निराधार आधार॥
निरधन का धन राम हैँ। दादू सिरजनहार॥ ७० ॥
साहिब दर दादू खड़ा। निस दिन करइ पुकार॥
मीरा मेरा मेहर करि। साहिब दे दीदार॥ ७१ ॥
दादू प्याला प्रेम का। साहिब राम पिआइ॥
परगट प्याला देहु भरि। मिरतक लेहु जिआइ॥ ७२ ॥

अल्ला आले नूर का । भरि भरि प्याला देहु ॥
हम को प्रेम पिलाइ करि । मतवाला करि लेहु ॥ ७३ ॥

तुम्ह को हम से बहुत हैं । हम को तुम्ह से नाहिं ॥
दादू को जिन परिहरइ । तूँ रहु नैनहुँ माहिं ॥ ७४ ॥

तुम्ह तें तबहीं होइ सब । दरस परस दरहाल ॥
हम तें कबहुँ न होइगा । जो बीतहिं जुग काल ॥ ७५ ॥

तुम्ह ही तें तुम्ह को मिलइ । एक पलक में आइ ॥
हम तें कबहुँ न होइगा । कोटि कलप जो जाइ ॥ ७६ ॥

साहिब सौं मिलि खेलते । होता प्रेमसनेह ॥
दादू प्रेमसनेह बिन । खरी दुहेली देह ॥ ७७ ॥

साहिब सौं मिलि खेलते । होता प्रेमसनेह ॥
परगट दरसन देखते । दादू सुखिया देह ॥ ७८ ॥

आज्ञा अपरंपार की । बस अंबर भरतार ॥
हरे पटंबर पहिर करि । धरती करइ सिंगार ॥

बसुधा सब फूलइ फरइ । पृथिवी अनँत अपार ॥
गगन गरज जल थल भरे । दादू जय जय कार ॥ ७९ ॥

काला मुँह करि काल का । साईं सदा सुकाल ॥
मेघ तुम्हारे घर घना । बरसहु दीनदयाल ॥ ८० ॥

तुम्ह को भावइ और कुछ । तुम्ह कुछ कीया और ॥
मेहर करहु तो छूटिये । नाहिं तो नाहीं ठौर ॥ ८१ ॥

मुझ भावइ सो मैं किया । तुझ भावइ सो नाहिं ॥
दादू गुनहगार है । मैं देखा मन माहिं ॥ ८२ ॥

खुसी तुम्हारी त्यों करहु । हम तो मानी हार ॥
भावइ बंदा बकसिये । भावइ गहि करि मार ॥ ८३ ॥

जो साहिब लेखा लिया । सीस काट सूली दिया ॥
मेहर माया कर फल कीया । जीये जीये कर जीया ॥ ८४ ॥

इति बिनती को अंग संपूर्णम् ॥ ३४ ॥

——-:o:——

अथ साषीभूत को अंग ॥

———:0:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥

देखनहारा जगत का । अंतर पूरइ साखि ॥
दादू संमत सो सही । दूजा और न राखि ॥ २ ॥

माहैं तैं मुझ को कहइ । अंतरजामी आप ॥
दादू दूजा धुंध है । साचा मेरा जाप ॥ ३ ॥

करता है सो करइगा । दादू साषीभूत ॥
कौतुकहारा होइ रहा । अनकरता अवधूत ॥ ४ ॥

आप अकेला सब करइ । घट में लहर उठाइ ॥
दादू सिर दे जीव के । यों न्यारा होइ जाइ ॥ ५ ॥

आप अकेला सब करइ । औरों के सिर देइ ॥
दादू सोभादास को । अपना नावँ न लेइ ॥ ६ ॥

राजस करि उतपति करइ । सातक करि प्रतिपाल ॥
तामस करि परलय करइ । निरगुन कौतुकहार ॥ ७ ॥

ब्रह्म जीव हरि आतमा । खेलइ गोपी कान ॥
सकल निरंतर भरि रहा । साषीभूत सुजान ॥ ८ ॥

जानम मरना सानि कर । यह पिंड उपजाया ॥
साईं दिया जीव को । ले जग में आया ॥ ९ ॥

बिष अम्रित पावक पानी । सतगुरु समझाया ॥
मनसा बाचा करमना । सोई फल पाया ॥ १०

जानइ बूझइ जीव सब। गुन औगुन कीजइ॥
जान बूझ पावक पड़इ। दैव दोष न दीजइ॥ ११॥

मन ही माहिँ होइ मरइ। जीवइ मन ही माहिँ॥
साहिब साषीभूत है। दादू दूषन नाहिँ॥ १२॥

बुरा भला सिर जीव के। होवइ इसही माहिँ॥
दादू करता करि रहा। सो सिर दीजइ नाहिँ॥ १३॥

परमारथ को राखिये। कीजइ परउपकार॥
दादू सेवक सो भला। नीरंजन निरकार॥ १४॥

जिन्हका तिन्हको सौँपिये। सुकरित परउपकार॥
दादू सेवक सो भला। सिर नहिँ लेवइ भार॥ १५॥

करता होइ कर कुछ करइ। उस माहिँ बँधावइ॥
दादू उस को पूछिये। उत्तर नहिँ आवइ॥ १६॥

सेवा सुकरित सब गया। मैँ मेरा मन माहिँ॥
दादू आपा जब लगइ। साहिब मानइ नाहिँ॥ १७॥

कोइ उतारहिँ आरती। कोइ सेवा करि जाहिँ॥
कोइ आइ पूजा करहिँ। कोइ खिआवहिँ खाहिँ॥ १८॥

कोई सेवक होइ रहे। कोई संगति माहिँ॥
कोइ आइ दरसन करहिँ। हम तेँ होता नाहिँ॥ १९॥

ना हम करहिँ करावहीँ। पिअहिँ पिआवहिँ नीर॥
करइ करावइ साइँयाँ। दादू सकल सरीर॥ २०॥

करइ करावइ साइँयाँ। जिन्ह दीया औजूद॥
दादू बंदा बीच मेँ। सोभा को मौजूद॥ २१॥

देवइ लेवइ सब करइ। जिन्ह सिरजा सब कोइ॥
दादू बंदा महल मेँ। सोर करहिँ सब कोइ॥ २२॥

जूआ खेलहि जानपति । ता को लखइ न कोइ ॥
सब जग बइठा जीत करि । काहू लिपत न होइ ॥ २३ ॥

इति साषीभूत को अंग संपूर्णम् ॥ ३९ ॥

——:o:——

अथ बेली को अंग ।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
अम्रित रूपी नावँ ले । आतमतत पोषइ ॥
सहजहिँ सहज समाधि मे । धरनी जल सोखइ ॥
पसरइ तीनों लोक मे । लिपित नहिँ धोखइ ॥
सो फल लागइ सहज में । सुंदर सब लोकइ ॥ २ ॥
दादू बेली आतमा । सहज फूल फल होइ ॥
सहज सहज सतगुरु कहइ । बूझइ बिरला कोइ ॥ ३ ॥
जो साहिब सींचइ नहीं । तो बेली कुम्हिलाइ ॥
दादू सींचइ साइँयाँ । बेली बढती जाइ ॥ ४ ॥
हरि तरवर तत आतमा । बेली कर बिस्तार ॥
दादू लागइ अमर फल । साधू सींचनहार ॥ ५ ॥
दादू सूखा रुख खडा । काहे न हरिअर होइ ॥
आपइ सींचइ अमीरस । सो फल फरिया सोइ ॥ ६ ॥
कधी न सूखइ रुख खडा । अम्रित सींचा आप ॥
दादू हरिअर सो फरइ । कछु न ब्यापइ ताप ॥ ७ ॥
जो घट रोपे रामजी । सींचे अमी अघाइ ॥
दादू लागइ अमर फल । कबहुँ सूख न जाइ ॥ ८ ॥
हरि जल बरसे बाहिरा । सूखइ काया खेत ॥
दादू हरिअर होइगा । सींचनहार सचेत ॥ ९ ॥
अमर बेलि है आतमा । खार समुंदर माहिँ ॥
सूखइ खारे नीर सों । सो फल लागइ नाहिँ ॥ १० ॥

बहु गुनवंती बेलि है । ऊगी कारर माहिँ ॥
सींचे खारे नीर सोँ । ता तेँ उपजइ नाहिँ ॥ ११ ॥
बहु गुनवंती बेलि है । मीठी धरती माहिँ ॥
मीठा पानी सींचिये । दादु अमरफल खाहिँ ॥ १२ ॥
अम्रित बेली बाहिये । अम्रित का फल होइ ॥
अम्रित का फल खाइ कर । मुआ न सुनिये कोइ ॥ १३ ॥
बिष की बेली बाहिये । बिष ही का फल होइ ॥
बिष ही का फल खाइ कर । अमर नहीँ कलि होइ ॥ १४ ॥
सतगुरु संगति ऊपजइ । साहिब सींचनहार ॥
प्रान बिरिछ पीवइ सदा । दादू फरइ अपार ॥ १५ ॥
दया धरम का रुख खड़ा । सत सोँ बढ़ता जाइ ॥
सँतोष सोँ फूलइ फरइ । दादु अमरफल खाइ ॥ १६ ॥

इति बेली को अंग संपूर्णम् ॥ ३६ ॥

———:o:———

अथ अबिहड को अंग।

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः॥
बंदनं सर्व साधवा। परनामं पारंगतः॥ १॥

संगी सोई कीजिये। कलि अजरामर होइ॥
ना वह मरइ न बीछुडइ। ना दुख ब्यापइ कोइ॥ २॥

संगी सोई कीजिये। अस्थिर येहि संसार॥
ना वह फिरइ न हम खपहिँ। अइसा लेहु बिचार॥ ३॥

संगी सोई कीजिये। सुख दुख का साथी॥
दादू जीवन मरन का। सो सदा सँगाती॥ ४॥

संगी सोई कीजिये। कबहूँ पलट न जाइ॥
आदि अंत बिहडइ नहीँ। ता सन यह मन लाइ॥ ५॥

माया बिहडइ देखता। काया संग न जाइ॥
क्रित्रिम बिहडहिँ बावरे। अजरामर लव लाइ॥ ६॥

दादू अबिहड आप है। अमर उपजावनहार॥
अबिनासी आपइ रहइ। बिनसइ सब संसार॥ ७॥

दादू अबिहड आप है। साचा सिरजनहार॥
आदि अंत बिहडइ नहीँ। बिनसइ सब आकार॥ ८॥

दादू अबिहड आप है। अबिचल रहा समाइ॥
निहचल रमता राम है। जो देखइ सो जाइ॥ ९॥

दादू अबिहड आप है। कबहूँ बिहडइ नाहिँ॥
घटइ बढइ नाहिँ एकरस। उपज खपहिँ उन माहिँ॥१०॥

अबिहड़ अँग बिहड़ै नहीं । अपलट पलट न जाइ ॥
दादू अनघट एकरस । सब में रहा समाइ ॥ ११ ॥
कबहुँ न बिहड़ै सो भला । साधू दृढ मत होइ ॥
दादू हीरा एकरस । बाँधि गाठरी सोइ ॥ १२ ॥

इति अबिहड को अंग संपूर्णम् ॥ ३७ ॥

———:o:———

सतगुरुप्रसादेन प्रोक्तं भगतियोगो नाम तत्त्वसारमतः ॥
सर्वसाधुबुद्धिज्ञानं सर्वशास्त्रं च शोभनम् ।
रामनामसतगुरुसंख्या अविहडमहिमामहातमम् ॥